तिलस्मों से भरी सृष्टि एवं उसके अविज्ञात रहस्य

लेखक :

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक :

युग निर्माण योजना

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

मो. : ०९९२७०८६२८९, ०९९२७०८६२८७

पुनरावृत्ति सन् २००७ मूल्य : १२.०० रुपये

अविज्ञात सृष्टि की अबूझ पहेलियाँ

अविज्ञात की परिभाषा बड़ी कठिन है। एक तरीका तो यह है कि जो भी कुछ समझ में न आए, जिसका तर्कसम्मत स्पष्टीकरण संभव न हो सके, उसे अविज्ञात की फाइल में बंद कर दिया जाए। दूसरी विधि यह है कि विभिन्न प्रकार के संयोगों, वैचित्र्यपूर्ण घटनाओं, मानवी काया एवं दृश्य प्रकृति की विलक्षणताओं को चमत्कार न कहकर उनका तर्कसम्मत विवेचन किया जाए एवं उनके मूल में कार्य कर रही अदृश्य-अचिंत्य सत्ता का जहाँ तक बुद्धि साथ दे, विवेचन किया जाए।

ऋषियों की कार्य प्रणाली इसी दूसरे प्रकार की रही है। उन्होंने परोक्ष पर विशद अनुसंधान किया एवं उसके निष्कर्षों को आप्तवचनों के रूप में प्रस्तुत किया है। सृष्टि अत्यंत विशाल है। दृश्य-प्रकृति, जीव-जगत, वनस्पति-जगत एवं मानव-समुदाय के रूप में तो एक अंश भर ही देखा जाता है। ब्लैकहोल्स, पल्सार्स, क्वाजार्ज के समुच्चय से भरी ब्रह्मांडीय सत्ता अभी भी अविज्ञात के गर्त में है। धरती की टोह लेने कभी-कभी कुछ ब्रह्मांडीय शक्तियाँ चली आती हैं, वे भी एक रहस्य के रूप में उड़नतश्तरी (यू. एफ. ओ.) के नाम से जानी जाती हैं। उनके प्रकटीकरण का सिलसिला चलता रहता है, पर रहस्य अभी भी रहस्य ही है। ऐसे अनेकों घटनाक्रम प्रकृति के आँचल में घटित होते देखे जा सकते हैं जो स्पष्टीकरण माँगते हैं। इस पुस्तक में स्थान-स्थान पर यही प्रयास किया गया है।

वस्तुतः प्रकृति का प्रत्येक घटक महत्त्वपूर्ण है और अपने में अनेक प्रकार की संभावनाएँ समाहित किए हुए है। घटनाएँ विलक्षण, आश्चर्यजनक और रहस्यमय इसलिए प्रतीत होती हैं कि अनेक वे कारण एवं नियम नहीं मालूम होते जो उन्हें एक सुनिश्चित स्वरूप प्रदान करते हैं। प्राचीनकाल से लेकर अब तक मनुष्य को प्रकृति की

कितनी रहस्यमय घटनाओं का ज्ञान हुआ। जिन्हें कभी आश्चर्य और चमत्कार के रूप में देखा जाता था, वे आज सहज जानकारी के विषय बने हुए हैं। आदिकाल में आग का ज्ञान नहीं था। किसी तरह कहीं जंगलों आदि में आग लग जाती थी तो आदिमकालीन मनुष्य यह मानता था कि यह किसी देवी या देवता के प्रकोप का प्रतिफल है। कालांतर में अग्नि उत्पन्न करने का विज्ञान मालूम हुआ तो मानवी सभ्यता के विकास के लिए एक महत्त्वपूर्ण शक्ति हाथ लग गई।

बिजली की शक्ति प्रकृति के गर्भ में ही विद्यमान थी, पर उसे करतलगत करने की विद्या हजारों-लाखों वर्ष तक अविज्ञात रही। फलत: उससे कुछ लाभ उठाते नहीं बन पड़ा। जैसे ही जिज्ञासु वैज्ञानिकों ने प्रकृति की परतों को पढ़ने एवं विद्युत शक्ति के नियमों को ढूँढ़ निकालने का प्रयत्न किया तो विकास शृंखला में एक और ऐतिहासिक कड़ी जुड़ गई। बिजली ने दुनिया की काया ही पलटकर रख दी। अंधकार की गहरी तमिस्रा में डूबी रात्रि अत्यंत डरावनी लगती थी। अब रात और दिन में कोई विशेष अंतर नहीं रहा। रात्रि का आगमन होते ही डर के मारे आदिम मानव गुफाओं में जा घुसता था, विद्युत का आविष्कार होते ही वह भय जाता रहा। अब तो रात्रि में काम की दृष्टि से यातायात, कल-कारखानों आदि में हलचल बनी रहती है। आदिम मानव यदि किसी तरह आज की विकसित दुनिया में पहुँच जाए तो उसे यहाँ सब कुछ जादू और चमत्कार जैसा प्रतीत होगा।

नाभिकीय शक्ति पैरों से रौंदे जाने वाले नगण्य से परमाणु-कणों में आदिकाल से ही विद्यमान है। पर किसी को कहाँ जानकारी थी कि पदार्थ का सूक्ष्मतम कण भी इतना अधिक सामर्थ्यवान हो सकता है। पर जैसे ही परमाणु शक्ति को हस्तगत करने के वैज्ञानिक नियमों का पता चला, एक नए युग की शुरुआत हो गई। ऐसे युग की जिसने मनुष्य जाति को पहली बार सर्वाधिक भयभीत किया तथा यह सोचने को बाध्य किया कि प्रकृति की शक्तियों का उपयोग यदि सृजन के

लिए नहीं किया गया तो वे मनुष्य जाति को ही एक दिन भस्मीभूत करके रख देंगी। एटामिक पावर के आधार पर अब संसार के वैज्ञानिक बड़े-बड़े सपने देख रहे हैं, सृजन और ध्वंस दोनों की बातें सोच रहे हैं। संभावना यह की जा रही है कि अगले दिनों ऊर्जा की समस्त आवश्यकताएँ नाभिकीय स्रोत से पूरी की जाएँगी। आज भी जो जातियाँ पिछड़ी और अविकसित अवस्था में हैं, उनके लिए परमाणु शक्ति एक अविज्ञात आश्चर्य बनी हुई है।

विपुला प्रकृति की प्रत्येक परत महत्त्वपूर्ण है। प्रायः उसके मोटे रहस्य आसानी से पकड़ में आ जाते हैं, पर सूक्ष्म रहस्यों को समझने तथा सूक्ष्म शक्तियों को प्राप्त करने के लिए कठिन पुरुषार्थ करना पड़ता है। समुद्र का खारा पानी विपुल परिमाण में उपलब्ध रहता है। पर यदि मोती प्राप्त करना हो तो गोताखोरों जैसा दुस्साहस जुटाना और पुरुषार्थ करना पड़ता है। पृथ्वी के गर्भ से खनिज, लोहा, तेल आदि के स्रोतों का पता लगाने के लिए उतना अधिक पुरुषार्थ नहीं करना पड़ा है जितना कि परमाणु शक्ति के आविष्कार के लिए करना पड़ा। कितने ही वैज्ञानिकों को शोध कार्यों में खपना पड़ा। तब कहीं जाकर वे सूत्र ज्ञात हुए जो परमाणु के विखंडित तथा उत्सर्जित शक्ति के सुनियोजन के कारण बने।

अभी तक प्रकृति के बारे में जितना ज्ञात हुआ, उसकी अपेक्षा अविज्ञात का क्षेत्र कई गुना अधिक है। जिन शक्ति-स्रोतों का पता चला है उनसे भी अधिक सामर्थ्यवान स्रोत प्रकृति के गर्भ में विद्यमान हैं। जिनके विषय में वैज्ञानिकों की जानकारी अत्यल्प है। उदाहरणार्थ 'ब्लैकहोल' के बारे में जो थोड़ी बातें जानी जा सकी हैं, वे ये हैं कि ब्लैकहोल ऐसे केंद्र हैं जो अंतरिक्ष और पृथ्वी दोनों में ही विद्यमान हैं। इनकी गुरुत्वाकर्षण शक्ति इतनी अधिक होती है कि ये छोटे-मोटे तारों और ग्रहों को भी अपने प्रचंड खिंचाव द्वारा अजगर की भाँति लील सकते हैं। उसकी आकर्षण सीमा में आने वाली कोई भी छोटी-बड़ी

वस्तु तेजी से खिंचती हुई चली जाती है। अनुमान है कि ब्रह्मांड में ऐसे अनेकों रहस्यमय केंद्र मौजूद हैं, जिनकी विस्तृत जानकारी वैज्ञानिकों को नहीं है।

खगोल विज्ञान की परिकल्पना यह है कि तारों का जन्म होता है, वे विकसित होते तथा अंत में नष्ट हो जाते हैं और अंततः किसी अविज्ञात प्रक्रिया द्वारा ब्लैकहोल में परिवर्तित हो जाते हैं। तारों की आयु उनके भीतर विद्यमान हाइड्रोजन की मात्रा के ऊपर निर्भर करती है। हाइड्रोजन जब जलकर समाप्त हो जाती है, तब तारा धीरे-धीरे सिकुड़ने लगता है, तब वह अपने मूल रूप से कई गुना सिकुड़कर ब्लैकहोल में बदल जाता है। ब्लैकहोल नाम इसलिए पड़ा कि अंतरिक्ष में मात्र ऐसे काले धब्बों के आधार पर ब्लैकहोल का अनुमान लगाया गया है। उनके भीतर क्या है? यह अत्यंत ही रहस्यमय है। कुछ दशकों पूर्व तक यह अनुमान था कि ऐसे केंद्र मात्र अंतरिक्ष में हैं, पर नवीनतम शोधों के आधार पर यह मालूम हुआ है कि पृथ्वी पर भी ऐसे अनेकों स्थल हैं, जहाँ कि ब्लैकहोल के अस्तित्व का परिचय मिला है।

बहुचर्चित बरमूडा ट्रैंगिल ऐसे ही केंद्रों में से एक है, जहाँ कि सैकड़ों वायुयान, जलयान और सैकड़ों मनुष्य अब तक देखते ही देखते विलुप्त हो चुके हैं। कितने ही खोजी दलों को भी उस क्षेत्र में आकर अपनी जान गँवानी पड़ी है, जिनके शरीर का कोई चिह्न भी नहीं प्राप्त हो सका। कुछ भौतिकविदों का मत है कि इस केंद्र के निकट अदृश्य किंतु प्रचंड भू-चुंबकीय चक्रवात चलते रहते हैं जो चपेट में आने वाली वस्तुओं तथा मनुष्यों को किसी अदृश्य लोक में फेंक देते हैं। 'इवान सेंडर सन' नामक एक भौतिकविद् ने ऐसी घटनाओं का गहराई से अध्ययन एवं पर्यवेक्षण किया। निष्कर्ष में उन्होंने बताया कि ब्लैकहोल जैसे स्थान पृथ्वी पर विद्यमान हैं। उनका कहना है कि पृथ्वी की विषुवत रेखा के उत्तर तथा दक्षिण में ३६ अंश अक्षांश पर ऐसे बारह स्थान एक सीध में हैं। इन स्थानों पर वस्तुओं

एवं व्यक्तियों के अकस्मात गायब हो जाने की घटनाएँ अधिक घटित होती हैं। ऐसे स्थानों को सेंडरसन ने 'डैविल्स ग्रेवयार्ड' अर्थात शैतान की श्मशान भूमि नाम दिया है। उनका कहना है कि इन स्थानों पर मनुष्य की दृश्येंद्रियाँ काम नहीं करतीं तथा यहाँ समुद्र का पानी, आकाश और क्षितिज एक जैसे दिखाई पड़ते हैं। मनुष्य के विनिर्मित चुंबकीय तथा विद्युतीय यंत्र काम नहीं करते हैं। यंत्रों में विद्युत बनना भी बंद हो जाती है। इन बारह स्थानों में से दो स्थान उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुव में हैं। पाँच उत्तरी गोलार्द्ध तथा पाँच दक्षिणी गोलार्द्ध में पड़ते हैं। इन स्थानों में से दो ही मात्र जमीन पर पड़ते हैं। आठ गहरे समुद्र में पड़ते हैं। चीन और भारत की सीमा पर एक तथा दूसरा अफ्रीका एवं स्पेन की सीमा पर पड़ता है।

इन स्थानों के अतिरिक्त भी ऐसे अनेक स्थानों के प्रमाण मिले हैं, जहाँ से कितने ही व्यक्ति कुछ ही क्षणों में दृश्यजगत से ओझल हो गए। विज्ञान विशारदों का मत है कि अस्थायी तौर भी किसी स्थान विशेष पर ब्लैकहोल बनते और समाप्त होते रहते हैं। उनके स्वरूप, कारण का ज्ञान तो अब तक नहीं हो सका है, पर समय-समय विलुप्त हुए व्यक्तियों तथा वस्तुओं के प्रमाण इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि ब्लैकहोल अस्थायी तौर से भी पृथ्वी पर बनते रहते हैं। पर ये क्षणिक होते तथा थोड़े ही समय बाद समाप्त हो जाते हैं। उनकी प्रचंड शक्ति का बोध नजरों के सामने से अचानक गायब हो जाने वाली वस्तुओं, व्यक्तियों की घटनाओं से होता है।

स्थायी और अस्थायी प्रचंड शक्ति के सामर्थ्य ये ब्लैकहोल क्या हैं? इनके बनने की प्रक्रिया क्या है? इनके भीतर इतनी अधिक आकर्षण शक्ति किस प्रकार पैदा होती है? इनकी चपेट में आने पर वस्तुएँ तथा व्यक्ति लुप्त क्यों हो जाते हैं? अंततः वे कहाँ चले जाते हैं? क्या वे अंतर्ग्रही ही आदान-प्रदान के अविज्ञात केंद्र हैं? इन स्थानों से किसी अन्य लोक से आवागमन का कोई महत्त्वपूर्ण संबंध तो नहीं जुड़ा हुआ है।

पौराणिक कथा के अनुसार रावण, अहिरावण आदि राक्षस पाताल लोक को अपनी इच्छानुसार चले जाते थे। संभव कि उनके जाने का माध्यम ये ही रहे हों। ब्लैकहोल के प्रचंड गुरुत्वाकर्षण शक्ति पर नियंत्रण करने और उसका उपयोग करने के वैज्ञानिक नियमों की संभव है उस समय जानकारी रही हो। चाहे जो भी है, पर यह स्पष्ट हो चुका है कि प्रकृति की प्रचंड सामर्थ्य ब्लैकहोल जैसे केंद्रों में भरी पड़ी है। शक्ति ही नहीं, उनमें सन्निहित अनेकों रहस्यमय सूत्रों से पता लगने की संभावना है।

ब्लैकहोल की शक्ति का यह तो एक उदाहरण मात्र है। भूकंप आने, ज्वालामुखी फटने आदि घटनाओं का सुनिश्चित कारण अभी तक ज्ञात नहीं हो सका है। तत्त्वदर्शियों का कहना है कि प्रकृति की प्रत्येक घटना सकारण है। वह कभी भूल नहीं करती। उसके प्रत्येक घटक सुव्यवस्थित हैं। आश्चर्यजनक घटनाओं के माध्यम से वह बोध कराती है कि उसकी सूक्ष्म परतों को पढ़ा जाए। सन्निहित शक्तियों को करतलगत करने के लिए प्रचंड पुरुषार्थ किया जाए। उन नियमों एवं अविज्ञात सूत्रों को ढूँढ़ा जाए जो विलक्षण घटनाओं के घटित होने के कारण बनते हैं। प्रकृति के गर्भ में विद्यमान अनेकानेक सूक्ष्म-शक्ति स्रोतों को जानने तथा उनमें समाहित प्रकट प्रचंड सामर्थ्य को करतलगत किया जा सके तो मनुष्य के विकास तथा सुख-सुविधाओं से युक्त परिस्थितियों के निर्माण में असाधारण सहयोग मिल सकता है।

इन अद्‌भुत घटनाओं को क्या कहेंगे?

मानवी ज्ञान की परिधि सीमित है। तीन आयामों से आगे की जानकारी हमें नहीं है। चतुर्थ आयाम में पहुँचने पर पदार्थ अदृश्य हो जाता है, ऐसी वैज्ञानिकों की परिकल्पना है। ऐसे अनेकों घटनाक्रम दृश्य के अदृश्य में परिवर्तित होने एवं अदृश्य के दृश्य में परिणत होने के रूप में घटित होते रहते हैं, जिनकी कोई वैज्ञानिक विवेचना संभव नहीं है। इन घटनाओं की विचित्रता से उन्हें भूत-प्रेत, देवी-देवता की

करतूत, सिद्धि-चमत्कार आदि कहकर मन बहला लिया जाता है। किंतु वास्तविकता का पता लगा पाना एवं इनका समग्र विश्लेषण कर पाना प्रायः संभव नहीं हो पाता। अदृश्य होने के कुछ घटनाक्रम इस प्रकार हैं—

मनीला की यू. पी. आई. नामक प्रामाणिक समाचार एजेंसी ने पूरी खोज-बीन के पश्चात एक समाचार प्रकाशित कराया था कि— कानलियो क्लोजा नामक एक बारह वर्षीय छात्र जब-तब अनायास ही अदृश्य हो जाता है। स्कूल के क्लास से गायब हो जाना और दो-दो दिन बाद वापस लौटना आरंभ में लड़के की चकमेबाजी समझा गया, किंतु पीछे उसके दिए गए ब्यौरे पर ध्यान देना पड़ा। वह कहता था, कोई समवयस्क परी जैसी लड़की उसे खेलने के लिए पास बुलाती है और वह रुई की तरह हलका होकर उसके साथ खेलने, उड़ने लगता है।

पुलिस ने बहुत खोज-बीन की, उस पर विशेष पहरा बिठाया गया। यहाँ तक कि उसके पिता ने कमरे में बंद रखा तो भी उसका गायब होना नहीं रुका। पीछे किसी पादरी के मंत्रोच्चार से वह संकट दूर हुआ।

इसी तरह की एक और घटना है जो बहुत पुरानी नहीं है। कुछ वर्ष पूर्व टेनेसी राज्य के गालटिन नगर के एक धनी किसान डेविड लेंग के अचानक गायब हो जाने के समाचार ने दूर-दूर तक आतंक पैदा कर दिया था और पूरे राज्य के निवासियों को हैरत में डाल दिया था। लेंग के गायब हो जाने की घटना की व्यापक जाँच-पड़ताल भी हुई, पर इसका कोई कारण नहीं समझा जा सका और न ही यह पता चला कि वह गायब होकर कहाँ गया? वह किसी आवश्यक कार्य से घर से बाहर जा रहा था। जिस रास्ते पर वह चल रहा था उस पर कई लोग आ-जा रहे थे और लेंग से परिचित भी थे। वह रास्ते में दो-तीन परिचितों के मिल जाने पर कोई आवश्यक चर्चा करने के लिए रुक गया। वह बातचीत कर ही रहा था कि उन तीनों व्यक्तियों के देखते-देखते गायब हो गया। यद्यपि उसके भाग जाने का कोई कारण नहीं

था, पर वह जिनसे बातचीत कर रहा था, वे तो स्पष्ट देख रहे थे कि लेंग सामने खड़ा है और एक क्षण भी नहीं बीता है कि वह गायब हो गया है। मान भी लिया जाए कि वह भाग गया था, परंतु उसे घर तो वापस लौटना चाहिए था। वह घर भी वापस नहीं लौटा, जबकि वह घर पर यह कहकर बाहर निकला था कि एक-डेढ़ घंटे में वापस आ जाऊँगा। आश्चर्य की बात यह कि जिस स्थान से वह गायब हुआ, जहाँ वह खड़ा था, उस स्थान की घास बुरी तरह झुलस गई थी, परंतु जिन लोगों से वह बात कर रहा था उन्हें झुलसन तो क्या, मामूली तपन भी महसूस नहीं हुई थी। पुलिस तथा लेंग के अन्य परिचित जनों ने खूब भाग-दौड़ की, उसे ढूँढ़ने के लिए सिरतोड़ प्रयत्न किए, परंतु उसका कुछ पता नहीं चल सका।

इसी तरह की एक घटना का फ्रांसीसी वैज्ञानिक सेतारियर ने भी उल्लेख किया है। उनकी विश्वसनीयता पर किसी को उँगली उठाने का साहस नहीं हो सकता। उसने एक घटना का उल्लेख किया है-- पेरिस की एक प्राचीन प्रतिमा की जब वैज्ञानिकों का एक दल परीक्षा कर रहा था तो वह मूर्ति देखते-देखते अदृश्य हो गई और उसके स्थान पर एक दूसरी विशालकाय मूर्ति आ विराजी जो पहली की तुलना में कहीं बड़ी थी। पुरानी मूर्ति का फोटोग्राफ एवं यह दूसरी मूर्ति अभी-भी पेरिस के नेशनल म्यूजियम में विद्यमान है। यह रहस्य अभी तक सुलझ नहीं पाया है।

गुह्य विज्ञान के मूर्द्धन्य शोधकर्त्ता जे. एच. ब्रेनन ने अपनी पुस्तक 'दी अल्टीमेट एल्सव्हेयर' में पुलिस-रिकार्डों में दर्ज सैकड़ों घटनाओं का उल्लेख किया है जिनमें बहुत लोगों के अचानक अदृश्य हो जाने के विवरण हैं। यह अनुमान अंततः लगाया गया कि किन्हीं अदृश्य शक्तियों द्वारा ही उनका अपहरण किया गया होगा।

वियतनाम सन् १८८५ में फ्रेंच इंडोचीन के नाम से जाना जाता था। उस वर्ष ६०० फ्रांसीसी सैनिक केंद्रीय छावनी से सैगोन के लिए भेजे गए। निर्दिष्ट स्थान जब १५ मील की दूरी पर था तो वह सारा जत्था अचानक इस प्रकार गायब हो गया मानो वह वहाँ था ही नहीं।

भारी खोज मुद्दतों तक होती रही, पर ऐसा एक भी सुराग न मिला जिससे उनके अदृश्य होने का कारण समझा जा सके। न वे किसी ने पकड़े, न मरे, न भागे, न कोई शस्त्र, वस्त्र, पदचिह्न ही ऐसे छोड़ गए जिनके सहारे खोजी लोग किसी संभावना की कल्पना कर सकें। अदृश्य अपहरण ही लोगों की जबान पर बना रहा।

द्वितीय विश्वयुद्ध के प्रारंभकाल की ही बात है। चीन के दक्षिण नानकिंग प्रांत में १० दिसंबर, १९३९ को एक विलक्षण घटना घटी। ३००० सैनिक तीसरे पहर अपनी छावनी में मौजूद थे। एक घंटे बाद उन्हें ड्यूटी पर बुलाने के लिए बिगुल बजाया गया तो पाया गया कि उनमें से एक भी मौजूद नहीं था। उनके हथियार, कपड़े, जूते आदि जहाँ के तहाँ रखे थे, पर उनके शरीरों का कहीं अता-पता न था। उनके घर-परिवार संबंधी-मित्र सभी खोज डाले गए। सारे चीन का चप्पा-चप्पा छाना गया, पर इन ३००० में से एक भी जीवित या मृतक स्थिति में कहीं नहीं पाया जा सका। इतने वर्ष बीत जाने पर भी वह रहस्य अभी भी ज्यों का त्यों बना हुआ है। जापानियों द्वारा अपहरण की आशंका भी निर्मूल सिद्ध हुई। युद्धकाल बीत जाने पर जापानी रिकार्डों में पाया गया था कि उस स्थान तक आक्रमणकारी पहुँचे ही नहीं थे और न कोई जत्था भागकर वहाँ पहुँचा था।

उत्तरी कनाडा के चर्चिल पुलिस स्टेशन से पचास मील दूर एस्किमो लोगों का एक गाँव था 'अंजिकुनी'। सन् १९३० में प्रकाशित नक्शे में इस गाँव की आबादी तथा लंबाई-चौड़ाई का विवरण छपा है। किंतु १९३० के अगस्त मास में ऐसी कुछ अनहोनी हुई कि उस पूरे गाँव के मनुष्यों, जानवरों का ही नहीं, मलबे तक का अस्तित्व पूरी तरह गायब हो गया। भूमि ऐसी हो गई मानो वहाँ कभी किसी आबादी का अस्तित्व था ही नहीं। इससे भी बढ़कर आश्चर्य की बात एक और थी कि वहाँ के कब्रिस्तान में पूर्व से गड़े एक भी मुरदे के अवशेष नहीं पाए गए। लगता था कि उन्हें भी उखाड़ कर ले जाया गया। उस सारे प्रदेश को छान डालने पर भी इसका कोई कारण या निशान उपलब्ध नहीं हुआ। यह रहस्य अभी तक अविज्ञात ही है।

क्या अदृश्य लोक में जाने के बाद कोई फिर वापस लौटता है? इसका मात्र एक ही प्रमाण ब्रेनन की पुस्तक में संकलित है। जर्मनी के न्यूरेमबर्ग नगर में सड़क पर घूमता हुआ एक पागल पाया गया। वह देखने में तो धरतीनिवासी गोरा ही प्रतीत होता था, पर उसकी जानकारियाँ विचित्र प्रकार की थीं। वह किसी विचित्र भाषा के दस शब्द भर बोल पाता था। रोशनी उसकी आँख सहन नहीं कर पाती थीं। जलती आग को देखकर वह ऐसा आश्चर्य करता था जैसे उसने पहली बार ऐसा देखा हो।

उसे कुतूहल तो माना गया पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। कुछ दिन वह ऐसे ही बदहवासी की स्थिति से घूमता रहा। एक दिन उसकी किसी ने पार्क में घूमते समय हत्या कर दी। ऐसे अनगढ़ अपरिचित का न तो कोई शत्रु था और न धन-प्रलोभन की स्थिति थी, जिसके कारण उसे कोई मारता। समझा गया कि वह किसी अपहरण किए गए मनुष्य की अदृश्य लोक से वापसी की घटना थी। वापसी किन परिस्थितियों में हुई, उसका अनुमान तो नहीं लगा, पर यह समझा गया कि भेद न खुलने के भय से शायद उसी लोक वालों ने उसकी हत्या की जिनने कि उसका कभी अपहरण किया होगा।

अठारहवीं सदी के आरंभ में स्पेन और फ्रांस के बीच भयंकर युद्ध चल रहा था। पाँच हजार सैनिकों का नेतृत्व कर रहे थे कमांडर ली. जोर्न बाब। सैनिक तीन टुकड़ियों में बँटकर चल रहे थे। एकाएक १५ सौ सैनिकों की एक टुकड़ी कुछ सेकंडों में विलुप्त हो गई। सूचना कमांडर ली. जोर्न बाब को मिली। उक्त स्थान को खतरनाक घोषित करके उन्होंने सैनिकों को शीघ्रताशीघ्र पार करने का आदेश दिया। बाद में विशेषज्ञों की एक टोली सैनिकों के विलुप्त हुए स्थान पर खोज-बीन के लिए भेजी गई, पर कुछ भी सुराग न मिल सका। इस घटना का विस्तृत उल्लेख 'हिस्ट्री ऑफ वंडरफुल इवेंट्स' पुस्तक में है। ऐसी ही एक घटना सन् १८५६ में घटी। ३५० फ्रांसीसी सैनिकों का एक ग्रुप निकटवर्ती जर्मनी चौकी पर हमला करने के लिए आगे बढ़ रहा था। सभी सैनिक अस्त्र-शस्त्रों से लैस थे। अचानक हवा का एक हलका सा बवंडर आया और देखते ही देखते ५५ सैनिक अदृश्य हो

गए। बचे हुए पाँच सैनिकों ने उस स्थान की एक-एक इंच भूमि देख डाली, पर उनका कुछ भी पता न लग सका। महीनों तक खोज-बीन चलती रही, पर निराशा ही हाथ लगी और एक भी सैनिक की जानकारी न मिल सकी।

सन् १९२० में लंदन के युवा पिक्टर ग्रेसर अपने एक मित्र के साथ दुकान से निकले। मार्ग में दोनों राजनीतिक विषयों पर बातचीत करते हुए अपने निवास-स्थल की ओर वापस लौट रहे थे। अकस्मात मित्र के नेत्रों के सामने से ही पिक्टर ग्रेसर ओझल हो गए। आगे-पीछे चारों ओर मित्र ने देख डाला पर पिक्टर का दूर-दूर तक कोई पता नहीं था। जिस स्थान से वे विलुप्त हुए थे उसका भलीभाँति निरीक्षण कर लिया गया, पर कोई चिह्न नहीं प्राप्त हो सका।

जून १९७९ में लंदन की श्रीमती क्रिस्टीन ज्रांटन नामक महिला ने वहाँ के न्यायालय में विवाह-विच्छेद का एक अजीब मुकदमा दायर किया। याचिका में बताया गया था कि उसके पति श्री एलन के हवा में गायब हो जाने के कारण तलाक की अनुमति दी जाए ताकि वह दूसरा विवाह कर सके। गायब होने की घटना इस प्रकार घटी। सन् १९७५ में गरमी की छुट्टियाँ बिताने के लिए श्रीमती क्रिस्टीन तथा उसके पति श्री एलन उत्तरी ध्रुव की यात्रा पर निकले। दोनों पति-पत्नी रूसी सीमा से लगे लैपलैंड में स्थित एक गिरजाघर के निकट से होकर गुजर रहे थे। शीतल वायु का हलका झोंका चल रहा था, जिसका आनंद लेते हुए वे दोनों आगे बढ़ रहे थे। अचानक साथ में चल रहे एलन गायब हो गए। श्रीमती क्रिस्टीन ने उस स्थान को अच्छी तरह देख डाला पर एलन का कहीं पता-ठिकाना नहीं था। खोजी कुत्ते तथा विशेषज्ञों का एक दल श्रीमती क्रिस्टीन की मदद हेतु वहाँ आया, पर एलन की कोई खबर नहीं मिल सकी।

इस तरह की घटनाओं की विवेचना करते हुए वैज्ञानिकों में कई प्रकार की चर्चाएँ होती रहती हैं, लेकिन उससे किसी निश्चित निष्कर्ष पर पहुँच पाना, अभी तक संभव नहीं हो सका है। यही मानना पड़ रहा है कि मनुष्य की इंद्रिय चेतना के आधार पर विकसित बुद्धि जितना

जान पाती है, दुनिया वस्तुतः उससे कहीं अधिक है। उसे समझ पाने में न बुद्धि समर्थ है और न ही कोई यंत्र या मशीन ही उसका विश्लेषण कर सकती है। यद्यपि ऐसे संवेदनशील यंत्र तैयार किए जा चुके हैं जो मनुष्य की पकड़ से बहुत बाहर की चीजों के संबंध में थोड़ी-बहुत जानकारी देते रहते हैं, किंतु उनसे भी यही सिद्ध होता है कि प्रत्यक्ष दर्शन और प्रत्यक्ष अनुभव न केवल अधूरा होता है वरन बहुत बार वह भ्रामक भी सिद्ध होता है। उदाहरण के लिए हम नित्य ही सूर्य की 'धूप' देखते हैं, पर सचाई यह है कि धूप कभी भी देखी नहीं जा सकती। जो दिखता है वह धूप के प्रभाव से एक विशेष स्तर पर चमकने लगने वाले पदार्थों की चमक मात्र है। सूर्य की किरणें जो इस चमक का प्रधान कारण हैं, हमारी दृश्य शक्ति से सर्वथा परे हैं। अंतरिक्ष में प्रायः पूरे सौरमंडल को प्रकाशित एवं प्रभावित करने वाली धूप वस्तुतः सोलर स्पेक्ट्रमा—सौरमंडलीय वर्णक्रम है। उसे ऊर्जा की तरंगों एवं स्फुरणाओं की एक सुविस्तृत पट्टी कह सकते हैं। इस पट्टी में प्रायः १० अरब प्रकार के रंग हैं। पर उनमें से हमारी आँखें लाल से लेकर बैंगनी तक एक-एक रंग सप्तक को तथा उसके सम्मिश्रणों को ही देख पाती हैं। बाकी सारे रंग हमारे लिए सर्वथा अदृश्य, अपरिचित और अकल्पनीय हैं।

अब हम कुछेक सूक्ष्म किरणों को किन्हीं विशेष यंत्रों की सहायता से देख-समझ सकने में थोड़ा-थोड़ा समर्थ होते जाते हैं। जैसे धूप में 'इन्फ्रारेड' तरंगें देखी तो नहीं जातीं पर जलन के रूप में अनुभव होती हैं। इन किरणों का फोटोग्राफी में प्रयोग करके दुनिया का वास्तविक रंग विचित्र पाया गया है। घास-पात, पेड़-पौधे वस्तुतः बिलकुल सफेद हैं, आसमान समुद्र बिलकुल काले। जबकि पत्तियाँ हरी और आसमान तथा समुद्र नीले दीखते हैं। इन किरणों की सहायता से अमेरिका ने क्यूबा में लगे रूसी प्रक्षेपणास्त्रों के फोटो हवाई जहाज में खींचे थे। आश्चर्य यह कि उसमें वे उन जलती सिगरेटों के फोटो भी आ गए जो चौबीस घंटे पहले वहाँ के कर्मचारियों ने जलाई थीं और वे तभी बुझ भी गई थीं। अदृश्य जगत में पदार्थ समाप्त हो जाने पर

भी वह अंतरिक्ष में अपनी स्थिति बनाए रह सकता है। यह अजूबा हमें भूत और वर्तमान के बीच खिंची हुई लक्ष्मण-रेखा से आगे बढ़ा ले जाता है। जो वस्तु अपने अनुभव के अनुसार समाप्त हो गई, वह भी अंतरिक्ष में वर्तमान की तरह यथावत मौजूद है, यह कैसी विचित्रता है ?

ट्रैयर जेम्स ने 'इन्फ्रारेड मूवी फिल्म' के लिए प्रयुक्त होने वाले एक विशेष कैमरे आई. आर. १३५ के द्वारा मोजापे रेगिस्तान के अंतरिक्ष की स्थिति चित्रित की है। इस फिल्म में ऐसे पक्षी दिखाई पड़ते हैं, जो अपनी आँखों से कभी देखे ही नहीं जा सकते हैं। अल्ट्रावायलेट फोटोग्राफी से ऐसे प्राणियों के अस्तित्व का पता चलता है जो हमारी समझ, परख और प्रामाणिकता के लिए काम में लाई जाने वाली सभी कसौटियों से परे हैं। इन प्राणियों को 'प्रेत प्राणी' कहा जाए तो भी कोई अत्युक्ति नहीं होगी।

सृष्टि का विस्तार असीम है। इसके ज्ञात की अपेक्षा अविज्ञात का क्षेत्र अधिक व्यापक है। रहस्य के परदे अभी इतने अधिक हैं कि उनके समक्ष अब तक की जानकारियाँ नगण्य लगती हैं। सूक्ष्म जगत तो अभी पूर्णतया अनजान बना हुआ है। प्रकृति रहस्य के स्थूल पक्ष कितने ही ऐसे हैं जो अब भी मानवी बुद्धि, वैज्ञानिकों के समक्ष रहस्यमय बने हुए हैं। प्रकृति को समझ लेने का दावा करने वाली वैज्ञानिक बुद्धि भी जब उन रहस्यात्मक पक्षों का पर्यवेक्षण करती है तो उसे देखकर हतप्रभ रह जाती है। ढूँढ़ने में कोई ऐसा कारण नहीं दिखाई पड़ता जो भौतिक विज्ञान की विश्लेषणात्मक पद्धति अथवा नियमों के अंतर्गत आता हो। बौद्धिक असमर्थता व्यक्त करते हुए हारकर उन्हें अविज्ञात रहस्य घोषित किया जाता है।

इतने पर भी तथ्य एवं सत्य अपने स्थान पर यथावत हैं। सृष्टि का कोई घटनाक्रम ऐसा नहीं जो कारणों से रहित अथवा अवैज्ञानिक हो। यह बात दूसरी है कि भौतिक विज्ञान उन रहस्यमय क्षेत्रों में पहुँचकर अविज्ञात सूत्रों को ढूँढ़ निकालने में असमर्थ सिद्ध हो रहा हो जो वैज्ञानिक होते हुए भी उसकी पकड़ के बाहर हो।

निश्चित ही रहस्यों, विलक्षणताओं एवं सामर्थ्यों का भांडागार अदृश्य जगत अपने गर्भ में असीम संभावनाएँ छिपाए हुए है। भारतीय ऋषियों ने मानवी चेतना की शक्ति को भी असीम संभावनाओं से ओत-प्रोत माना है। विशिष्ट अध्यात्म साधनाओं द्वारा न केवल उस अदृश्य जगत से संपर्क साधा जा सकता है वरन उसमें सन्निहित विविध प्रकार की क्षमताओं तथा जीवधारियों से लाभ उठा सकना भी संभव है।

ये रहस्य क्या सुलझाए नहीं जा सकते?

होनोलूलू से ७५ मील की दूरी पर हवाई टापू है, यह पश्चिमी आयरलैंड के हवाई ग्रुप में आता है। नहिली के किनारे एक ६० फुट ऊँची और आधा मील लंबी पहाड़ी है। इसमें बालू, कोरल, शेल्स तथा लावा के कण पाए जाते हैं, जो अपने आप में एक आश्चर्य है। उससे भी आश्चर्य यह है कि इस टीले से प्रायः कुत्ते के भौंकने की आवाज आया करती है। रात के अंधकार और प्राकृतिक प्रकोप जैसे अवसरों पर यह ध्वनि बहुतायत से सुनने को मिलती है। बच्चों के लिए यह क्षेत्र निषिद्ध है, क्योंकि यह बोली सुनकर बच्चे डर जाते हैं। आज तक कोई भी विशेषज्ञ, कोई भी वैज्ञानिक उस कारण की खोज नहीं कर पाया कि इस टीले से यह भौंकने की आवाज क्यों आती है?

ऐसा भी नहीं है कि पास के किसी गाँव से कोई कुत्ते भौंकते हों और उनकी प्रतिध्वनि आती हो। इतिहास में फ्रेड पैटजेल जिसे 'हाग कालर चैंपियन' के नाम से जाना जाता है, वह तो उदाहरण है जिसके बारे में प्रसिद्ध है कि वह इतना ऊँचा बोलता था कि उसकी आवाज तीन मील दूर तक मजे से सुनी जा सकती थी, किंतु इस टापू में ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं, कोई भी जंतु नहीं जिसकी आवाज इतनी दूर तक पहुँच सकती हो। रहस्य ज्यों का त्यों बना हुआ है और अपने विश्लेषण की एक लंबे समय से प्रतीक्षा कर रहा है।

प्रकृति के कुछ रहस्य तो ऐसे हैं, जिन्हें देखकर दाँतों तले उँगली दबानी पड़ती है। गाने वाली बालू से भरे रेगिस्तान अभी भी अपने रहस्य बताने के लिए मानवी बुद्धि को चुनौती दे रहे हैं।

गाने वाली बालू संसार के विभिन्न भागों में पाई जाती है। बारहवीं शताब्दी की बात है—मध्य एशिया के दुर्गम रेगिस्तान टकला माकान को मार्कोपोलो अपने दल सहित पार कर रहा था। एक शाम खेमा गाड़ते समय उस दल ने सीटी जैसी सुरीली आवाज लगातार बजते सुनी। इसका कोई कारण समझ में नहीं आया तो दल के कुली भाग खड़े हुए। उन्होंने उसे स्पष्टत: भूत का आतंक माना।

प्राय: सभी कुली भाग खड़े हुए थे, पर तीन को उसने बड़ी मुश्किल से रोका। भूत के आतंक से वे बदहवास हो रहे थे। इस सुनसान में लगातार इतनी मीठी बंशी रात भर आखिर भूत के अतिरिक्त और कौन बजा सकता है? वे निरंतर भागने की आतुरता व्यक्त करते रहे। मार्कोपोलो ने बड़ी चतुरता से उन्हें रोक पाने में सफलता पाई। उसने बचे हुए तीन कुलियों को अपने पास एक जादू का ताबीज दिखाया और कहा—यह भूतों से रक्षा करने में पूरी तरह समर्थ है। कल जो कुली भागे थे, उन्हें सीटी बजाने वाले भूत ने सामने वाले टीले के पीछे पकड़कर चबा डाला है और उनकी चमड़ी की डुग्गी बनाकर बजाता फिर रहा है। तुम भागना चाहो तो भले ही चले जाओ, पर तुम्हारी भी वही दुर्गति होगी। हाँ, मेरे पास रहोगे तो यह ताबीज मेरी ही नहीं तुम्हारी भी रक्षा कर लेगा। इस आश्वासन से कुली रुक गए और उस रेगिस्तान को पार कर सकना संभव हो गया। मार्कोपोलो ने उस सुनसान के संगीत का पता लगाने में बहुत अकल लड़ाई, पर कुछ नतीजा नहीं निकला। भूत पर वे विश्वास नहीं करते थे, पर इस नीरव-निनाद का अन्य कोई कारण भी तो समझ में नहीं आता था।

उस रहस्य पर से परदा इस शताब्दी के आरंभ में उठा है। सर आरेल स्टइन ने गोबी मरुस्थल का सर्वे करते हुए यह विवरण प्रकाशित किया कि 'टकला माकान' क्षेत्र में बिखरी बालू ध्वनि मुखर है। उससे वाद्य-यंत्रों की तरह क्रमबद्ध ध्वनि-प्रवाह निकलता है। गोबी मरुस्थल प्राय: आठ लाख वर्गमील में बिखरा पड़ा है। इसके कितने ही क्षेत्र ऐसे हैं, जहाँ बालू गाती है। इनकी आवाजें अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग तरह की हैं। टकला-माकान क्षेत्र के पश्चिमी अंचल 'अर्दीस

पादशा' के सारे क्षेत्र की बालू ध्वनि-मुखर है। वहाँ अलग-अलग स्थानों में अलग-अलग तरह के संगीत बजते, गूँजते सुने जा सकते हैं।

स्पेन के एक यात्री एंटेनियो डी. अल्लोआ जब अपने दल के साथ एंड्रीज पर्वत श्रेणी पार कर रहे थे तो पंचामार्का नोटी के समीप वायुमंडल में गूँजता हुआ संगीत सुना। उसे सुनकर सारा दल भाग खड़ा हुआ। भगोड़ों ने यहाँ तक बताया कि उन्होंने अत्यंत विशालकाय दैत्य की डरावनी छाया भी उस क्षेत्र में भागती-दौड़ती अपनी आँखों से देखी थी।

प्रकृति के कतिपय अद्‌भुत रहस्यों का पता लगाने में अपने जीवन का महत्त्वपूर्ण भाग खरच करने वाले अन्वेषी लेवरी ने दक्षिणी अमेरिका के दुर्गम अंचलों की खोज-बीन की। उसने स्कूइवो नदी के रेतीले मैदान में मुखरित होने वाले ध्वनि-संगीत का वर्णन किया है। इसका विवरण सर ऑर्थर कानन डायल की लास्टवर्ल्ड में विस्तारपूर्वक दिया गया है।

इसी प्रकार नील नदी के उस पार कारनक के खंडहरों में दो पत्थरों की घूरती हुई प्रतिमाएँ हैं। दोनों एकदूसरे की ओर मुँह किए एक मील के फासले पर जमी हैं, इनमें से एक प्रतिमा तो पत्थर की तरह चुप खड़ी रहती है, पर दूसरी से अकसर कुछ बोलने की आवाज आया करती है। पत्थर की मूर्ति क्यों और कैसे बोलती है, उसका पता लगाने की हर संभव कोशिश की गई, किंतु अभी तक कुछ ज्ञात नहीं हो पाया। मूर्ति में कोई रेडियो-यंत्र भी नहीं लगे जिससे अनुमान किया जाए कि संभव है, वह अदृश्य शब्द-प्रवाहों को पकड़ लेते हों और वह ध्वनि में परिवर्तित हो जाते हों।

चेकोस्लोवाकिया की राजधानी प्राग के दो नवयुवकों के बारे में एक बड़ी विचित्र बात सुनने को आई। यह कि जब दोनों जोर-जोर से साँस लेते हैं तो उनके शरीर के अंदर से विचित्र प्रकार की ध्वनियाँ और संगीत आने लगता है, जो किसी समीपवर्ती रेडियो स्टेशन का ब्राडकास्ट प्रोग्राम भी हो सकता है। दोनों युवक जोर-जोर से साँस लेते समय किसी लाउडस्पीकर के सिरे का स्पर्श करते थे तो आवाज

इतनी ऊँची हो जाती थी कि सुनने वालों को ऐसा लगता था, जैसे कोई रेडियो पूरा खोल दिया गया हो।

दोनों युवक एक फेक्टरी में काम करते थे। डॉक्टरों ने उनकी पूरी शरीर-परीक्षा की, पर कोई कारण न बता सके। अनेक पत्रकारों ने विस्तृत छान-बीन की, पर निराशा ही हाथ लगी। युवकों के शरीर से संगीत ध्वनियों के प्रसारण का कोई कारण नहीं जाना जा सका।

विश्वविख्यात पर्यटक बर्ट्रेंड टॉमस ने एक बार अरब रेगिस्तान की यात्रा की तो उन्हें कुछ ऐसे बालू के टीले मिले जो गाते थे और उनके गाने की ध्वनियाँ इतनी स्पष्ट और ऊँची होती थीं कि काफी दूर बैठकर भी उन्हें मजे से सुना जा सकता था। यात्रा-संस्मरण में टॉमस ने लिखा है कि यह मधुर संगीत कई तरह के वाद्य-यंत्रों से संयुक्त होता था। कभी ढोलक की आवाज आती थी, कभी वीणा की सी झंकार।

सहारा के रोने वाले टीलों की कथा भी कुछ ऐसी ही है। केलीफोर्निया में भी बालू के कुछ ऐसे टीले हैं जो गाते हैं। हवाई द्वीप का एक टीला कुत्ते की सी आवाज में भौंकता है। दक्षिण अफ्रीका में कुछ ऐसी रहस्यमय भीतें हैं, यह अट्टहास तक करती सुनी गई हैं। यूरोप में कुछ ऐसे समुद्र तट हैं, जहाँ यात्री मधुर संगीत ध्वनियों का रसास्वादन करते हैं। लंकाशायर के सेंट ऐनी के समुद्री तट की बालू को एक विशेष प्रकार से दबाया गया तो उससे विचित्र तरह की ध्वनियाँ प्रसारित हुईं। वैज्ञानिकों ने इन सब रहस्यों का पता लगाने की चेष्टा की, पर अभी तक वे इतना ही जान पाए हैं कि प्रकृति में बालू की तरह के कुछ ऐसे कण हैं, जो परस्पर संघात से प्राकृतिक ध्वनियाँ निकालते हैं।

एक बार केलीफोर्निया की एक स्त्री भोजन पकाने जा रही थी, अभी वह उसकी तैयारी कर ही रही थी कि चूल्हे से विचित्र प्रकार के गाने की ध्वनि निकलने लगी। गाना पूरा हो गया, उसके साथ ही ध्वनि आनी भी बंद हो गई। न्यूयार्क में एक बार बहुत से लोग रेडियो प्रोग्राम सुन रहे थे, एकाएक संगीत-ध्वनि तो बंद हो गई और दो महिलाओं

की ऊँची-ऊँची आवाज में अपरिचित भाषा में बातें आने लगीं। रेडियो स्टेशन से पूछा गया तो पता चला कि वहाँ से केवल नियमबद्ध संगीत ही प्रसारित हुआ है। बीच की आवाज किस लोक से आई, यह किसी को पता नहीं है।

अहमद नगर जिले में पीवरा नदी के तट पर सतराता सोनगाँव में बने एक शिव-मंदिर से आने वाली संस्कृत आवाज को बहुत से लोगों ने जा-जाकर सुना। यह संगीतमय ध्वनि शिवलिंग पर डाले जाने वाले जल की निकासी के लिए बनाई गई नाली से आती थी। पूना के ८० वर्षीय इतिहासज्ञ श्री डी. पी. पोद्दार ने भी इस विचित्र ध्वनि की पुष्टि की थी और आगे अन्वेषण कराए जाने का सुझाव दिया था।

जैसलमेर में भी कुछ बालू के टीले पाए जाते हैं, जहाँ से कराहने आदि की कई तरह की ध्वनियाँ सुनी गई हैं। वहाँ के निवासियों का कहना है कि ये आवाजें इन टीलों में दबी प्रेतात्माओं की आवाजें हैं।

कुछ वैज्ञानिकों ने इन रहस्यपूर्ण संगीत-ध्वनियों का कारण रेडियो के शॉर्टवेव ट्रांसमीटरों को बताया है। उनका विश्वास है कि इस तरह के रहस्य भविष्य में और भी बढ़ सकते हैं। शिकागो में एक महिला ने पुलिस को रिपोर्ट दी है कि वह जैसे ही अपने रसोईघर का दरवाजा खोलती है, उसके विद्युतचालित चूल्हे से एक विशेष प्रकार की संगीत-ध्वनि आने लगती है। दरवाजा बंद करते ही संगीत भी बंद हो जाता है। इसकी इंजीनियरों ने जाँच की, तो पाया कि न तो पास में कोई शॉर्टवेब ट्रांसमीटर है और न ही बगल के किसी रेडियो से ध्वनि पकड़ी जा रही है, क्योंकि जाँच करते समय पास-पड़ोस के तमाम सेट बंद करा दिए गए थे।

बिजली के यंत्रों से इस तरह की ध्वनियाँ अधिक आती हैं, इसलिए यह रहस्य तात्त्विक है, ऐसा तो समझा जा रहा है पर अभी यथार्थ तथ्य पकड़ में नहीं आ रहे हैं।

सेंट लुईस में एक बार एक रात्रिभोज का आयोजन किया गया। जैसे ही संगीतकारों ने वाद्य-यंत्र उठाए कि उनसे ताजा खबरें प्रसारित होने लगीं। इससे आयोजन के सारे कार्यक्रम ही फेल हो गए। नाइरियाल

की एक स्त्री ने बताया कि उसके स्नान करने के टब से गाने की ध्वनियाँ आती हैं। एलबर्टा के एक किसान का कहना है कि जब वह अपने कुएँ के ऊपर पड़ी हुई लोहे की चादर को हटाता है तो कुएँ के तल से संगीत सुनाई देने लगता है। पुलिस को संदेह हुआ कि किसान ने कहीं रेडियो छिपाया होगा। इसलिए इंच-इंच जमीन की जाँच कर ली। पड़ोसियों के रेडियो भी बरामद कर लिए पर जैसे ही लोहे की चादर को हटाया गया, आवाज बार-बार सुनाई दी और अंततः उस समस्या का कोई हल निकाला नहीं जा सका।

कुओं, बालू के टीलों, समुद्र-तट, बिजली के पंखों, चूल्हों और वाद्य-यंत्रों से संगीत क्यों और कहाँ से फूट पड़ता है ? यह अब तक भी वैज्ञानिकों के लिए एक पहेली बना हुआ है। अब तक इस संबंध में जितनी जाँच और पड़तालें हुईं, वे सब की-सब अधूरी रह गईं। किसी एक मत पर नहीं पहुँचा जा सका कि इस तरह की संगीत-ध्वनियों का अमुक कारण है।

विज्ञान की अधुनातन प्रगति और चंद्रमा तथा मंगल पर विजय जैसे अभियान, निस्संदेह यह सिद्ध करते हैं कि मनुष्य संसार का सर्वश्रेष्ठ और बुद्धिशील प्राणी है। यह बात सदा से स्वीकार भी की जाती रही है, परंतु इसी कारण वह सृष्टि की सर्वोच्च सत्ता सामर्थ्यवान इकाई नहीं हो जाता। फिर भी मनुष्य का स्वभाव, प्रकृति, आचार-विचार और संस्कृति पर दिनोदिन यह दंभ छाता रहा है कि उसकी बराबरी दूसरा कोई प्राणी तो क्या, प्रकृति भी नहीं कर सकती। इस दंभ के कारण ही उसमें स्वार्थ, अनुदारता, अहंकार, अनास्था और अश्रद्धा के बीज दिनोदिन विकसित होते जा रहे हैं। उदाहरण के लिए यही विचार आम होते जा रहे हैं कि मनुष्य से बड़ा कोई नहीं है और वह दिनोदिन और अधिक समर्थ-सशक्त होता जाएगा।

इसे दंभ नहीं तो और क्या कहा जाएगा कि विपुला प्रकृति के थोड़े से रहस्य हाथ लग जाने पर मनुष्य अपने आपको प्रकृति और ईश्वर से भी बड़ा समझने लगे। यह दंभ ठीक उसी स्तर का है जैसे अनपढ़ लोगों के गाँव में कोई साधारण पढ़ा-लिखा व्यक्ति

पहुँच जाए और यह दावा करने लगे कि मैं दुनिया का सबसे बड़ा विद्वान हूँ।

यह दावा दूसरे लोगों की दृष्टि में नितांत हास्यास्पद ही होगा। कोई व्यक्ति उसके सामने एक जटिल सवाल कर दे और वह उस सवाल को हल न करने के कारण खिसिया उठे, उसी तरह की स्थिति मनुष्य की तब हो जाती है, जब प्रकृति उसके सामने ऐसे सवाल कर देती है, जिन्हें वह सुलझा न सके। उस दशा में मनुष्य को अपनी क्षुद्रता और अल्प सामर्थ्य का आभास होता है।

प्रकृति के ऐसे ही रहस्यपूर्ण सवाल जहाँ-तहाँ बिखरे पड़े हैं और उनका हल आज तक कोई भी वैज्ञानिक या बुद्धिशील मेधावी नहीं कर सका। एक ऐसा ही सवाल प्रकृति ने ब्रिटेन के कुछ क्षेत्रों में किया है। 'पत्थर' शब्द का उच्चारण करते ही मन में कठोरता, अनम्यता और अडिगता की कल्पना उभरती है। कठोर, संवेदनहीन और किसी को कष्ट-कठिनाई में देखकर भी प्रभावित न होने वाले व्यक्ति को पाषाण हृदय भी कहा जाता है। परंतु कुछ पत्थर ऐसे भी होते हैं जो कठोर होते हुए भी मुलायम और नम्य होते हैं। ब्रिटेन के कुछ क्षेत्रों के अलावा ये पत्थर भारत में हरियाणा के चरखी दादरी क्षेत्र में भी पाए जाते हैं।

इन पत्थरों की नम्यता और लचकीलेपन को देखकर लोगों ने इन्हें 'दिलदार पत्थर' नाम दिया है। दिल शब्द का उच्चारण करते ही लोचपन और संवेदनशीलता की कल्पना उभरती है। इस तरह का लचीलापन और कोमलता उन दिलदार पत्थरों में पाई जाती है। इन पत्थरों का कोई रंग नहीं होता और ये सामान्य पत्थरों की तरह अपारदर्शी भी होते हैं, परंतु लचक होने के कारण इनका उपयोग किन्हीं निर्माण कार्यों में नहीं होता।

इन पत्थरों का गठन लाखों कोशों के संघटन से होता है और ये कठोर होते हुए भी हवा-पानी के प्रभाव से छलनी की तरह छिद्रदार बन जाते हैं। इनमें हवापानी के आने-जाने के लिए पर्याप्त स्थान भी होता है। दोनों सिरों को पकड़कर इन्हें हिलाया जाए तो ये रबड़ की

तरह लहराने भी लगते हैं किंतु फिर भी ये ठोस होते हैं। इस प्रकार के लोचदार और ठोस पत्थर कैसे बनते हैं, विज्ञान अभी इसको नहीं समझ पाया है।

अप्राकृतिक बरसातें

विचित्र वर्षाओं के घटनाक्रम भी कुछ ऐसे रहस्यों में आते हैं, जिनका कोई तर्कसंगत समाधान नहीं मिलता। सन् १८५७ भारतवर्ष में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम (गदर) के नाम से विख्यात है। यही वर्ष कैलीफोर्निया की नापाकाउंटी स्टेट में एक ऐसे आश्चर्य के लिए विख्यात है जिसने देववाद की यथार्थता का एक अद्‌भुत उदाहरण प्रस्तुत कर लाखों लोगों को विस्मित कर दिया।

२७ अगस्त। कई दिन से बादल घुमड़ रहे थे, पर वर्षा नहीं हो रही थी और तब एकाएक बूँदें गिरनी प्रारंभ हुईं। वर्षा से बचाव के लिए लोग जल्दी-जल्दी घरों में छिपने लगे। तो भी कुछ लोग जो बाहर जंगल में काम कर रहे थे, वे जल्दी ही घर नहीं पहुँच सके। घर तो पहुँचे पर देर से भीगते हुए पहुँचे।

बरसात का पानी सिर से पाँव तक बह रहा था। कुछ बूँदें एक चरवाहे के ओठों पर लगीं पानी क्या था पूरा शरबत। अब उसने अपनी हथेली आगे कर दी और पूरा चुल्लू पानी इकट्‌ठा कर पिया-तो वह आश्चर्य में डूब गया, क्योंकि वह पानी नहीं वास्तव में शरबत था। ठीक वैसा ही जैसा कि चीनी घोलकर शरबत बनाया जाता है।

एक चरवाहे को ही नहीं कई किसानों, कुछ अध्यापकों और शहर के अनेक लोगों को भी एक साथ ही अनुभव हुआ कि आज जो पानी बरस रहा है, वह सामान्य वर्षा से बिलकुल भिन्न है अर्थात पूरे नापाकाउंटी क्षेत्र में बरसे जल में भरी-पूरी मिठास थी, ऐसा नहीं कोई हलका मीठापन रहा हो।

बात की बात में चर्चा सारे क्षेत्र में फैल गई। जो जहाँ था, उसने वहीं वर्षा का जल पिया, पाया कि उस दिन की बरसात में मिसरी घुली हुई थी।

पुराणों में ऐसी कथाएँ बहुतायत से पढ़ने को मिलती हैं, जिनमें यह बताया गया होता कि किसी देवता ने किसी भूखे-प्यासे व्यक्ति को आकाश से भोजन भेजा, सवारी भेजी, वाहन भेजे, सहायताएँ प्रस्तुत कीं। भूखे-प्यासे उत्तेजक को देवराज इंद्र ने अन्न-जल दिया था। अश्वनी कुमार आकाश मार्ग से देव औषधि लेकर च्यवन ऋषि के पास आए थे और उन्हें अच्छा किया था। भगवान राम को 'विरथ' देख इंद्र ने अपना रथ भेजा था। द्रौपदी की सहायतार्थ कृष्ण भगवान ने उनकी साड़ी को योजनों लंबा कर दिया था। बाईबिल में ऐसे वर्णन आते हैं, जब महाप्रभु ईसा को देवताओं ने देवभोग भेजे थे। इन कथाओं में बहुत सा अंधविश्वास भी हो सकता है पर विज्ञान और तथ्य भी कम नहीं हो सकते। प्रस्तुत घटना इस बात का प्रमाण है कि विशाल ब्रह्मांड में ऐसी शक्तियों का अस्तित्व असंभव नहीं जो पदार्थ के परमाणुओं को अदृश्य सहायता के रूप में प्रकट कर देने की क्षमता न रखती हों। योगसिद्धियों का मूल सिद्धांत भी यही है कि जो कुछ व्यक्त है, दृश्य है वह सूक्ष्म अव्यक्त से एक क्रम व्यवस्था द्वारा उभर रहा है। संकल्प सत्ता में वह शक्ति है जो उस क्रमिक नियम को भी बदल सकती है और उसके स्थान पर आश्चर्य-अजूबे प्रस्तुत कर सकती है।

यह घटना उसी का प्रमाण थी। कई दिन लोगों ने बरसात के स्टोर किए जल का शरबत के रूप में प्रयोग किया। नापाकाउंटी के वैज्ञानिकों ने उस जल के परीक्षण किए। कई लोगों ने घरों में जल को सुखाया और उसमें घुली हुई मिसरी को अलग किया। बरसात के साथ घुली हुई इस मिसरी की जब स्टोरों में जमा मिसरी के साथ रासायनिक तुलना की गई तो पाया गया कि दोनों के कण एक ही तरह के हैं, मिठास, एक ही तरह की है।

बरसात में यह मिसरी कहाँ से आई ? वैज्ञानिक इस बात का आज तक कोई उत्तर नहीं दे सके जब कि वे इस बात को मानते हैं कि गन्ने के रूप में खेतों से मिलने वाली शक्कर के कण मिट्टी में नहीं आकाश में ही हैं।

कुछ समय पूर्व फ्रांस के क्लेरमांट में भी ऐसी वर्षा हुई जिसे आज भी लोग लाल वर्षा या रक्त वर्षा के नाम से याद करते हैं। इस वर्षा में जो जल बरसा वह लाल रक्त के समान था। वैज्ञानिक आज तक उसका रहस्योद्घाटन नहीं कर पाए कि उसका कारण क्या था, किसी-किसी का कहना था कि सहारा रेगिस्तान में लाल पत्थरों के महीन कण हवा से उड़ते हैं, वह कण ही भाप के साथ मिल गए होंगे उसी से वर्षा हुई। इस निष्कर्ष से लोग संतुष्ट नहीं हुए तथापि पदार्थ विज्ञान के अनुसार कोई न कोई दूरवर्ती कारण तो है ही जिसके कारण यह घटना घटी।

इसी प्रकार समय-समय पर अगणित प्राणियों का वर्षा के रूप में गिरना देखा गया है। २८ मई, १८८१ के दिन इंगलैंड के वरसेस्टर शहर के परिसर में गरजते तूफान के साथ केंकड़ों और घोंघों को टनों के हिसाब से वर्षा के रूप में गिरते देखा गया। यह समाचार जब वारसेस्टरवासियों को मिला, तब वे उन्हें थैलों-गाड़ियों में लादकर शहर की मंडी में बेचने के लिए ले गए।

मछली, मेंढ़क, सीपी, गिरगिट तथा अन्य प्राणियों के समाचार कम ही मिलते हैं। किंतु उपर्युक्त घटना से २० वर्ष पूर्व ऐसी ही एक विचित्र घटना का विवरण सिंगापुर में स्थित टाइम पत्रिका के एक फ्रेंच संवाददाता ने 'ला साइंस फॉर-टॉस' के लिए भेजा था। यह घटना १६ फरवरी १८६१ के दिन घटी। उस दिन वर्षा एकदम तेज होने के कारण १० फीट दूर तक देखना असंभव सा प्रतीत हो उठा था। वर्षा के साथ समुद्र में तूफान आ जाने के कारण समुद्र अपनी मर्यादा लाँघकर शहर की गलियों तक अपना विस्तार फैला चुका था। वाद में जब वर्षा कम हुई और रास्ते से पानी उतर गया, तब देखने को मिला कि रास्ते में ढेर सारी मछलियाँ बिखरी पड़ी हैं। इसके साथ उस फ्रेंच प्रतिवेदक को यह भी देखने को मिला कि उसके घर के पिछले आँगन में भी मछलियाँ बिखरी पड़ी हैं जबकि उसका घर पूरी तरह से दीवारों से घिरा हुआ था। इसलिए उसने यह सुनिश्चित अनुमान लगाया कि मछलियाँ समुद्र के पानी के साथ आई हों या न आई हों, किंतु उनकी वर्षा निश्चित रूप से हुई है।

ऐसी सब मछलियों की वर्षा के जितने भी विवरण मिले हैं उन सबमें प्राय: यह देखा गया है कि जमीन पर गिरने के साथ भी यदि उन्हें पकड़ लिया जाता है तब भी वे जीवित नहीं मिलतीं जिससे यह अनुमान लगाना असंभव हो जाता है कि ये कितनी देर तक हवा में रहीं। किंतु एक असाधारण वर्षा की घटना जीवित मछलियों की भी पढ़ने को मिलती है। ११ फरवरी १८५९ को वेल्स की एश पहाड़ी की ढाल में काम करने वाले एक किसान जॉन लेविस ने निकटवर्ती शहर अबेरडार के पादरी के साथ मुलाकात में बताया कि उस दिन दोपहर खेत में काम करते समय अचानक उसकी पीठ पर कुछ टकराने लगा। अगल-बगल झाँकने से उसे जो दृश्य देखने को मिला उसे देखकर उसकी आँखें चौंधिया गईं। सारा खेत छोटी-छोटी मछलियों से भर गया था फिर भी ऊपर से उनकी वर्षा चालू ही थी। उसने अपनी टोपी उतारकर हवा में फैला दी तो कुछ ही क्षणों में वह टोपी भी भर गई, तब अचंभे के साथ उसे देखने को मिला कि ये सारी मछलियाँ प्राय: जीवित थीं और उछल-कूद मचा रही थीं। उन सबको बचाने के लिए उसने उन्हें समुद्री मछली समझकर नमकीन पानी में डाला। किंतु जैसे ही उसने कुछ मछलियाँ पहली बार डालीं वे तत्काल मर गईं। इसलिए बाकी को खारे पानी में न डालकर उसने साफ पानी में डाला। फलस्वरूप वे सारी बच गईं। अंतत: जब वे बड़ी हुईं तब पादरी द्वारा उन्हें 'स्टीकल बेकस' प्रकार की मछलियों के रूप में पहचाना गया। इस घटना का विवरण उन दिनों विस्तार से लंदन के 'टाइम्स' दैनिक में छपा था। 'मिस्ट्रीस अनरिवील्ड' नामक पुस्तक में ऐसी अनेक घटनाएँ वर्णित हैं।

जीवित वस्तु की वर्षा अपेक्षाकृत कम क्षेत्र पर ही होती है, किंतु अन्य पदार्थों की अप्राकृतिक वर्षा कभी-कभी पूरे राष्ट्र और महाद्वीप के एक भूभाग तक को आच्छादित कर देती है। सन् १९०३ की फरवरी में पश्चिमी यूरोप का विस्तृत भूभाग सहारा रेगिस्तान की काली रेत से भर गया था। जगह-जगह पर उसके रंगों में विभिन्नता देखने को मिली थी। कहीं-कहीं तो उसे लाल-पीले अथवा धुँधले रंग

से पहचाना गया अथवा कत्थई रंग से उसका वर्णन किया था। अनुमान यह लगाया गया था कि लगभग १ करोड़ टन की वर्षा तो केवल इंगलैंड भर में ही हुई थी। उसी तरह की वर्षा का विवरण ३० जून १९६८ को इंगलैंड और वेल्स में दोबारा घटने के रूप में भी मिलता है और वहाँ भी उसकी उत्पत्ति सहारा मरुभूमि ही बताई जाती है।

इन प्राणियों तथा पदार्थों की अनैसर्गिक वर्षा की जानकारी के बाद जब फफूँदों की वर्षा का विलक्षण वर्णन भी पढ़ने में आता है, तब माथा ठनकते ही बन पड़ता है। ऐसी घटना सन् १८१९ में १३ अगस्त की रात को अमेरिका के मेरोच्युसेट शहर में घटी। दिन भर की सख्त गरमी के बाद लगभग पूरी रात वर्षा की हलकी बौछार रही। वातावरण में हलकी ठंढक आ जाने से लोग अपनी सुस्ती उड़ाने जब बाहर निकले, तब बाहर का वातावरण देखते ही वे आश्चर्यचकित रह गए। जगह-जगह पर उन्हें लगभग आठ इंच व्यास तथा एक इंच मोटाई के चमकीले गोल पदार्थ देखने को मिले, जिनका सिरा रोएँदार था। पहले तो उनकी समझ में कुछ आया ही नहीं कि वह कौन सा पदार्थ या प्राणी है किंतु कुछ समय बाद के अन्वेषण ने इस बात की जानकारी प्रदान की कि यह एक प्रकार की फफूँद है, जो हवा में तैरती रहती है और उचित अवसर मिलने पर जमीन पर आ गिरती है। विश्व के आदि पुरातन ग्रंथों में इसकी जानकारी 'नोस्टॉक' के नाम से मिलती है। इस फफूँद में विशेषता यह रहती है कि वह सूखे दिनों में कागज की तरह पतली हो जाती है किंतु आर्द्रता अथवा जल का समागम प्राप्त करते ही देखते-देखते द्राक्षाकार की हो जाती है। इसके अचानक प्रकटन से ऐसा प्रतीत होता है मानो उनकी वर्षा हुई हो।

केवल पदार्थ-प्राणी ही नहीं, आग की वर्षा भी होती देखी गई है। १३ नवंबर १८३३ को उत्तरी अमेरिका में आग बरसने का विवरण मिलता है। उस इतिहासप्रसिद्ध घटना का कारण था अंतरिक्ष से छोटी-छोटी उल्काओं का एक साथ बरस पड़ना। अनुमानतः २ लाख छोटे-

बड़े जलते अंगारे आकाश से जमीन की ओर तेजी के साथ दौड़ते हुए देखे गए। गनीमत इतनी ही रही कि वे सभी जमीन तक पहुँचने से पहले ही बुझ गए। एक भी उल्का धरती को छू नहीं सकी और आकाश में धूल बनकर बिखर गई।

प्रकृति के रहस्य अगम हैं और उससे भी अगम्य रहस्यपूर्ण है चेतन संसार। प्रकृति जब तब मनुष्यों के सामने इस प्रकार के चुनौती भरे प्रश्न खड़े करती रहती है। जिन्हें लाख प्रयत्न करने पर भी बूझा नहीं जा सकता। यह नहीं कहा जा रहा है कि इन रहस्यों को कभी सुलझाया ही न जा सकेगा। संभव है कि आगे चलकर दिलदार पत्थर, विचित्र वर्षा और संगीतकार रेत का रहस्य सुलझा लिया जाए, परंतु फिर भी ऐसी कितनी ही विचित्रताएँ हैं जिन्हें पूरी उम्र तो क्या एक पूरा युग कल्प लगाकर भी नहीं समझा जा सकता। अभी तो यही ठीक से जान पाना संभव नहीं हुआ है कि प्रकृति में क्या है? उसके संपूर्ण रहस्यों को समझ पाना तो दूर की बात रही।

जब प्रकृति ही इतनी रहस्यपूर्ण और विचित्र है तो सूक्ष्म चेतना कितनी रहस्यमय होगी? चेतनतत्त्व कितना गूढ़ होगा? आत्मसत्ता और परमात्मसत्ता के रहस्यों का क्या अनुमान लगाया जा सकता है? मनुष्य अपनी छोटीसी बुद्धि से उसे समझने तथा उसकी सत्ता को कपोल-कल्पना सिद्ध करने का दावा किस आधार पर कर सकता है? उस विराट के प्रति श्रद्धा व्यक्त कर उससे सघन संपर्क स्थापित करने का प्रयास किया जाए तो अनेकों अनुत्तरित प्रश्न आत्मसत्ता की प्रयोगशाला में ही हल हो सकते हैं।

❑

अद्भुत संयोग-रहस्य भरी गुत्थियाँ

आर्थर कोसलर ने एक पुस्तक लिखी है—'रुट्स ऑफ कॉइन्सीडेंस'। लेखक ने यह बताने और समझाने की कोशिश की है कि विराट सृष्टि में सर्वत्र नियम और व्यवस्था का सिद्धांत काम कर रहा है। 'संयोग' प्रकृति के नियमों का एक अपवाद है जो यदा-कदा ही प्रस्तुत होता है। वस्तुतः वह भी किसी न किसी अविज्ञात नियमों द्वारा ही परिचालित है। उन नियमों से अपरिचित होने के कारण ही रहस्यमय घटनाओं को संयोग की संज्ञा दे दी जाती है। अन्यथा सत्य यह है कि सृष्टि के प्रत्येक जड़-चेतन घटकों-लघुतम अणु-परमाणुओं में भी सुव्यवस्था का नियम काम करता दिखाई पड़ता है।

जीवन-मरण का गतिचक्र भी उस स्वसंचालित व्यवस्था का एक अंग है। यह गतिचक्र अपने सामान्यक्रम में चलता रहता है तो किसी तरह का तार्किक प्रश्न नहीं खड़ा होता है। प्रकृति के नियमों से सुपरिचित होने तथा घटनाओं के कारण का बोध रहने से सब कुछ स्वाभाविक सा लगता है। कुतूहल तब उत्पन्न होता है, जब ज्ञात प्रकृति नियमों को तोड़ती हुई ऐसी रहस्यमय घटनाएँ प्रस्तुत होती हैं जिनका कोई कारण समझ में नहीं आता। बुद्धि और उसका आविष्कार विज्ञान दोनों ही उन घटनाओं की विवेचना करने में जब अपनी असमर्थता व्यक्त करते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि अदृश्य घटनाक्रमों के कुछ सूत्र ऐसे हो सकते हैं, जो इनकी पकड़ सीमा के बाहर हैं। मन और बुद्धि की सामान्य स्थूल परतों द्वारा उन घटनाओं को समझ पाना मुश्किल ही नहीं असंभव है। इनकी सूक्ष्मेत्तर चैतन्य परतों को कुरेदकर ही उन विलक्षण घटनाओं का रहस्योद्घाटन कर सकना संभव हो सकता है।

उदाहरणार्थ कितनी ही बार ऐसे अवसर आते हैं, जब मनुष्य का पुरुषार्थ प्रस्तुत संकटों के निवारण में असमर्थ सिद्ध होता है। कहीं से किसी प्रकार कोई सहयोग की संभावना नहीं नजर आती। असहाय और असमर्थता की स्थिति में ऐसा लगता है कि जीवन का अंत

सन्निकट है। पर परोक्ष अथवा प्रत्यक्ष सहयोग की आकस्मिक परिस्थितियाँ ऐसे आ खड़ी होती हैं जैसे उनके लिए सुनियोजित ढंग से पूर्व तैयारी की गई हो। मृत्यु के मुख से कितने ही व्यक्ति दैवी सहयोग पाकर बच निकलते हैं। ऐसी घटनाओं को मात्र संयोग कहकर टाला और संतोष नहीं किया जा सकता। समय-समय पर ऐसी कितनी ही घटनाओं के समाचार मिलते रहते हैं जो यह सोचने को बाध्य करती हैं कि विराट सृष्टि में ऐसी कोई समर्थ सत्ता है, जिसकी नजर ब्रह्मांड की प्रत्येक घटनाओं पर है। वह न केवल विश्व का संचालन और सुनियोजन करती है वरन आवश्यकता पड़ने पर प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष माध्यमों द्वारा सहयोग देकर अपनी करुणा का भी परिचय देती है।

इंगलैंड के एक गिरजाघर में विशप-राइट रेवरेंड विलियम मैकक्रेट 'हैरिइट काउपर' नामक एक जलपोत से २८ यात्रियों तथा चर्च के अन्य सदस्यों के साथ समुद्री यात्रा पर निकले। एक दुर्घटना में जहाज ध्वस्त हो गया। निकटतम थलीय प्रदेश से वह स्थान हजारों मील दूर था। जलपोत चालक सहित तीन व्यक्तियों के अतिरिक्त किसी को तैरना नहीं आता था। पर समुद्र की तूफानी लहरों में उनकी शक्ति भी साथ नहीं दे रही थी। बचने का अन्य कोई उपाय नहीं नजर आ रहा था। असहाय स्थिति में समुद्री तरंगों के थपेड़ों के साथ बहते जा रहे थे। इतने में एक आश्चर्यजनक घटना घटी—एकाएक समुद्र से आग का एक विशाल गोला फूटा जो ज्वालामुखी फटने जैसा था और लगभग ५० फुट की ऊँचाई तक उठ गया। इसके साथ ही एक नया द्वीप पानी से ५० फुट ऊपर उभर आया। बहते हुए सभी व्यक्ति एक-एक करके उस द्वीप पर चढ़ आए। उन्होंने इस नए द्वीप का नाम 'टाइमली आयरलैंड' रखा। तीन दिनों बाद एक दूसरा ब्रिटिश जहाज उन्हें खोजता हुआ पहुँचा। नए द्वीप और सबको सुरक्षित देखकर उन्हें भारी अचरज हुआ। एक स्वर से हर व्यक्ति ने कहा—किसी अदृश्य शक्ति ने सहायता न की होती तो मृत्यु सुनिश्चित थी। ब्रिटिश सरकारी रिकॉर्ड में इस घटना का विस्तृत वर्णन मौजूद है।

उन्नीसवीं सदी के आरंभ की एक घटना है। 'सैलीएन' नामक एक वजनी जहाज 'हैलीफाक्स' नोवा स्काटिया से बारमुडा जा रहा था। तूफान के कारण अचानक वह उलट गया। नौ व्यक्ति जहाज पर सवार थे। सभी बहने लगे। अचानक अप्रत्याशित घटना घटी। एक दूसरी समुद्री लहर ने नाव को सीधा कर दिया। एक दूसरी लहर ने बहते हुए सभी यात्रियों को नाव के भीतर उछाल दिया। ऐसा मालूम पड़ता था कि समुद्र की लहरों को कोई शक्ति नियंत्रित कर रही हो। यह दुर्घटना द्वारा बचाव का कार्य कुछ ही मिनटों में संपन्न हुआ। नाव का उलटना, अचानक सीधा हो जाना, विपरीत दिशा में बहते यात्रियों को एक साथ नाव के भीतर बिना किसी दुर्घटना के उछाल दिया जाना, इन सभी घटनाओं को मात्र संयोग नहीं कहा जा सकता।

सन् १९१७ में प्रथम विश्वयुद्ध चल रहा था। जर्मन वायु सेना का लेफ्टीनेंट बोहर्ले प्रथम विश्वयुद्ध में फ्रांसीसी सीमा के ऊपर निरीक्षण करने के लिए जहाज से उड़ान भर रहा था। अकस्मात जहाज का इंजन बंद हो गया। बोहर्ले तेरह हजार फुट की ऊँचाई से जहाज के बाहर उछल गया था। यद्यपि वह उसी की खिड़की से अटका हुआ था नियंत्रण के अभाव में जहाज नीचे गिरने लगा। इंजन बंद हो जाने से चालक रोजेन गार्ड भी कुछ कर सकने में असमर्थ था। तभी हवा का एक तीव्र झोंका महसूस हुआ और बोहर्ले को उसने जहाज के भीतर ला पटका। आश्चर्य यह कि ठीक उसी समय जहाज का इंजन भी अपने आप चालू हो गया। इस तरह दोनों ही बच गए। बोहर्ले ने एक पत्रकारों की भेंटवार्ता में कहा कि मुझे पहली बार यह अनुभव हुआ कि अदृश्य जगत में कुछ अदृश्य शक्तियाँ भी काम करती तथा दूसरों को संकट की हालत में सहयोग करती हैं।

'बिलीव इट आर नाट' पुस्तक में ऐसी ही एक और घटना का उल्लेख है। पोर्ट रॉयल जमैका का लुइसगैल्डी नामक एक व्यक्ति एक भयंकर भूकंप में जमीन के नीचे दब गया। दिन भर वह असहाय स्थिति में पड़ा रहा, पर एक दूसरा भूकंप का झटका आया, जिससे

जमीन पुनः फट गई। भूकंप के झटके ने गैल्डी को उछालकर बाहर फेंक दिया। इस तरह उसके जीवन की रक्षा हो गई।

इसी पुस्तक में एक दूसरी घटना का उल्लेख है। माटसेंस, फ्रांस की एक १८ माह की बच्ची रिनी निवरनास का अपहरण आठ व्यक्तियों ने मिलकर कर लिया। एक बड़ी रकम वे बालिका के अभिभावक से हड़पना चाहते थे। उसे अपहरणकर्त्ताओं ने एक समुद्री नौका पर रखा। लड़की के अभिभावक को एक निश्चित धनराशि लेकर पहुँचने की सूचना दी। सूचना के साथ यह धमकी भी दी गई थी यदि निर्धारित समय पर धन नहीं पहुँचा तो बालिका को समुद्र में डुबाकर मार दिया जाएगा। पर संभवतः प्रकृति को ऐसा मंजूर नहीं था। 'जाको राखे साइयाँ मार सके न कोय' वाली उक्ति अक्षरशः चरितार्थ हुई। प्रकृति का आक्रोश उलटा अपहरणकर्त्ताओं के ऊपर ही फूट पड़ा। तूफान ने नौका को डुबो दिया जिसमें आठों अपहरणकर्त्ता मारे गए। पर छोटी बच्ची पैंकिंग के बने तख्ते पर तैरती हुई 'कासिस' फ्रांस के समुद्र तट पर सकुशल आ लगी। तब तक वह निद्रामग्न रही जब तक कि तैरता हुआ लकड़ी का तख्ता समुद्र के किनारे न जा लगा। किनारे पर कुछ मछुआरों ने जाकर स्थानीय पुलिस को सूचना दी, रिपोर्ट पुलिस को पहले ही मिल चुकी थी। उस आधार पर बालिका को उसके माता-पिता के पास पहुँचा दिया गया।

यदि इस घटना को मात्र एक प्रकृति संयोग माना जाए तो कुछ समाधान नहीं निकलता। समुद्री तूफान की चपेट में आना और उसमें अपहरणकर्त्ताओं का मारा जाना, बालिका का लकड़ी की तख्ती में अपने आप आ जाना तथा सकुशल समुद्र के किनारे निद्रावस्था में जा लगना आदि घटनाओं का तारतम्य संयोग के सिद्धांत द्वारा कैसे बिठाया जा सकता है? दुर्घटना एक संयोग थी तो उसकी चपेट में बालिका को भी आना चाहिए था। पर बिना किसी क्षति के सुरक्षित भयंकर तूफान से निकलकर समुद्र के किनारे बालिका के जा पहुँचने की घटना बताती है कि किसी अदृश्य सत्ता द्वारा बालिका के जीवन-रक्षा की व्यवस्था बनाई गई।

२४ दिसंबर १९२३, न्यूकैलेडोनिया के निकट एक ऐसी विलक्षण घटना घटी जो यह बताती है कि सृष्टि में सर्वत्र कोई ऐसी शक्ति काम कर रही है, जो असमर्थता की स्थिति में मनुष्य को सहयोग भी देती है। एडोल्फ पान्स नामक एक फ्रांसीसी व्यापारी अपने एक अन्य साथी के साथ मोटर वोट से समुद्र में विहार करने के लिए निकला। अचानक एक समुद्री लहर के कारण मोटर वोट अनियंत्रित हो गई। पान्स समुद्र में गिर पड़ा। उसके दूसरे साथी ने स्वयं भी पान्स के बचाव के लिए समुद्र में छलाँग लगा दी। दोनों ही को शार्क मछलियों के बीच छोड़कर मोटर वोट लगभग आठ मील दूर जा पहुँची। मृत्यु अब सन्निकट थी। अचानक बिना किसी सवार की नौका पीछे की ओर मुड़ने लगी। ऐसा प्रतीत होता था कि किसी अदृश्य शक्ति ने मोटर वोट का नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया हो। आठ मील दूर जा पहुँची मोटर वोट तीव्र रफ्तार से ठीक वहाँ पहुँच गई, जहाँ कि दोनों व्यक्ति अब मृत्यु की घड़ियाँ गिन रहे थे। दोनों ही नौका पर जा चढ़े और सुरक्षित समुद्र के किनारे जा लगे। व्यापारी पान्स का कहना है कि मुझे विश्वास नहीं होता, यह सब कैसे हुआ, पर जो कुछ हुआ वह मात्र संयोग नहीं था।

यह समझ में नहीं आता कि किन्हीं-किन्हीं को तो इस तरह के अप्रत्याशित सहयोग मिलते हैं जबकि कितने ही दुर्घटनाओं में मारे जाते हैं। इन्हें वैसी सहायता क्यों नहीं मिलती ? क्या कर्मफल सिद्धांत से ऐसी घटनाओं का कुछ तारतम्य है ? कितने ही ऐसे प्रश्न उभरकर सामने आते हैं, जिनका उत्तर सामान्य तार्किक बुद्धि देने में असमर्थ प्रतीत होती है।

ये अप्रत्याशित घटनाएँ क्यों?

दृश्य और प्रत्यक्ष शक्तियों के अलावा संसार में कई अदृश्य व अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव डालने वाली शक्तियाँ भी हैं। उनमें से कई व्यक्ति या समाज की हितैषी होती हैं तथा कई को विघ्न उत्पन्न करने में ही रस आता है। इन शक्तियों को अदृश्य आत्माएँ कहा जाए अथवा

मनुष्य का प्रारब्ध, यह प्रश्न अपनी जगह है, परंतु जब ये मनुष्य के हित में काम करती हैं, तो वे बड़े-बड़े संकटों से उबार लेती हैं। ऐसी घटनाओं को संयोग कहकर छुट्टी पाई जाती है, क्योंकि तार्किक विवेचन नहीं हो पाता।

न्यूयॉर्क में रहने वाली महिला श्रीमती कैथलीन मेककोइन के जीवन में कई अवसर ऐसे आए जब वह आसन्न संकटों से किन्हीं प्रेरणाओं, संकेतों और सहायताओं के बल पर बच गई। श्रीमती कैथलीन यों एक साधारण महिला की तरह दिखाई देती हैं, उन्हें देखकर कोई यह नहीं कह सकता कि यह कोई अलौकिक शक्ति के संरक्षण में रहने वाली महिला है, पर कैथलीन के साथ जो घटनाएँ घटीं, वे इस तथ्य को गलत भी नहीं बतातीं।

कैथलीन जब नौ वर्ष की थीं, तब एक बार पाठशाला के सैकड़ों विद्यार्थियों के साथ हडसन नदी की सैर करने गईं। नदी के बीच स्टीमर में आग लग गई। बच्चे चीखने लगे और हंगामा मच गया। कैथलीन को तभी लकड़ी का एक तख्ता नजर आया और वह तख्ते को अपने सीने से चिपकाकर नदी में कूद गई। थोड़ी देर में कुछ नाविकों ने, जो किश्ती खेते हुए उधर आए थे, कैथलीन को बचा लिया बाकी सभी बच्चे जल गए।

इसके दो ही साल बाद की घटना है। कैथलीन एक मिनी बस में सफर कर रही थीं। अचानक बस का टायर फट गया और बस लुढ़कती हुई एक खड्ड में जा गिरी। कैथलीन बिलकुल नहीं घबराईं। वह खिड़की का शीशा तोड़कर बाहर कूद पड़ीं। बस में आग लग गई और कैथलीन के अलावा बाकी सभी लोग जलकर मर गए। इसी प्रकार सन् १९५४ में कैथलीन हवाई जहाज से अमेरिका जा रही थीं कि जहाज में कुछ खराबी पैदा हो गई। जहाज के चालक ने जहाज को नीचे उतारना चाहा, लेकिन उतरते ही जहाज में आग लग गई और सारे यात्री जलकर मर गए। केवल कैथलीन बुरी तरह जलने के बाद भी जिंदा बच गईं।

इसके पाँच वर्ष बाद ५ जनवरी १९५९ को कैथलीन रेल में यात्रा कर रही थीं। वह रेल के आखिरी डिब्बे में बैठी थीं। डिब्बे में दस-बारह यात्री थे। रात का समय था और कैथलीन ऊँघ रही थीं। अचानक उनकी आँख खुली। आँख खुलने के दो मिनट बाद ही जोर का धमाका हुआ। पीछे से आने वाली गाड़ी का इंजन कैथलीन के डिब्बे से टकरा गया था। डिब्बा चकनाचूर हो गया, उसके सभी यात्री मर गए पर कैथलीन फिर भी बच गईं।

सन् १९६३ में कैथलीन जार्जिया के एक छोटे से होटल में छुट्टियाँ मना रही थीं। एक दिन पहाड़ से कोई ८० मन का पत्थर लुढ़कता हुआ होटल की इमारत पर आ गिरा। वह पत्थर होटल के जिस भाग पर गिरा था उसमें बैठे हुए पाँच व्यक्ति उसी समय मर गए। कैथलीन भी वहीं बैठी थीं, पर इधर पत्थर का गिरना हुआ था कि उधर कुछ ही क्षण पूर्व कैथलीन उस भाग से निकल रही थीं। एक बार जब वह घर वापस आ रही थीं, उसकी कार का एक्सीडेंट हो गया जिसमें कार ड्राइवर मर गया तथा उसमें बैठे सात अन्य व्यक्ति बुरी तरह घायल हो गए परंतु कैथलीन को खरोंच तक नहीं आई थी।

सन् १९६८ में कैथलीन अपनी कुछ सहेलियों के साथ एक दावत में गईं। इस दावत में जो भोजन परोसा गया वह विषाक्त हो गया था। अत: जिन व्यक्तियों ने दावत खाई—वे सभी मर गए किंतु कैथलीन पर उस विषाक्त भोजन का कुछ भी असर नहीं हुआ। इस कांड की जाँच हुई और पता चला कि कैथलीन भी उस दावत में सम्मिलित हुई थीं। उसके आमाशय की जाँच की गई। डॉक्टर यह जानकर हैरान हुए कि उसके पेट में भी वही भोजन है फिर वह बच कैसे गई ?

श्रीमती कैथलीन के साथ घटी घटनाओं, आने वाले आकस्मिक संकट और आकस्मिक सुरक्षा-प्रबंध का कोई विश्लेषण नहीं किया जा सकता। इस संबंध में इतना ही कहा जा सकता है कि कई बार अदृश्य शक्तियाँ किन्हीं कारणों से मनुष्य को बड़े-बड़े खतरों से भी बचा ले जाती हैं। यह उनका उपकार ही कहा जाना चाहिए। यों भी

कहा जा सकता है कि मारने वालों से बचाने वाला बड़ा और समर्थ होता है। लेकिन यह प्रश्न तो फिर भी अपने स्थान पर ही है कि इन दुर्घटनाओं से कौन सी शक्तियाँ कैथलीन की ही रक्षा आखिर क्योंकर करती रहीं ?

पिछले दिनों स्विट्जरलैंड की एक ६८ वर्षीय महिला अपने पति के साथ कार में जा रही थी। रास्ते में कार दुर्घटनाग्रस्त हो गई। दुर्घटना कोई गंभीर नहीं थी परंतु उसके कारण महिला गूँगी हो गई। पति ने कितना ही उपचार कराया, कोई लाभ नहीं हुआ। वर्षों तक वह गूँगी ही बनी रही। आधुनिकतम उपचार आदि सबका सहारा लिया गया। परंतु सभी व्यर्थ सिद्ध हुए। एक दिन पति-पत्नी दोनों अपने मकान की छत पर बैठे थे, तभी आकाश में नीचे की ओर मंडराता हुआ एक जेट यान उधर से गुजरा। जैट जब उस मकान की छत से गुजर रहा था तो जेट यान ने एक धड़ाके के साथ गति बढ़ाई। उस धड़ाके ने प्रत्येक व्यक्ति को चौंका दिया। पर साथ ही उस गूंगी महिला के मुख से 'हे भगवान' शब्द निकला और उस गूंगी वृद्धा को फिर वाणी मिल गई।

कोलोन की बाईस वर्षीय जीन हेजीज बचपन से ही बहरी हो गई थीं। वह बोल तो सकती थीं परंतु किसी दुर्घटना में श्रवण शक्ति जाती रहने के कारण वह दूसरे क्या कह रहे हैं, जरा भी सुन नहीं पाती थीं। वह फोम बनाने के एक कारखाने में काम किया करती थीं। इसे वर्षों हो गए थे काम करते हुए, इस दौरान उसे कई बार छींकें भी आईं, खाँसी भी उठी और सरदी-जुकाम भी हुआ। परंतु एक दिन जब वह अपने दफ्तर में काम कर रही थीं तो उसे जोर की छींक आई। छींक के कारण उसकी आँखों से आँसू निकल आए। परंतु तभी उसे वर्षों बाद अचानक अपनी साँस लेने की आवाज सुनाई दी और आस-पास काम कर रहे मित्रों एवं सहेलियों की बातचीत भी।

इसके बाद तो उसे जैसे छींकों का दौरा ही पड़ गया और प्रत्येक छींक उसकी श्रवणशक्ति को सतेज बनाती जा रही थी। छींकों का दौरा जब समाप्त हुआ तो वह भलीभाँति सुन सकती थी। इससे पूर्व बचपन

में जब वह किसी दुर्घटना में बहरी हो गई थी, अभिभावकों ने उसका बहुत इलाज कराया, परंतु उसका बहरापन नहीं गया तो नहीं ही गया। डॉक्टरों का कहना था कि बहरेपन को दूर तभी किया जा सकता है जबकि उसके कान का ऑपरेशन किया जाए। इस चीर-फाड़ को जोखिमपूर्ण बताया जा रहा था और फिर भी इस बात की पूरी संभावना नहीं थी कि सफलता मिल ही जाएगी। इसलिए माता-पिता ने उसका ऑपरेशन नहीं ही कराया और एक दिन यह समस्या बिना किसी हस्तक्षेप के सुलझ गई।

जिस प्रकार अविज्ञात कारणों से कभी-कभी मनुष्य पर अप्रत्याशित विपत्तियाँ टूट पड़ती हैं और प्रत्यक्ष कोई कारण न होने पर भी दुर्घटना स्तर का संकट सहन करना पड़ता है। उसी प्रकार कभी-कभी विपत्तियों से उबरने वाली ऐसी अदृश्य सहायताएँ भी अनायास ही मिलती देखी गई हैं जिनकी न कभी कोई आशा थी और न संभावना ही।

संयोगों के रूप में अनेकों बार ऐसी अनेक घटनाएँ घटित होती हैं जिससे प्रतीत होता है कि प्रकृति मनुष्य की अनायास सहायता भी करती है। अनचाहे ही ऐसे प्रसंग सामने आ खड़े होते हैं जिनसे प्रतीत होता है अदृश्य क्षेत्र की कोई सत्ता मनुष्य की अप्रत्याशित सहायता कर रही हो। ऐसे संयोग प्रायः ऐसे ही होते हैं, जिनमें मनुष्य नफे में रहता और प्रसन्नता अनुभव करता है।

आश्चर्य यह होता है कि ये संयोग दिग्काल की परिधि लाँघकर किसी घटना की पुनरावृत्ति के रूप में ही क्यों घटते हैं? लगता है मानो सुनियोजित रूप में प्रकृति जगत में क्रियाशील चेतन सत्ता उन्हें संचालित कर रही हो। क्या कारण है कि सफलता अथवा अभिशाप के रूप में पकती और समय पाकर घटती। इन घटनाओं के मूल स्रोतों की जानकारी इससे अधिक मनुष्य को नहीं है कि ये मात्र संयोग हैं? शोध का यह आयाम मात्र पृथ्वी की परिधि में ही बड़े विस्तृत रूप में फैला पड़ा है। पृथ्वी से इतर तो अंतरिक्ष जगत, ध्रुव प्रदेश, भूगर्भ एवं अन्यान्य ग्रहपिंडों में भी यह क्षेत्र खुला हुआ है। मात्र पृथ्वी के ही दृश्यमान प्रसंगों को लेते हैं तो 'अनएक्सप्लेंड' नाम से ही फाइल में

दर्ज अनेक घटनाएँ दृश्यपटल पर गुजरती-विश्व मनीषा को चुनौती देती रहती हैं, नित्य जुड़ती चली जाती हैं।

ग्रेमाउथ न्यूजीलैंड के बंदरगाह पर वैलवी नामक स्टीमर ५ नवंबर १८७० को डूब गया। लगातार कई वर्षों की कोशिशों से बड़ी मुश्किल से उसे बाहर निकाला गया। मरम्मत करके इस लायक बनाया गया कि वह फिर से अपना काम कर सके।

कई वर्ष तक वह ठीक प्रकार काम करता भी रहा पर एक आश्चर्यजनक दुर्भाग्य फिर सामने आया। ठीक १६ वर्ष बाद उसी तारीख को उसी स्थान पर फिर आकर डूब गया जिस पर कि यह पिछली बार डूबा था।

पेरिस की एक महिला एडिग्यू हैरियट की सोने की अँगूठी उनके रसोईघर से गायब हो गई। बहुत ढूँढ़ने पर भी वह मिली नहीं। कई वर्ष बीत गए। हैरियट एक मछली बाजार से खरीदकर लाई। पकाने के लिए जब उसका कतरब्योंत किया गया तो मछली के पेट में वही अँगूठी मिली जो कई वर्ष पूर्व रसोईघर में खोई थी और जिस पर उनका नाम भी खुदा था। हुआ यह कि अँगूठी रसोईघर से नाली में बहते हुए नदी में पहुँची और उसे मछली निगल गई। संयोग ही कहना चाहिए कि वही मछली, मछुहारों के हाथों में घूमती-फिरती फिर वहीं पहुँच गई जहाँ अँगूठी वापस पहुँचनी थी। ऐसे में शकुंतला-दुष्यंत वाली कथा सच होती प्रतीत होती है।

मांटिसेनी (न्यूयॉर्क) में पेंट लेनाहन नामक व्यक्ति तालाब के किनारे लालटेन जलाकर कुछ काम कर रहा था। अचानक लालटेन की चिमनी गिरी और तालाब में डूब गई। ढूँढ़ने पर भी वह नहीं मिली।

एक लंबा समय बीत गया। लेनाहन उसी तालाब में मछली पकड़ने बैठा। तीसरे पहर एक मछली उसके काँटे में फँसी। खींचकर बाहर निकाला तो वह आश्चर्यचकित रह गया। जब उसने देखा कि पाँच वर्ष पहले जो चिमनी उसकी लालटेन से छूटकर तालाब में गिरी थी। उसी को वह मछली काँटे की तरह पहने हुई थी। इसे संयोग ही

कहना चाहिए कि मछली उस चिमनी में घुस गई और उस लंबी अवधि तक उसे यथावत पहने रही।

फ्रांस के डु–चेरे के गिरजे में ७५ वर्षों तक कार्यरत पारी सेंट विल्स को दफनाया गया था। बहुत दिन बाद गिरजे की एक दीवार गिर पड़ी। जो भाग गिरने से बच गया था, वह मनुष्य की मुखाकृति का था और गौर से देखने पर पादरी की आकृति से बिलकुल मिलता–जुलता था। सभी उसे आश्चर्य से देखते और दाँतों तले उँगली दबाकर रह जाते थे—इस अद्‍भुत संयोग पर।

उल्कापिंड आमतौर से सुनसान जगहों में ही गिरते पाए गए हैं। मनुष्य पर उनका आक्रमण हुआ हो ऐसी घटना इतिहास में एक ही मिलती है। यह व्यक्ति था इटली का फ्रेडो येट्टाला। यह वैज्ञानिक भी था। उसकी शोध भी उल्काओं के स्वरूप तथा धरती के वातावरण में प्रवेश करने के रहस्यों पर चल रही थी। शोधकाल में वह उल्कापिंड की चोट से बुरी तरह घायल हुआ और अंततः मर ही गया। खेतों पर घूमते समय एक उल्काखंड का छोटा सा टुकड़ा उसके ऊपर गिरा और वह मृत्यु को प्राप्त हुआ।

ह्वेल मछली का शिकार करने वाली नाव 'विनस्लो' के मालिक एडमंड गार्डनर की एक बार पेरु के समुद्र में ह्वेल से मुठभेड़ हुई। मछली भाले की चोट से आहत हुई और उसने उलटकर हमला बोल दिया। उसने जबड़े से नाव के अगले हिस्से को बुरी तरह चबा डाला और साथ ही कप्तान को भी दबोच लिया। वह किसी तरह बच तो गया, पर दाँतों के भिंचाव से उसकी खोपड़ी में छेद हो गया, गले की हड्डी चकनाचूर हो गई और एक हाथ पूरी तरह कुचल गया। कई महीने उसे अस्पताल में रहना पड़ा। वह न केवल अच्छा हो गया वरन दुर्घटना के १०१ वर्ष बाद तक जीवित रहा और तारीख के हिसाब से उसी दिन मरा जिस दिन ह्वेल मछली ने उसे चबा डाला था।

सन् १३०० में इटली के राजा चार्ल्स ने ल्युसेरे का गिरजा एक अरबी मसजिद के मलबे से बनवाया। इसके पूर्व यह मसजिद भी कैथेड्रल के गिरजाघर के मलबे से बनाई गई थी।

ईसा से १०१ वर्ष पूर्व जर्मनी और रोम से भयंकर लड़ाई हुई। जर्मनों ने रोमनों को हरा दिया और सेना कत्ल कर दी गई। मात्र अकेला जनरल सरटोरियस ही जीवित बच सका। उसने कत्लेआम का शिकार होने की अपेक्षा उफनती रोम नदी में छलाँग लगाकर पार जाने और किसी प्रकार प्राण बचाने की बात सोची। इस प्रयास में उसे लोहे के कवच, ढाल, तलवार से लदा होने के कारण अपना और शस्त्रों का भारी बोझ ढोना पड़ा। नदी की धार काटते हुए तैरना पड़ा। इस प्रयास में वह जिंदगी-मौत की लड़ाई लड़ता हुआ पार हुआ और अंततः बच ही गया। इसके दस वर्ष बाद उसकी मृत्यु ठीक उसी दिन आश्चर्यजनक ढंग से हुई। पैर फिसला, मोच आई और सूजन बढ़ते जाने भर से तीन दिन में मौत हो गई।

मनुष्य और जड़ पदार्थों के साथ घटित होते रहने वाले इन संयोगों की एक बड़ी लंबी शृंखला है। ये बताती हैं कि समष्टि चेतना मानवी व्यष्टि चेतना से तथा पदार्थ जगत से अविच्छिन्न रूप से जुड़ी हुई हैं। आदान-प्रदान का क्रम भी इन्हीं के बीच चलता है। अद्‌भुत नजर आने वाले ये संयोग तो उस प्रक्रिया का तनिक आभास भर देते हैं।

इसे संयोग नहीं, परोक्ष सहयोग कहिए

ऐसे अप्रत्याशित अदृश्य सहयोगों की और भी कितनी ही घटनाएँ प्रकाश में आती हैं, जिन्हें मात्र संयोग कहकर टाला नहीं जा सकता। उनकी गहराई में जाकर सूक्ष्म पर्यवेक्षण करें तो सहायता के पीछे नियामक सत्ता की ही करुणा परोक्ष सहयोग बनकर बरसती दिखाई पड़ती है। मानवी पुरुषार्थ जब समाधान ढूँढ़ने में असमर्थ सिद्ध होता है तो ऐसी विकट घड़ियों में उस महान सत्ता की अनुकंपा कितने ही परोक्ष अथवा प्रत्यक्ष माध्यमों के रूप में अवतरित होकर पीड़ितों की रक्षा करती है। निराकार होने से वह साकार माध्यमों को ही विशेष प्रयोजन के लिए विशेष प्रकार की प्रेरणा भरकर

सहयोग के लिए प्रेरित करती हैं। ऐसी घटनाओं के कितने ही प्रमाण समय-समय पर मिलते रहते हैं।

विश्व के न्यायिक इतिहास में यह अद्‌भुत, आश्चर्यजनक और अविश्वसनीय घटना थी। उन्नीसवीं सदी के आरंभ में इंगलैंड के एक्स्टर जेल में जॉन ली नामक व्यक्ति को फाँसी की सजा दी जानी थी। निर्धारित तिथि और समय पर डॉक्टर ने जॉन ली के स्वास्थ्य की परीक्षा की और उसे स्वस्थ घोषित किया। आपराधिक न्यायशास्त्र के अनुसार 'ली' की अंतिम इच्छा पूछी गई। उत्तर में उसने मात्र इतना कहा—'मैं निरपराध हूँ।' मजिस्ट्रेट ने उसकी इस बात पर बिलकुल ध्यान नहीं दिया। स्थानीय धार्मिक रिवाज के अनुसार पादरी ने जॉन ली के अपराधों के लिए परमात्मा से क्षमा-प्रार्थना करने की रस्म पूरी की। मजिस्ट्रेट की देख-रेख में फाँसी का फंदा 'ली' के गरदन में फँसा दिया। जल्लाद ने पैरों के नीचे से मजिस्ट्रेट का आदेश पाते ही तख्ता खींचा पर टस से मस नहीं हुआ। जल्लाद जेम्स ने तख्ते की परीक्षा की कि शायद वह कहीं जाम हो गया हो, पर ऐसा कुछ नहीं था। परीक्षा की अवधि में वह भली भाँति सरकने लगा था, पर जैसे ही पुनः फाँसी के लिए उसने तख्ता खींचना चाहा वह चट्टान की भाँति अड़ा रहा। तीसरी बार मजिस्ट्रेट ने स्वयं भी जेम्स के साथ तख्ते का परीक्षण किया पर किसी प्रकार की गड़बड़ी नहीं पाई। तीसरी बार पूरे जोर से जेम्स ने तख्ता खींचना चाहा, पर वह पूर्णतया असफल रहा। पूरे सात मिनट तक 'ली' को फाँसी दी जाती रही, पर अंत तक असफलता ही हाथ लगी।

जेम्स और मजिस्ट्रेट दोनों ही हैरान थे—इस घटना को देखकर। घटना का पूरा विवरण देखकर मजिस्ट्रेट ने उच्चतम न्यायालय में फाँसी के लिए अगली तारीख देने के लिए निवेदन किया किंतु न्यायालय ने ऐसा करने में अपनी असमर्थता व्यक्त की। कारण यह था कि न्यायालय की आपराधिक दंड-प्रक्रिया में ऐसा कोई प्राविधान नहीं है कि किसी भी व्यक्ति को दो बार फाँसी दी जाए। जान ली कैद से छूट गया। पत्रकारों ने 'ली' से पूछा कि वह फाँसी के फंदे से जीवित

बचकर कैसे आ गया, उत्तर में उसने कहा—"मैं निर्दोष था। अपने को निर्दोष साबित करने के लिए मैं सबूत जुटाने में असमर्थ रहा। मैं हृदय से परमात्मा को स्मरण करता रहा उसने मेरी पुकार सुन ली। उसी के अदृश्य हाथों ने मुझे बचाया है।"

नवंबर १९५० की बात है। एक दिन वाशिंगटन के प्रसिद्ध लेखक हैराल्ड ग्लक अपने कमरे मे घूम रहे थे। बाहर ठंढी हवा चल रही थी। हलकी बूँदाबाँदी भी तेज हवा के साथ शुरू हो चुकी थी। अचानक उनके मन में यह तीव्र प्रेरणा उठी कि समुद्र के किनारे चलना चाहिए। कारण वह स्वयं भी नहीं समझ पा रहे थे। पत्नी से कहा तो उसने विरोध किया कि ऐसे मौसम में जाना उचित नहीं, पर ये रुके नहीं और चल पड़े। मार्ग में एक मित्र का घर था उसे भी साथ लिया और समुद्र के किनारे पहुँच गए। मित्र को भी प्रतिकूल मौसम में समुद्र के किनारे जाना उचित नहीं लगा, पर स्नेहवश इनकार नहीं कर सका।

किनारे पहुँचने पर दोनों ने देखा कि थोड़ी दूर पर दो व्यक्ति समुद्र की तूफानी लहरों से संघर्ष कर रहे हैं। थोड़ा भी विलंब होने का अर्थ था उन दोनों का मृत्यु की गोद में जा पहुँचना। समुद्र के किनारे एक छोटी नाव पड़ी थी। बिना एक क्षण गँवाए हैराल्ड ने नाव को तूफानी लहरों के बीच छोड़ दिया। दोनों मित्र पतवार के सहारे नाव का संतुलन बनाए रखते हुए डूबते व्यक्तियों तक पहुँचने में सफल हो गए। दोनों को नाव के भीतर खींचा और वापस किनारे की ओर लौट पड़े। किनारे पहुँचने पर मौत के मुख से वापस लौटे व्यक्तियों ने बताया कि एक नाव दुर्घटना में वे दोनों समुद्र में गिर पड़े। डूबते–उतराते वे ईश्वर से सहायता की याचना करते रहे। कृतज्ञता व्यक्त करते हुए सजल नेत्रों से उन दोनों ने कहा कि आपको भेजकर परमात्मा ने हमें नवजीवन दिया है। अकारण मन में उठने वाली तीव्र प्रेरणा का रहस्य हैराल्ड ग्लक को तब समझ में आया। उन्होंने ईश्वर को धन्यवाद दिया कि उनके हाथों से किसी के जीवन की रक्षा हुई।

सन् १८७४ की प्रख्यात घटना इंगलैंड के इतिहास में आज भी अंकित है, जिसका अध्ययन करके उस करुणामय सत्ता के प्रति हृदय-श्रद्धा से आविर्भूत हुए बिना नहीं रहता। इंगलैंड का एक जहाज धर्म के प्रचार के लिए न्यूजीलैंड के लिए रवाना हुआ। कुल २१४ यात्री जहाज में सवार थे। अचानक जैसे ही जहाज बिस्के की खाड़ी पार कर रहा था उसकी पेंदी में छेद हो गया। पानी भीतर आने से बंद करने के सारे प्रयास असफल रहे। जहाज में पानी निरंतर भरता जा रहा था। नाविक ने सूचना दी कि जो अपनी जीवन की रक्षा कर सकते हैं तैरकर कर लें अन्यथा जहाज अब डूबने ही वाला है। जहाज में बैठे चंद ही व्यक्ति ऐसे थे जिन्हें तैरना आता था। अधिकांश तैरना नहीं जानते थे। पादरियों की एक मंडली जहाज में बैठी परमात्मा से इस खतरे से रक्षा के लिए प्रार्थना कर रही थी। जो तैरना जानते थे वे कूदने ही वाले थे कि एक अनहोनी घटना घटी। जहाज की पेंदी में जहाँ छेद हुआ था उसमें एक बड़ी मछली इस प्रकार आकर फँस गई कि पानी आने की गुंजाइश नहीं रही। वह जहाज में तब तक फँसी रही जब तक कि जहाज किनारे नहीं पहुँच गया। इस तरह मछली ने अपनी जान देकर सबकी जान बचा ली।

ऐसे उदाहरण पुराणों में अनेकों मिलते हैं जो उपर्युक्त घटनाओं की भाँति विकट घड़ियों में ईश्वरीय सहयोग की पुष्टि करते हैं। कौरवों की सभा में द्रौपदी का चीरहरण किया जा रहा था, मनुष्य की नहीं—ईश्वरीय सहायता से उसकी लाज बच गई। दमयंती बीहड़ वन में अकेली थी। व्याध उसका सतीत्व नष्ट करने पर तुला था। कोई सहायक नहीं था। दमयंती की नेत्र ज्योति में से शक्तिधारा फूटी और व्याध जलकर भस्म हो गया। प्रह्लाद का पिता उसकी जान का ग्राहक बना था। खंभे से नृसिंह भगवान प्रकट हुए और प्रह्लाद की रक्षा की। घर से निकाले गए पांडवों की सहायता करने भगवान स्वयं आए। नरसी मेहता के सम्मान की रक्षा स्वयं भगवान ने आगे बढ़कर की। ग्राह के मुख से गज के बंधन छुड़ाने के लिए प्रभु नंगे पैरों दौड़े आए थे। मीरा को विष का प्याला और साँपों का पिटारा भेजा गया। न जाने

कौन उसके हलाहल को चूस गया और मीरा जीवित बच गई। समुद्र से टिटहरी के अंडे वापस दिलाने में सहायता करने भगवान अगस्त्य मुनि बनकर आए थे। इस तरह के उदाहरणों से पुराणों की गाथाएँ भरी पड़ी हैं जो यह बताती हैं कि मानवी पुरुषार्थ जब संकटों के निवारण में अक्षम सिद्ध होता है तो ईश्वरीय सत्ता का सहयोग माँगने पर अवश्य मिलता है।

सुप्रसिद्ध उपन्यासकार एनी पेरिश ने सन् १९२० में अपने पति के साथ पेरिस नगर की यात्रा की। साइन नदी के किनारे बसे 'इलेडि ला साइट' नामक स्थान पर एक सेकंड हैंड बुक स्टाल पर खड़े होकर पुस्तकों के पन्ने पलट रही थीं कि अचानक 'जैक फ्रास्ट एंड अदर स्टोरीज' नामक एक पुरानी पुस्तक हाथ लगी। अपने पुराने मित्र को पाकर एनी पेरिश अत्यंत खुश हुईं। कोलोरैडो स्प्रिंग्स में अपने बाल्यकाल में उन्हें यह पुस्तक सर्वाधिक प्रिय थी, जो बाद में कहीं खो गई थी। पुस्तक के पन्ने पलटने पर उनके पतिदेव ने देखा कि एक पन्ने के किनारे पर एन्नी पेरिश, २०९ एन बेवर स्ट्रीट, कोलोरैडो स्प्रिंग्स' लिखा था। बड़ी ही विचित्रता थी इस घटनाक्रम में, जिसमें वही पुस्तक उसी व्यक्ति को वर्षों बाद संयोगवश मिल गई।

प्रख्यात मनोवैज्ञानिक डा. लारेंस ली शान द्वारा लिखा गया ध्यान और पैरानार्मल फेनामिना पर एक लेख सन् १९६८ में इंटरनेशनल जनरल आफ पैरासाइकोलॉजी नामक पत्रिका में प्रकाशित हुआ।

दिसंबर १९६७ में लारेंस ने रहस्यवाद पर लिखी अपनी एक अनुपम कृति को पढ़ने और उस पर अपने बहुमूल्य सुझाव देने के लिए सुप्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक डॉ. नीना रिडिनौर के पास भेजा। नीना रहस्यवाद की विशेषज्ञ मानी जाती थी। ११ दिसंबर को लारेंस डॉ. नीना से एक लंच पर मिले और अपने पेपर से संबंधित उनके विचारों और समीक्षाओं को ध्यान से नोट करने लगे। लेख से संबंधित रहस्यवाद पर आठ पुस्तकों के नाम नीना ने सुझाए जिनमें पाँचवी पुस्तक एम. ए. क्रेंमरमग द्वारा लिखित 'द वीजन आफ एशिया' थी।

डॉ. लारेंस ने इस पुस्तक की खोज अनेक विख्यात पुस्तकालयों में की परंतु कहीं भी यह पुस्तक उपलब्ध नहीं थी। एक दिन निराश लारेंस अपने घर लौट रहे थे कि अचानक रास्ते में एक पुरानी पुस्तक पड़ी हुई मिली। उठाकर देखने पर 'द वीजन आफ एशिया' शीर्षक से वह पुस्तक रखी मिली। लारेंस के विस्मय मिश्रित हर्ष का ठिकाना न रहा।

दूसरे दिन प्रातः लारेंस डॉ. रिडिनौर से मिले और उन्हें अपनी रहस्यात्मक कहानी कह सुनाई। पुस्तक का नाम सुनते ही डॉ. रिडिनौर चौंक पड़ी और बोली—"मैंने तो इस पुस्तक का नाम तक नहीं सुना।" यह एक और दूसरी पहेली सामने आ उपस्थित हुई जिसका कोई उत्तर दोनों के पास नहीं था। दोनों के मुख से एक ही समाधान सुना गया कि यह किसी अदृश्य सहायक का अनुदान है जिसने आवश्यकता का महत्त्व समझा और उसे पूरी करने का सुयोग बिठा दिया। शोध कार्य में इस पुस्तक से उन्हें बड़ी मदद मिली।

१९वीं सदी के सुप्रसिद्ध खगोलविद कैमाइल फ्लेमैरिआन गुह्यविद्या के भी विद्यार्थी थे। अपनी पुस्तक 'द अननोन' में मृत्यु के बाद जीवन की पहेलियों का वर्णन करते समय उन्हें एक प्रेतात्मा से साक्षात्कार हुआ था। इस पुस्तक का प्रकाशन सन् १९०० में हुआ। कैमाइल अपने कमरे में बैठे वायुमंडल की गतिविधियों के बारे में लिख रहे थे कि अचानक तेज झंझावात आया और खिड़कियों के शीशे तोड़ता हुआ कमरे में प्रवेश कर गया। लेखक की मेज पर फैले कागज के पन्नों को उड़ाता हुआ सड़क पर बिखेरता चला गया। कुछ दिनों बाद जब यह पुस्तक छपने प्रकाशक के पास भेजी गई तो उसमें हवा के प्रभाव वाला चैप्टर गायब था जिसकी सूचना प्रकाशक ने श्री कैमाइल को अपने एक दरबान के माध्यम से भेज दी। संयोग से दरबान को रास्ते में बिखरे हुए कुछ पन्ने मिले जिन्हें समेटकर उसने अपने मालिक को दे दिया। प्रकाशक को उन खोए हुए पन्नों के मिल जाने पर प्रसन्नता मिश्रित आश्चर्य हुआ।

यह समझना भूल होगी कि जो कुछ हम जानते हैं, वह पूर्ण है। सच तो यह है कि संसार के अगणित रहस्यों में से हमें अभी तक जो हस्तगत हुआ है, उसे बहुत ही स्वल्प कहा जा सकता है। जो जानना शेष है उसे विज्ञात की तुलना में असंख्य गुना अधिक कहा जा सकता है। उपलब्ध ज्ञान के संवर्द्धन में जब उस क्षेत्र के विशेषज्ञ तक अपनी अपूर्णता को स्वीकारते हैं तो उस चेतना क्षेत्र का तो कहना ही क्या, जिसके संबंध में हजारों वर्षों से कोई कहने लायक अनुसंधान ही नहीं हुआ और जो पुरातनकाल में उपलब्ध था, उसे प्रमादवश गँवा दिया गया। प्रकृति का अंतराल ढेरों रहस्य अपने उदर में समाए बैठा है। हम उसे अविज्ञात मान बैठते हैं, जब कि होता यह सब कुछ सुव्यवस्थित ही है।

ये सुनियोजित घटनाक्रम

सौभाग्य की तरह दुर्भाग्य का भी अपना अस्तित्व है। व्यक्ति अपने बुद्धि-कौशल और पराक्रम से अनेक संपदाएँ-सफलताएँ प्राप्त करता है, इसमें संदेह नहीं। किंतु यह भी सच है कि कितनों ही को अनायास ही उतना कुछ मिल जाता है जिसको उनकी योग्यता, तत्परता से कहीं अधिक ही कहा जा सकता है। स्वल्प प्रयास से अधिक बढ़ी-चढ़ी सफलताओं की तरह अनेकों के सम्मुख ऐसा दुर्भाग्य प्रकट होते भी देखा गया है जिसमें सही प्रयास करने पर भी असफलता का मुँह देखना पड़ा। इसी प्रकार ऐसा भी होता रहता है कि किन्हीं को अकारण संकट में फँसना और त्रास सहना पड़ा। ऐसे प्रसंगों को दुर्भाग्य कहा जाता है।

दुर्भाग्य जैसी दुर्घटनाओं का कारण अविज्ञात है। पूर्वजन्मों का संचित कर्मफल, ग्रह दशा, दैवी प्रकोप, भाग्य विधान कहकर इन प्रसंगों का निमित्त कारण समझने का प्रयत्न किया जाता है फिर भी इतने भर से संतोष नहीं होता। अभी उन वास्तविक कारणों का जानना शेष है जो सौभाग्य और दुर्भाग्य की तरह प्रकट होते और अप्रत्याशित परिणतियाँ प्रस्तुत करते हैं।

इस संदर्भ के रहस्य तब और भी अधिक जटिल हो जाते हैं, जब दुर्भाग्यों को कई व्यक्तियों के साथ एक ही घटनाक्रम के साथ जुड़ते हुए देखा जाता है अथवा एक ही समय में एक जैसी घटनाएँ घटित होती देखी जाती हैं। संयोग भी तो आखिर किसी नियम के अंतर्गत ही होने चाहिए। यहाँ अकस्मात या अपवाद जैसा घटित होने की भी तो इस सुनियोजित सृष्टि में कोई गुंजाइश नहीं है।

मनुष्यों के साथ कई प्रकार की घटनाएँ एक ही क्रम से घटित होती देखी जाती हैं। इन दुर्भाग्यों के पीछे क्या तारतम्य है, इसका कारण विदित न होने पर भी इतना अवश्य है कि सृष्टि के कुछ नियम ऐसे हैं जो इस प्रकार के संयोग बिठाने के लिए आधारभूत कारण हैं। भले ही हम उन्हें समझ न पाए हों। चेतना के अदृश्य क्षेत्र का अनुसंधान क्रम जब चलेगा, तब प्रतीत होगा कि सौभाग्यों और दुर्भाग्यों का सूत्र संचालन किस केंद्र से होता है? उसका स्वरूप, स्थान और विधान समझ सकने पर हम सौभाग्यों से लाभान्वित हो सकने और दुर्भाग्य से बच सकने की स्थिति में भी पहुँच सकते हैं।

संसार में विभिन्न अवसरों पर घटित होने वाले योजनाबद्ध दुर्भाग्यों में से कुछ विशेष रूप से विचारणीय हैं।

प्रथम विश्वयुद्ध के आरंभ होते ही फ्रांस के इंटेलिजेन्स विभाग ने एक जर्मन जासूस पेटर कार्पिन को देश में प्रवेश करते ही गिरफ्तार कर लिया और उसे गुप्त स्थान में कैदी बनाकर रखवाया। सन् १९१७ में छद्मवेश बनाकर फ्रांस की जेल से पेटर भाग निकला। इसके पूर्व उसने एक जाली दस्तावेज बनाकर अपने अधिकारियों को इस आशय का पत्र भेजा जिसमें उसने ऊपर किए जा रहे व्यय को बंद कर देने और उससे एक वाहन खरीदने के लिए निवेदन किया था। सन् १९१९ में रूहर में एक सड़क दुर्घटना में उसी वाहन से एक व्यक्ति कुचलकर मर गया। अब तक यह प्रांत फ्रांस के अधिकार में था। जाँच-पड़ताल करने पर पाया गया कि यह वही पेटर कार्पिन था जिसने तीन वर्ष पूर्व फ्रांस की सरकार के आँखों में धूल झोंकी थी।

हमी ग्रोव, टेक्सास के हेनरी जीगलैंड ने सन् १८८३ में अपनी प्रेमिका से संबंध विच्छेद कर लिया। उसके इस व्यवहार से प्रेमिका

के भाई ने जीगलैंड को मार डालने के इरादे से उस पर प्राणघातक हमला किया परंतु निशाना ठीक नहीं बैठा और गोली उसके चेहरे को स्पर्श करती हुई निकलकर, समीप के एक पेड़ में जा धँसी। हमलावर ने समझ लिया कि जीगलैंड मारा गया और वह वहाँ से भाग निकला।

सन् १९१३ में जीगलैंड ने उस पेड़ को काटना चाहा, परंतु स्तंभ मोटा और मजबूत होने के कारण उसे मुश्किल जान पड़ी। पेड़ काटने के लिए उसने डाइनामाइट को इस्तेमाल किया। दुर्भाग्य से पेड़ में धँसी गोली विस्फोट के कारण निकलकर जीगलैंड के सिर में जा समाई। जीगलैंड वहीं ढेर हो गया।

सन् १९३० में डेट्राइट की सड़कों पर जोसेफ फिगलाक चहल-कदमी कर रहे थे कि अचानक एक हृष्ट-पुष्ट मोटा-ताजा लड़का ऊँचाई पर स्थित एक खिड़की से उनके ऊपर आ गिरा। एक वर्ष बाद उसी खिड़की से वही बालक फिर से फिगलाक के ऊपर कूद पड़ा। फिगलाक और वह बालक दोनों अभी जीवित हैं।

क्लौडे वालबोने नामक हत्यारे ने सन् १८७२ में फ्रांस के बैरन रोडेमायर डि ताराजोन नामक प्रख्यात व्यक्ति की हत्या कर दी। इससे २१ वर्ष पूर्व इसी नाम के एक अन्य हत्यारे ने बैरन के पिता को मौत के घाट उतार दिया था। इन दोनों हत्यारों में कोई आपसी संबंध नहीं था।

राजकुमारी मारिया डेलपोजो डेला सिस्टर्ना की शादी इटली के राजकुमार अमेडियो दि ड्यूक डी. एओस्टा के साथ ३० मई १८८७ में ट्यूरिन में बड़े धूमधाम के साथ संपन्न हुई। विवाहोपरांत राजकुमार के साथ जुड़ा दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं का क्रम। शादी के कुछ क्षणों बाद ही रानी की सहायिका ने रस्सी के फंदे से लटककर खुदकुशी कर ली। राजमहल के द्वारपाल ने अपनी गरदन काट ली। विवाहोत्सव की शोभायात्रा का मार्गदर्शन कर रहे कर्नल की आतप आघात से मृत्यु हो गई। स्टेशन मास्टर हनीमून ट्रेन के पहिये के नीचे आ जाने से कुचलकर मर गया। राजा का सहयोगी घोड़े की पीठ पर से गिर कर दम तोड़ गया। अधिक से अधिक श्रेष्ठ व्यक्तियों ने अपने आप को गोली से

मार लिया। यह दंपती कभी भी सुख-चैन से प्रसन्नता की जिंदगी व्यतीत नहीं कर सका।

फ्रांस के मार्सीले हेनरी ट्रैगने की गणना महान द्वंद्व योद्धाओं में की जाती है। सन् १८६१ से १८७८ तक उसने पाँच लड़ाइयाँ लड़ीं। चार युद्धों में उसने अपने प्रतिद्वंद्वियों-दुश्मनों को मात्र एक-एक गोलियों के अचूक निशाने से ही धराशायी किया था। पाँचवें युद्ध में गोलियों के आदान-प्रदान से वह स्वयं मारा गया फिर भी उसका निशाना अचूक रहा और अपने प्रतिद्वंद्वी की जान लेकर ही रहा।

जोसेफ एनर अपने समय के प्रख्यात चित्रकार थे। सन् १८३६ में एनर १८ वर्ष की अल्पायु में वियना में रस्सी का फंदा गले में डालकर आत्महत्या करने जा रहे थे कि अचानक कैपूचियन संत उनके सम्मुख प्रकट हो गए और इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना से उनकी रक्षा की। चार वर्ष बाद बुडापेस्ट में एनर ने फिर से रस्सी से लटककर मरना चाहा परंतु इस बार भी संत ने अचानक प्रकट होकर फाँसी के फंदे से त्राण दिलाया। आठ वर्ष व्यतीत होने के उपरांत क्रांति का समर्थन करने और राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने के आरोप में एनर को फाँसी की सजा मिली। कैपूचियन संत की प्रेरणा से जोसेफ एनर का प्राणदंड स्थगित कर दिया गया।

सन् १८८६ में ६८ वर्ष की आयु में जोसेफ ने एक दिन अपनी ही पिस्तोल से गोली मारकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। उसके अंतिम दाह-संस्कार का पूरा प्रबंध उसी प्राणरक्षक संत ने किया, जिसके नाम तक को एनर नहीं जानता था।

फ्रांस के लुइस पंद्रहवें के शैशवकाल से ही प्रत्येक महीने की २१वीं तारीख को एक ज्योतिषी उनके घर आता और बालक की सुरक्षा के लिए अभिभावकों को विशेष चेतावनी देकर चला जाता। बार-बार की चेतावनी ने नवयुवक लुइस को आतंकित कर दिया। परिणामस्वरूप उस तारीख को लुइस किसी कार्य विशेष को या व्यापारिक मामले को हाथ में न लेता।

संयोग से २१ जून १७९१ को अत्यंत सावधानी बरतने पर भी वह बड़े ही रहस्यमय ढंग से पकड़ लिया गया। लुइस और उसकी

रानी अंटोइनेटी को वारेन्नेस में उस समय गिरफ्तार किया गया, जब वे क्रांति से निकलकर भागने की तैयारी में थे। दूसरे वर्ष २१ सितंबर को फ्रांस में क्रांतिकारियों ने राजशाही को समाप्त कर गणतंत्र की घोषणा कर दी। २१ जनवरी १७९३ को लुइस पंद्रहवें को फाँसी दे दी गई।

कभी-कभी कुछ वस्तुएँ किसी कारण ऐसी अभिशापग्रस्त होती पाई गई हैं कि उनके प्रयोग करने वाले अकारण ही विपत्ति में फँसते और संकट झेलते देखे गए हैं।

लीडेन, मेसाचूसेट निवासी जावेज स्पाइसर को शेयस के विद्रोह के समय २५ जनवरी १७८७ को स्प्रिंगफील्ड में उस समय दो गोलियाँ आकर लगीं, जब वह संघीय शस्त्रागार में कार्यरत था और वह वहीं ढेर हो गया। उस समय वह अपने भाई डैनियल का कोट पहने हुए था, जिसे तीन वर्ष पूर्व ५ मार्च १७८४ को उसी संघीय शस्त्रागार पर दो गोलियाँ आकर लगी थीं। ये गोलियाँ उसी छिद्र से होकर निकली थीं, जिससे स्पाइसर का भाई डैनियल मारा गया था।

फ्रांस के राजा लुइस चौदहवें के पास डच वैज्ञानिक क्रिश्चियन हाइजेंस द्वारा प्रदत्त एक अलंकृत घड़ी थी। १ सितंबर १७१५ को प्रात:कालीन वेला में ७.४५ पर अचानक राजा की मृत्यु हो गई। तब से आज तक उस घड़ी में ७.४५ ही बजे हैं। उस घड़ी को सुधारने के अनेकों प्रयत्न किए गए परंतु एक भी प्रयास सफल नहीं हुआ। सुइयाँ यथावत ७.४५ पर ही टिकी हुई हैं।

नोयल न्यूट ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'हिस्ट्री द टोक्यो' में एक अभिशप्त प्राणघातक वस्त्र किमोनो का वर्णन किया है। इस वस्त्र को एक के बाद दूसरी और तीसरी किशोरियों ने धारण किया और पहनने के बाद ही मृत्यु को प्राप्त हो गईं। इस दुर्भाग्यशाली किमोनो को फरवरी १६५७ में एक जापानी पादरी ने आग लगा दी। उस वक्त भयानक आँधी आई तथा भयंकर लपटें उठने लगीं और नियंत्रण से बाहर हो गईं। बढ़ती हुई आग ने टोक्यो के तीन चौथाई भाग को भस्मीभूत बना दिया, जिसमें ३०० मंदिर, ५०० महल, ९००० दुकानें, ६१ पुल ध्वस्त हो गए और एक लाख व्यक्तियों की जानें गईं।

जान माइकेल और रॉबर्ट ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'फिनामिना: ए बुक आफ वंडर्स' में एक दुर्घटना का वर्णन करते हुए लिखा है कि १९७५ में एक व्यक्ति मोपेड पर सवार बरमूडा की सड़क से गुजर रहा था कि अचानक उसकी भिड़ंत एक टैक्सी से हो गई और वह वहीं ढेर हो गया। इस घटना के ठीक एक वर्ष बाद उसी दिन उसका छोटा भाई बरमूडा की उसी सड़क पर अपने भाई की उसी मोपेड पर बैठा जा रहा था कि सामने से आती हुई टैक्सी से दुर्घटनाग्रस्त होकर वहीं मर गया। यह वही टैक्सी थी जिसने उसके भाई की जान ली थी और संयोग से वही व्यक्ति उस टैक्सी ड्राइवर के साथ गाड़ी में बैठा था जो एक साल पहले बड़े भाई की दुर्घटना के समय टैक्सी पर सवार था।

मनुष्य ने अपने विकासक्रम में लंबी यात्रा की है, इसमें उसे बहुत कुछ मिला भी है। प्रकृति का अनुसंधान करते-करते वह अन्यान्य प्राणियों की तुलना में इतना समृद्ध, समर्थ और समुन्नत बना है। उस प्रक्रिया को मात्र भौतिक क्षेत्र तक ही सीमित न रखकर चेतना की रहस्यमयी परतों को समझने का भी प्रयत्न चलना चाहिए। अनुसंधान का यह क्षेत्र और भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। अदृश्य जगत के साथ घनिष्ठता स्थापित कर सकना प्रगतिशील एवं खोजप्रिय मनुष्य के लिए संभव नहीं है। दुर्भाग्यों का कारण और निवारण समझा जाना चाहिए और सौभाग्यों की उपलब्धि का मार्ग खोजा जाना चाहिए। इसके लिए आत्मिक अनुसंधानों में हमारी अभिरुचि और तत्परता की अधिक बढ़ोत्तरी आवश्यक है। इन घटनाक्रमों को मात्र अपवाद कहकर टाला नहीं जाना चाहिए। प्रकृति का अंतराल अनेक विलक्षणताएँ अपने अंदर समेटे बैठा है। यदाकदा दृष्टिगोचर होने वाले ये घटनाक्रम उसी की अभिव्यक्तियाँ हैं। इससे हमारी अन्वेषण बुद्धि को पोषण मिलता है एवं अविज्ञात की खोज का पथ प्रशस्त होता है। वह, जो हम नहीं जानते, सत्य भी हो सकता है। उसे नकारने न देने के लिए स्रष्टा यदाकदा ऐसी अनेक घटनाएँ व्यक्ति एवं प्रकृति के माध्यम से संपन्न कराता रहता है। इस तिलस्मी जंजाल को कुरेदा एवं इसका रहस्योद्‌घाटन किया जाना चाहिए। यह सुनिश्चित है कि आत्मिकी के अतिरिक्त और कोई विद्या इस दिशा में सहायता नहीं दे सकती।

☐

अदृश्य जगत के रहस्यमय क्रिया-कलाप

प्रसिद्ध फ्रांसीसी विचारक वाल्टेयर ने कहा था कि इस दुनिया में संयोग जैसी कोई चीज नहीं होती न ही चमत्कार का कोई अस्तित्व है। जिसे हम संयोग या चमत्कार कहते हैं वास्तव में वह एक अनदेखे कारण का दिखाई देने वाला परिणाम मात्र होता है। इस तथ्य को अब सर्वसम्मति से स्वीकार किया जाने लगा है, जो कुछ हम देखते हैं, संसार वहीं तक सीमित नहीं है। इस तथ्य को नकारने वाला जमाना बीत चुका। वे दिन लद गए जब दृश्य के विपरीत प्रतिपादित तथ्य को अस्वीकार किया जाता था। अब गैलीलियो के यह कहने पर आपत्ति किए जाने तथा उसे फाँसी देने का जमाना नहीं रहा कि पृथ्वी सूरज की परिक्रमा लगाती है न कि सूरज पृथ्वी के चारों ओर घूमता है। सही माने में तो यह प्रश्न ही बेमानी हो गया है कि जो कुछ हम आँखों से देखते हैं क्या यही संसार है? कौन इस तथ्य से इनकार करता है कि जो कुछ हम देखते हैं, वह उन अस्तित्वों का एक छोटासा अंश मात्र है जो हम नहीं देख सकते या कि जिनका अस्तित्व है। न केवल खुली आँखों से वरन सूक्ष्मदर्शी यंत्र भी उन्हें देखने में असमर्थ हैं। देखना तो दूर रहा संवेदनशील यंत्रों द्वारा भी उन्हें अनुभव नहीं किया जा सकता।

फिर भी चमत्कार जैसी कुछ बात देखी जाती है और समझा जाता है कि यह संयोगमात्र हुआ। मानने वाले तो यहाँ तक मानते हैं कि इस संसार का निर्माण भी नियति की संयोगजन्य घटनाओं का परिणाम है। परंतु सचाई इससे भिन्न है। सही बात तो यह है कि प्रत्येक परिवर्तन और घटनाक्रम के पीछे कोई न कोई कारण विद्यमान होता है। संयोगवश कोई दुर्घटना नहीं घटती उनके मूल में कुछ त्रुटियाँ होती हैं। दो बसों में टक्कर हो जाती है, दसियों बीसियों यात्री मारे जाते हैं तो यह दुर्घटना संयोगवश घटी कहना असंगत होगा। दुर्घटना के मूल में बस चलाने वाले ड्राइवरों का हाथ बहक जाना, समय पर

ब्रेक न लगना, रास्ता देखकर गाड़ी की दिशा निर्धारित न करना जैसे हजारों कारण हो सकते हैं। चूँकि ये कारण जाने-समझे हैं, इसलिए दुर्घटना को कोई चमत्कार नहीं कहेगा। परंतु कई बार ऐसी घटनाएँ घटती हैं, जिनका कोई कारण समझ में नहीं आता इसलिए उन्हें चमत्कार कहा जाता है, परंतु कारण उनके भी होते हैं।

शास्त्रीय भाषा में इसे ही कार्य कारण सिद्धांत कहा जाता है। इस आधार पर ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध भी किया जा सकता है और उसे असिद्ध भी ठहराया जा सकता है। सिद्ध इस आधार पर किया जाता है कि इतने बड़े विश्व-ब्रह्मांड की उत्पत्ति और संचालन का कोई कारण, कोई आधार तो होना चाहिए। यह कारण या आधार ही ईश्वर है। असिद्ध इस ढंग से ठहराया जाता है कि जब सभी वस्तुओं, घटनाओं और अस्तित्वों का कोई कारण है तो ईश्वर का भी कोई कारण होना चाहिए। वह कारण क्या है? यदि ईश्वर का कोई कारण नहीं है तो इस जगत का भी कारण हो यह क्या आवश्यक है? खैर, हमारा उद्‌देश्य यहाँ ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करना या असिद्ध ठहराना नहीं है। कहा इतना भर जा रहा है कि हमारी समझ बहुत छोटी है, सीमाएँ तथा उसके आधार पर सब कुछ जान लेने का न तो दावा किया जा सकता है और न ही दंभ भरा जा सकता है।

उपर्युक्त विवेचना कुछ ऐसे घटनाक्रमों के संदर्भ में की जा रही है, जिनके माध्यम से प्रत्यक्ष रूप से तो अनायास ही कुछ रहस्यों का प्रकटीकरण होता चला गया किंतु गहराई से खोजने पर प्रतीत होता है कि उनके मूल में कोई न कोई अविज्ञात अनुदान क्रियाशील था। यह अवतरण किस लोक से होता है? क्या इसे संयोग कहा जाए या प्रकृति की व्यवस्थित रीति-नीति का ही अंग, यह सोचने पर बुद्धि कुंठित होने लगती है। रहस्यों का उद्‌घाटन आविष्कारों के रूप में चेतना की जिन गहराइयों से होता है, उससे लगता है कि यह सब उस परमसत्ता के क्रिया-कलापों की एक झलक भर ही है।

वैज्ञानिक आविष्कारों का श्रेय यों उन्हें मिलता है, जिनके द्वारा वे प्रकाश में आने योग्य बन सके। किंतु यहाँ यह विचारणीय है कि क्या उसी एक व्यक्ति ने उस प्रक्रिया को संपन्न कर लिया? आविष्कर्त्ता जिस रूप में अपने प्रयोगों को प्रस्तुत कर सके हैं, उसे प्रारंभिक ही कहा जा सकता है। सर्वप्रथम प्रदर्शन के लिए जो आविष्कार प्रस्तुत किए गए वे कुतूहलवर्द्धक तो अवश्य थे, आशा और उत्साह उत्पन्न करने वाले भी—पर ऐसे नहीं थे जो लोकप्रिय हो सकें और सरलतापूर्वक सर्वसाधारण की आवश्यकता पूरी कर सकें। रेल, मोटर, टेलीफोन, हवाई जहाज आदि के जो नमूने पंजीकृत कराए गए थे, उनकी स्थिति ऐसी नहीं थी कि उन्हें सार्वजनिक प्रयोग के लिए प्रस्तुत किया जा सके। यह स्थिति तो धीरे-धीरे बनी है और उस विकास में न्यूनाधिक उतना ही मनोयोग और श्रम पीछे वालों को भी लगाना पड़ा है, जितना आविष्कर्त्ताओं को लगाना पड़ा था।

संसार के महान आंदोलन आरंभिक रूप में बहुत छोटे थे, उनके आरंभिक स्वरूप को देखते हुए कोई यह अनुमान नहीं लगा सकता था कि कभी वे इतने सुविस्तृत बनेंगे और संसार की इतनी बड़ी सेवा कर सकेंगे। किंतु अविज्ञात ने जहाँ उन आंदोलनों को जन्म देने वाली प्रेरणा की निर्झरिणी का उद्गम, किसी परिष्कृत व्यक्ति के माध्यम से उसे विकसित किया, साथ ही इतनी व्यवस्था और भी बनाई कि उस उत्पादन को अग्रगामी बनाने के लिए सहयोगियों की शृंखला बनती-बढ़ती चली जाए। ईसा, बुद्ध, गांधी आदि के महान आंदोलनों का आरंभ और अंत—बीजारोपण और विस्तार देखते हुए लगता है, यह श्रेय-साधन किसी अविज्ञात के संकेतों पर चले और फले-फूले हैं।

जिन आविष्कर्त्ताओं को श्रेय मिला उन्हें सौभाग्यशाली कहा जा सकता है। गहरे मनोयोग के सत्परिणाम क्या हो सकते हैं, इसका उदाहरण देने के लिए भी उनके नामों का उत्साहवर्द्धक ढंग से उल्लेख किया जा सकता है। गहराई में उतरने की प्रेरणा भी उस चर्चा से कितनों को ही मिलती है। पर यह भुला न दिया जाना चाहिए कि उन आविष्कारों आरंभों के रहस्य प्रकृति ही अपना अंतराल खोलकर

प्रकट करती है। हाँ इतना अवश्य है कि इस प्रकार के रहस्योद्घाटन हर किसी के सामने नहीं होते। प्रकृति को भी पात्रता परखनी पड़ती है। अनुदान और अनुग्रह भी मुफ्त में नहीं लूटे जाते, उन्हें पाने के लिए भी उपयुक्त मनोभूमि तो उस श्रेयाधिकारी को ही विनिर्मित करनी पड़ती है।

आविष्कारों की चर्चा इतिहास-पुस्तकों में जिस प्रकार होती है, वह बहुत पीछे की स्थिति है। आरंभ कहाँ से होता है, यह देखना हो तो पता चलेगा कि उन्हें आवश्यक प्रकाश और संकेत अनायास ही मिला था। इनमें उनकी पूर्ण तैयारी नहीं के बराबर थी। दूसरे कहा जाए तो यह भी कह सकते हैं कि उन पर इलहाम जैसा उतरा और कुछ बड़ा कर गुजरने के लिए आवश्यक मार्गदर्शन देकर चला गया। संकेतों को समझने और निर्दिष्ट पथ पर मनोयोगपूर्वक चल पड़ने के लिए तो उन आविष्कर्ताओं की प्रतिभा को सराहना ही पड़ेगा।

बात लगभग दो हजार वर्ष पुरानी है। एशियामाइनर के कुछ गड़रिये पहाड़ी पर भेड़ें चरा रहे थे। उनकी लाठियों के पेंदे में लोहे की कीलें जड़ी थीं। उधर से गुजरने पर गड़रियों ने देखा कि लाठी पत्थरों से चिपकती है और जोर लगाने पर ही छूटती है। पहले तो इसे भूत-प्रेत समझा गया फिर पीछे खोज-बीन करने से चुंबक का ज्ञान हुआ। चुंबक का विज्ञान यहीं से आरंभ हुआ। आज तो चुंबक एक बहुत बड़ी शक्ति की भूमिका निभा रहा है।

यह गड़रिये चुंबक का आविष्कार करने का उद्देश्य लेकर नहीं निकले थे और न उनमें इस प्रकार के तथ्यों को ढूँढ़ निकालने और विश्वव्यापी उपयोग के लायक किसी महत्त्वपूर्ण शक्ति को प्रस्तुत कर सकने की क्षमता ही थी।

न्यूटन ने देखा कि पेड़ से टूटकर सेब का फल जमीन पर गिरा। यह दृश्य देखते सभी रहते हैं, पर न्यूटन ने उस क्रिया पर विशेष ध्यान दिया और माथापच्ची की कि फल नीचे ही क्यों गिरा, ऊपर क्यों नहीं गया? सोचते-सोचते उसने पृथ्वी की आकर्षण शक्ति का पता लगाया और पीछे सिद्ध किया कि ग्रह-नक्षत्रों को यह गुरुत्वाकर्षण ही परस्पर

बाँधे हुए है। इस सिद्धांत के उपलब्ध होने पर ग्रह विज्ञान की अनेकों प्रक्रियाएँ समझ सकना सरल हो गया।

पेड़ से फल न्यूटन से पहले किसी के सामने न गिरा हो ऐसी बात नहीं है। असंख्यों ने यह क्रम इन्हीं आँखों से देखा होगा पर किसी अविज्ञात ने अकारण ही उसके कान में गुरुत्वाकर्षण की संभावना कह दी और उसने संकेत की पूँछ मजबूती से पकड़कर श्रेय प्राप्त कराने वाली नदी पार कर ली।

अब से ३०० वर्ष पुरानी बात है। हालैंड का चश्मे बेचने वाला ऐसे ही दो लैंसों को एक के ऊपर एक रखकर उलट-पलट का कौतुक कर रहा था। दोनों शीशों को संयुक्त करके आँख के आगे रखा तो विचित्र बात सी दिखाई पड़ी। उसको गिरजा बहुत निकट लगा और उस पर की गई नक्कासी बिलकुल स्पष्ट दीखने लगी। दुरवीन का सिद्धांत इसी घटना से हाथ लगा और अब अनेक प्रकार के छोटे-बड़े दुरवीन विज्ञान की शोधों में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

चश्मे बेचना एक बात है और दुरवीन दूसरी। दोनों के बीच सिद्धांत और व्यवहार का कोई सीधा तालमेल नहीं है। फिर भी संकेत देने के लिए इस संगति भर से काम चल गया। प्रकृति ने एक रहस्य उसके ऊपर उड़ेल ही दिया।

सन् १८९५ की बात है कि प्रो. राब्टजन अपनी प्रयोगशाला में एक हवा रहित काँच की नली में होकर विद्युत-प्रवाह छोड़ने संबंधी प्रयोग कर रहे थे। संयोगवश उसी कमरे में अन्यत्र फोटोग्राफी प्लेटें बंद बकसे में रखी थीं। प्लेटें जब काम में लाई गईं तो उन पर प्रयोग समय के दृश्य अंकित पाए गए। बंद बकसे में घटना-चित्र कैसे पहुँचे? इस खोज से 'एक्स-रे' का आविष्कार हो गया। सभी जानते हैं कि आज रोगों के निदान और सर्जरी में एक्स किरणों की सहायता से उतारे जाने वाले चित्रों का कितना अधिक योगदान है।

एक्स-रे के आविष्कार का श्रेय जिस व्यक्ति को मिला उसे सौभाग्यशाली कहने में हर्ज नहीं, पर प्रयोगशाला में ऐसा सुयोग जान-बूझकर नहीं बनाया था। उस संयोग के पीछे कोई अविज्ञात ही काम कर रहा होगा। अन्यथा ऐसे-ऐसे संयोग आएदिन न जाने कितने सर्वसाधारण के सामने आते रहते हैं। उनकी ओर ध्यान जाने का कोई कारण भी नहीं होता।

बात आविष्कारों की हो या आंदोलनों की श्रेय-साधनों का शुभारंभ 'अविज्ञात' की प्रेरणा से होता है। इस अविज्ञात को ब्रह्म कहा जाए या प्रकृति, इस पर बहस करने की आवश्यकता नहीं। श्रेय लक्ष्य है। प्रगति अभीष्ट है। वह आत्मा के-परमात्मा के उद्गम से आविर्भूत होता है। एक सहयोगी शृंखला का परिपोषण पाकर विकसित होता है। यश किसे मिले यह सामान्य, साधारण और उथली बात है। उद्गम स्रोत किसी गहराई से उगता, उठता और सफल सुविकसित होता है। श्रेयाधिकारी अपनी पात्रता भर विकसित करते और उसके बदले यशस्वी बनते हैं।

व्यक्तित्वों के बीच अद्भुत साम्य-संयोग

यों हर व्यक्ति का अस्तित्व पृथक-पृथक है। रक्त, मांस आदि का स्वरूप एक जैसा दीखने पर भी उनके रसायनिक पदार्थों में न्यूनाधिकता पाई जाती है। इसी आधार पर आकृति और प्रकृति की भिन्नता दृष्टिगोचर होती है। स्रष्टा के कला-कौशल का यह एक अद्भुत प्रयोग है कि एक ढाँचे में उसने किसी भी घटक को नहीं ढाला। सब में थोड़ा-बहुत अंतर रहता है। एक ही पेड़ की पत्तियाँ मोटी दृष्टि से देखने में एक जैसी लगती हैं, पर बारीकी से देखने पर उनमें से हरेक के बीच अंतर पाया जाता है।

भेड़ें एक जैसी लगती हैं। अजनबी के लिए उनमें अंतर करना कठिन है, किंतु गड़रिया अपने झुंड की हर भेड़ का अंतर पहचानता है। उनमें से कोई किसी अन्य के झुंड में जा मिले तो उसे सहज ही

पहचानकर पकड़ निकालता है। मनुष्यों की आकृति और प्रकृति के संबंध में भी यही बात है। सर्वथा एक जैसे कोई दो कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं होते। कितने ही समान क्यों न लगते हों पर अंतर अवश्य रहेगा। हाथ के अँगूठे की छाप लेने के पीछे भी यही कारण है कि संसार में किन्हीं भी दो व्यक्तियों के अँगूठे की त्वचा पर रहने वाली लकीर एक जैसे आकार-प्रकार की नहीं होतीं।

इतने पर भी कभी-कभी संयोगवश ऐसे लोग मिलते हैं, जिनके बीच असाधारण साम्य पाया जाता है। न केवल उनके स्वरूप एवं स्वभाव में समानता होती है वरन कई बार तो उनके साथ घटित होने वाले घटनाक्रम भी इस प्रकार साम्य लिए होते हैं कि उस कथन पर सहज विश्वास नहीं होता और इस संयोग का कारण समझ में नहीं आता। फिर भी जो प्रत्यक्ष है उसे झुठलाया भी कैसे जाए? ऐसे प्रसंग कई बार अनबूझ पहेली जैसे जटिल प्रतीत होते हैं। ऐसे विचित्र संयोगों की घटनाओं में कुछ का विवरण प्रामाणिक उल्लेखों में इस प्रकार मिलता है—

अमेरिकी राष्ट्रपति थामस जेफर्सनको 'डिक्लेरेशन ऑफ इंडिपेंडेन्स' पुस्तक के प्रख्यात लेखक के रूप में ख्याति प्राप्त हैं और जान आदम्स उनके मुख्य शिक्षकों में से एक थे। आदम्स यूनाइटेड स्टेट्स के द्वितीय राष्ट्रपति चुने गए और जेफर्सन तृतीय राष्ट्रपति बने। इन दोनों व्यक्तियों की प्रगाढ़ आत्मीयता बेमिसाल थी। दोनों महान विभूतियों की मृत्यु ५० वर्ष की आयु में ४ जुलाई १८२६ को हुई। जेफर्सन की यह इच्छा सदैव बलवती बनी रही कि वह आदम्स के साथ निरंतर घनिष्ठतम संबंध बनाए रहे। अपने अंतिम क्षणों में जेफर्सन ने उपस्थित लोगों से यही पूछा था—क्या आज चौथी तारीख है।

राष्ट्रपति जान आदम्स सन् १८०१ में अपने सामाजिक जीवन से अवकाश ग्रहण कर चुके थे, फिर भी वे राष्ट्रपति जेफर्सन से अपने अंतिम दिनों तक जीवन संपर्क बनाए रहे। जीवन के अंतिम क्षणों में उनके वाक्य थे—जेफर्सन सुनिश्चित रूप से जीवित होंगे। हम साथ-

साथ जाएँगे और सचमुच उनका हमसफर ५ घंटे बाद मृत्यु को प्यारा हुआ।

२८ जुलाई १९०० में इटली के राजा अंबेर्टो प्रथम अपने परिसहायक जनरल एमीलिओ पोंजिओ वैग्लिया मिलान शहर से कुछ मील दूर स्थित मोंजा नामक कसबे में पहुँचे। अगले दिन वहाँ उन्हें खिलाड़ियों को पुरस्कार वितरण करना था। रात्रि के समय राजा अपने सहायक के साथ एक रेस्टोरेंट में भोजन करने गए। रेस्तराँ के मालिक का नाम भी वही था, जो राजा का था। वस्तुत: वे एक ही नाम और शकल सूरत में दो व्यक्ति अलग थे। दोनों का जन्म एक ही दिन एक ही समय में १४ मार्च १८४४ को एक ही कसबे में हुआ था और दोनों के नाम अंबेर्टो रखे गए थे। दोनों का विवाह २२ अप्रैल १८६८ के दिन मार्चेरिता नाम की दो अलग-अलग लड़कियों के साथ संपन्न हुआ। दोनों को एक-एक पुत्र हुआ, जिनका नाम विक्टोरियो रखा गया। जिस दिन राजा अंबेर्टो का राज्याभिषेक हुआ ठीक उसी दिन दूसरे द्वितीय अंबेर्टो ने अपना रेस्तराँ खोला।

जुलाई १९०० में जिस दिन अंबेर्टो मोंजा के उस रेस्तराँ में ठहरे थे उसी दिन एक हत्यारे ने गोली चला कर रेस्तराँ मालिक अंबेर्टो की हत्या कर दी। रेस्तराँ मालिक अपने मित्र के दाह-संस्कार में भाग लेने गए राजा अंबेर्टो भी एक अज्ञात हत्यारे की गोली का निशाना बन गए और वहीं उन्होंने दम तोड़ दिया। दोनों की शवयात्रा साथ-साथ निकाली गई।

१९७९ में रीडर डाइजेस्ट के जर्मन संस्करण 'दास बेस्टे' ने एक प्रतियोगिता आयोजित की। विषय था—दास बेस्टे के पाठकों द्वारा निजी अनुभवों से संबंधित सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ प्रेषित करना। पुरस्कार-वितरण का समय ६ दिसंबर को रखा गया।

संपादक के पास लगभग ७००० कहानियों का पुलिंदा एकत्र हो गया जिनमें से म्यूनिख के वायुयान चालक वाल्टर केल्नर की कहानी को सर्वश्रेष्ठ कहानी के रूप में चुना गया। वाल्टर की कहानी उनके अपने जीवन में घटित घटना से संबंधित थी। वाल्टर का जहाज-

सेसना-४२१, १०,००० फीट गहरे टाइरेनियम समुद्र में गिरकर दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। दैवयोग से वाल्टर रबर की एक डोंगी पर सवार होकर सुरक्षित समुद्र से निकल आए थे। पुरस्कार-वितरण के समय वाल्टर उस डोंगी को अपने साथ लेकर संपादक के कार्यालय पर उपस्थित हुए। उसी समय आस्ट्रिया के वाल्टर वेल्नर नाम के दूसरे पायलट ने उस पुरस्कार पर अपना अधिकार जाहिर किया। उसे भी उसी कहानी के लिए उक्त पत्रिका का पत्र मिला था। दोनों पायलट थे और एक ही नाम व नंबर के जहाज लेकर उड़ानें भरते थे। दोनों के वायुयान टाईरेनियन समुद्र में एक ही ऊँचाई से गिरकर एक ही स्थान पर डूबे थे। दोनों के चालकों को वायुयान की इंजन की खराबी के कारण विवश होकर नीचे सारडिनिआ के पास समुद्र में उतारने पड़े थे। दोनों ही भाग्यशाली थे और इस विचित्र संयोग के आधार पर दोनों को पुरस्कृत किया गया।

सन् १९७५ की एक घटना है। इन्स्टेबल, बेडफोर्ड इंगलैंड के मेलकिस नामक भवन में एक परिवार के सभी सदस्य इकट्ठे थे। अचानक छत को तोड़ता हुआ बरफ का एक बहुत बड़ा टुकड़ा नीचे फर्श पर आ गिरा। खोज करने पर मालूम हुआ कि सभी व्यक्तियों के मन में ठीक उसी समय तीव्र गरमी के कारण बरफ खाने की इच्छा हो रही थी।

१६ वर्षीय फ्रैंज रिचर आस्ट्रियन ट्रांसपोर्ट कोर में कर्मचारी था। प्रथम विश्वयुद्ध के समय प्रस्तुत विषाक्त वातावरण से उसे निमोनिया हो गया और अस्पताल की शरण लेनी पड़ी। उसी अस्पताल में फ्रैंच रिचर नाम का एक दूसरा रुग्ण व्यक्ति भी भरती था। उसकी उम्र १९ वर्ष ही थी और वह भी निमोनिया से पीड़ित था। वह नवयुवक भी ट्रांसपोर्ट कोर में ही कर्मचारी था। दोनों युवक साइलेशिया के रहने वाले थे।

४० वर्ष पूर्व ओहियो शहर में एक दंपती के यहाँ समान रूप, रंग के दो जुड़वाँ बच्चों ने जन्म लिया। बाल्यावस्था में ही दोनों अलग-अलग व्यक्तियों द्वारा गोद ले लिए गए। ३९ वर्ष बाद सन्

१९७९ में वे फिर से मिले। खोज करने पर पाया गया कि दोनों के नाम जेम्स थे और दोनों ने मेकेनिकल ड्राईंग और कारपेंट्री में डिप्लोमा ले रखा था। दोनों की पत्नियों का नाम मिंडा था और दोनों को एक-एक पुत्र था, जिनके नाम क्रमश: जेम्स एलन और जेम्स एलन था। दोनों ने अपनी पत्नियों को तलाक देकर दूसरा विवाह किया। संयोग से दोनों की नव विवाहिताओं का नाम बेट्टी था। दोनों के पास 'टाय' नामक एक-एक कुत्ता था। दोनों पीटर्सवर्ग, फ्लोरिडा में निवास कर रहे थे। यों दोनों के बीच कोई नियमित संपर्क या स्नेह संबंध या आदान-प्रदान का सिलसिला नहीं चला तो भी इस प्रकार के अद्भुत साम्य का घटनाक्रम घटित हुआ।

२० अप्रैल १९७८ के 'द वाशिंगटन पोस्ट' में एक ही नाम की दो महिलाओं की कहानी प्रकाशित हुई थी। दोनों का नाम वांडामेरी जान्स था। इनमें से एक महिला एडेल्फी, मेरीलैंड, प्रिंस जार्ज काउंटी की रहने वाली हैं और इस समय वाशिंगटन के यूनियन स्टेशन में बैगेज क्लर्क है। दूसरी महिला सूइटलैंड, मेरीलैंड प्रिंस जार्ज काउंटी की रहने वाली और वाशिंगटन के डी. सी. जनरल हास्पीटल में नर्स का काम कर रही है।

दोनों वांडामेरी का जन्म १५ जून १९५६ को वाशिंगटन शहर में हुआ था और दोनों ही इस शहर को छोड़कर प्रिंस जार्ज काउंटी चली गईं। दोनों के दो-दो बच्चे हैं जिनका जन्म एक ही अस्पताल में हुआ। दोनों महिलाओं के पास अपनी-अपनी फोर्ड कारें हैं, जिनका नंबर भी ११ की संख्या में अंतिम तीन अंकों को छोड़कर समान है।

अमेरिका के जिम विशप ने अमेरिकी राष्ट्रपतियों अब्राहम लिंकन और जॉन एफ. कैनेडी के जीवन का तुलनात्मक अध्ययन कर बड़ा ही रोचक निष्कर्ष निकाला। उनकी मान्यता है कि अब्राहम लिंकन ही जान एफ. केनेडी थे।

चालीस वर्ष की आयु में ही लिंकन को भी राष्ट्रपति बनने की इच्छा हुई और कैनेडी को भी। दोनों की इच्छा थी कि अमेरिका विश्व में शांति स्थापना के लिए प्रयत्न करे। लिंकन दक्षिण को बहुत चाहते

थे और कैनेडी भी। नीग्रो स्वतंत्रता के लिए लिंकन ने भी प्रयत्न किए पर दक्षिण इसके लिए तैयार नहीं हुआ, यही स्थिति कैनेडी की भी रही। लिंकन के चार बच्चे थे, दो मर गए थे, दो उनके साथ रहते थे। कैनेडी के चार पुत्र हुए, दो मर गए, दो जीवित रहे। लिंकन की पहली पत्नी फैशनेबुल थीं, कविता और पेंटिंग उन्हें पसंद थी। कैनेडी की पहली पत्नी भी ठीक वैसे ही स्वभाव की थीं। लिंकन की धार्मिक मान्यताएँ बहुत गहरी थीं, वे हमेशा बाइबिल पढ़ते रहते थे। कैनेडी भी धर्म पर अडिग विश्वास रखते थे और बाइबिल पढ़ते थे। दोनों ही लिबरल पार्टी से संबद्ध थे। खाद्य पदार्थों में लिंकन को भी 'स्पार्श' प्रिय था और कैनेडी को भी। लिंकन सन् १८६१ में राष्ट्रपति बने और कैनेडी १९६१ में। लिंकन की सुरक्षा के लिए जो सर्वाधिक चिंतित रहता था उसका नाम कैनेडी था और कैनेडी की सुरक्षा की सबसे अधिक चिंता करने वाले उसके प्राइवेट सेक्रेटरी का नाम लिंकन था। दोनों की मृत्यु शुक्रवार के दिन हुई। दोनों ही गोली के शिकार हुए। लिंकन का पद उनकी मृत्यु के उपरांत दक्षिणी उपराष्ट्रपति जॉनसन ने सँभाला और कैनेडी की मृत्यु के बाद भी दक्षिणी उपराष्ट्रपति लिंडन जानसन ने ही राष्ट्रपति पद सँभाला।

कभी-कभी ऐसे विलक्षण संयोग किन्हीं व्यक्तियों के जीवन से जुड़े रहते हैं, जिसमें किसी अंक या किसी दिन का विशेष महत्त्व होता है। जिनसे प्रतीत होता है कि उनका क्रम मनुष्य जीवन को प्रभावित करता है। कोई अंक किसी के लिए शुभ और किसी के लिए अशुभ सिद्ध होता है यद्यपि इसका कुछ कारण समझ में नहीं आता। इसी प्रकार घटनाक्रमों की एक जैसी पुनरावृत्ति में कई बार अंकों की अद्‌भुत पुनरावृत्ति पायी जाती है। यह पुनरावृत्ति कई बार ऐसी विलक्षण होती है, जिसे मात्र संयोग न कहकर कुछ रहस्यमय कारण होने की बात सोचनी पड़ती है।

किन्हीं व्यक्तियों के जीवन में कुछ अंकों का विशेष महत्त्व रहता है। प्रिंस बिस्मार्क के जीवन में ३ का अंक कुछ विलक्षण संयोग

लाता रहा। उनके तीन नाम थे—लाएन बर्ग, शोवासेनी और बिस्मार्क। उन्हें तीन उपाधियाँ मिलीं—प्रिंस, ड्यूक तथा काउंट। तीन कॉलेजों से उन्होंने शिक्षा प्राप्त की। वे तीन देशों में राजदूत रहे। वे तीन युद्धों में लड़ने गए। तीन बार उन पर घातक आक्रमण हुए। तीन बार उन्होंने त्यागपत्र दिया। तीन ही उनके पुत्र हुए।

साइप्रस के शासनाध्यक्ष मकोरिऑस के जीवन में १३ का अंक कुछ ऐसे ही संयोग लाता रहा। १३ अगस्त १९१३ को उनका जन्म हुआ। १३ वर्ष की आयु में चर्च में भरती हुए। १३ नवंबर १९४६ में उन्होंने प्रीस्ट की शिक्षा ली। १३ जून १९४८ में वे बिशप बने तथा राजगद्दी पर बैठे। १३ मार्च १९५१ में यूनान के राजा ने उनका अभिनंदन किया। १३ दिसंबर १९५९ को वे राष्ट्रपति चुने गए।

भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व. लालबहादुर शास्त्री के जीवन में मंगलवार का विशेष महत्त्व रहा। उनका जन्म मंगलवार के दिन हुआ। बचपन में एक बार वे गंगा में डूबते-डूबते बचे, वह दिन भी मंगलवार था। यू. पी. पार्लियामेंटरी बोर्ड के मंत्री, १९४७ में पुलिस एवं यातायात मंत्री, १९५१ में कांग्रेस के महासचिव, १९५२ में रेलमंत्री, १९५७ में परिवहन मंत्री आदि पद उन्होंने मंगलवार के दिन ही प्राप्त किए। यहाँ तक कि वे प्रधानमंत्री भी मंगलवार को ही बने तथा स्व. राधाकृष्णन ने उन्हें मंगलवार को ही 'भारत रत्न' की उपाधि से विभूषित किया। ताशकंद वार्ता भी उन्होंने मंगलवार को प्रारंभ की और अंत में उन्होंने अपना पार्थिव शरीर भी मंगलवार के दिन ही छोड़ा।

आयरलैंड के क्रुक हैवेन शहर में एक ही मकान में रहने वाले दो दंपतियों के एक ही दिन कुछ मिनटों के अंतर से दो पुत्र पैदा हुए। नाम रखा गया—एलेनर ग्रेडी तथा पैट्रिक।

दोनों बच्चे अलग-अलग खेलते किंतु एक दिन दोनों रोते-रोते घर पहुँचे तो उनके माता-पिता ने देखा कि दोनों के पैर में एक ही स्थान पर चोट लगी थी। दोनों बच्चे पढ़ रहे थे, तब कई बार ऐसा हुआ

कि दोनों को परीक्षा में समान अंक मिले। दोनों का विवाह एक साथ ही तय हुआ। शादी के बाद पहला बच्चा भी दोनों के एक ही दिन हुआ।

पैट्रिक और एलेनर ९६ वर्ष की आयु में एक ही दिन बीमार पड़े और साथ ही मृत्यु भी दोनों की एक ही समय में हुई। इन घटनाओं से आयरलैंड के शिक्षित व्यक्ति भी इस बात को मानने लगे कि कोई एक नियंता सृष्टि में अवश्य काम कर रहा है।

तारीखों का घटनाओं के साथ सचमुच ही बड़ा विचित्र संयोग बैठता है एवं सामान्य बुद्धि यह समझने में समर्थ नहीं होती कि आखिर ऐसा किस कारण होता है, उसके पीछे प्रकट या अप्रकट रहस्य क्या है?

ऐसी ही तारीखों के संयोग की एक घटना स्पेन की है। वार्सिलोना नगर में एक 'सिएट सेटिएंब्रे नामक व्यक्ति हुआ है, जिसका अर्थ स्पेनी भाषा में होता है—सात सितंबर। यह नाम उसे माता-पिता से नहीं मिला। लोगों के द्वारा थोपा गया। वह ७ सितंबर १७४९ को पैदा हुआ और ७ सितंबर १८०१ को मर गया। उसके बेटे का भी यही नाम था। वह ७ सितंबर १७७४ को पैदा हुआ और ७ सितंबर १८२६ को मरा। इतना ही नहीं, उसके पोते का भी यही नाम था और जन्म-मरण का दिन भी पूर्वजों की भाँति ही। पोता ७ सितंबर १८१४ को पैदा हुआ और ७ सितंबर १८६८ को दिवंगत हुआ। तीन पीढ़ियों तक एक ही नाम और एक ही जन्म-मरण का दिन, अभी तक उस देश में चर्चा का विषय है।

जापान पर भूकंपों की विपत्तियाँ अनके बार आई हैं पर छह भयानक संयोग ऐसे हैं, जो एक ही तारीख को घटित हुए और विनाश की दृष्टि से असाधारण रूप से भयानक माने गए। (१) १ सितंबर १८२७ (२) १ सितंबर १८५९ (३) १ सितंबर १८६७ (४) १ सितंबर १८८५ (५) १ सितंबर १८९४ (६) १ सितंबर १९२३। इसमें से छठे

ने सबसे अधिक विनाश किया। उससे टोकियो और योकोहामा शहर बुरी तरह बरबाद हुए और प्राय: १ लाख ४३ हजार व्यक्ति दबकर मर गए। घायलों की संख्या तो इससे भी कहीं अधिक थी।

विश्वविख्यात चित्रकार अल्मा-टाडमा के जीवन में '१७' की संख्या महत्त्वपूर्ण स्थान रखती थी। यह बात वे स्वयं स्वीकार करते हुए कहा करते थे—"जब मैं १७ वर्ष का था, तब १७ तारीख को अपनी प्रिय पत्नी से मिला। मेरे पहले मकान का नंबर १७ था, जब दूसरा मकान बनाया था वह भी १७ अगस्त से प्रारंभ हुआ और उस नूतन गृह में मेरा प्रवेश भी १७ नवंबर को ही हुआ। चित्रकारी के लिए सेंट जोंस वुड में जो कमरा लिया, वह भी १७ नंबर का ही निकला।"

लेखक ए.बी. फ्रेंच के जीवन की अधिकांश घटनाएँ ७ की संख्या के साथ ही घटित हुईं। उनका जन्म ७ वें महीने की ७ तारीख को हुआ था। ७ वर्ष तक कभी बीमार नहीं हुए। ७ कक्षा तक वे कभी फेल नहीं हुए। उनका विवाह भी ७वीं लड़की के साथ हुआ और संयोग से उस लड़की के लिए भी फ्रेंच ७वें ही लड़के थे।

डबलिन आयरलैंड के निवासी अंथोनी एस. क्लैन्सी ने प्रख्यात लेखक आर्थर कोएस्लर को १९७३ में एक पत्र लिखा। अपने जीवन में घटित होने वाले ७ अंकों को भाग्यशाली बतलाते हुए क्लैन्सी ने लिखा कि उनका जन्म वर्ष के सातवें महीने में महीने के सातवें दिन सप्ताह के सातवें दिन तथा शताब्दी के सातवें वर्ष में हुआ। वे अपने पिता की सातवीं संतान थे। उनके पिता के सात भाई थे, जिनमें से प्रत्येक के सात-सात पुत्र थे। अपनी २७वीं वर्षगाँठ पर वे एक घुड़दौड़ देखने गए, जहाँ उन्हें सातवें नंबर का रेस कार्ड मिला। उस सातवें घोड़े का नाम 'सेवन हैवन' था जिस पर क्लैन्सी ने सात शिलिंग रखे और वह सात पर ही समाप्त हुआ। इसका उल्लेख उन्होंने अपनी पुस्तक में किया है।

उत्तरी बर्टन यार्कशायर के डॉ. रूड के जीवन में १३ की संख्या दुर्भाग्य सूचक के रूप में रही। १३ वर्ष की अल्पायु में वे बीमार पड़े

१३ दिन तक घोर कष्ट सहते हुए १३ तारीख को हृदय की बीमारी के कारण उनकी मृत्यु हो गई। उनके परिवार में १३ सदस्य थे। मृत्यु के समय कुल १३ शिलिंग ही उनके फंड में बचे थे। अंतिम संस्कार के समय भी १३ सदस्य ही उपस्थित हुए। रूड का नाम फुवाह था जो कि बाइबिल के १३वें छंद में आता है। उनकी मृत्यु के समय मात्र १३ तार ही शोक संवेदना के रूप में आए।

इसके विपरीत डेनवर। कोलराडो के धनाढ्य उद्योगपति शेरमैन के लिए १३ की संख्या सौभाग्य सूचक थी। शेरमैन का जन्म १३ तारीख को हुआ। उनकी सगाई १३ तारीख को हुई और विवाह भी १३ जून सन् १९१३ को हुआ। पत्नी का जन्मदिन भी १३ तारीख का ही था। उनके विवाहोत्सव में कुल १३ सदस्य ही उपस्थित थे। १३ की संख्या उनके जीवन में सदैव लाभदायक रही।

फ्रांस के सिंहासन के साथ १४ की संख्या का महत्त्व संख्याओं के साथ जुड़ी विचित्रताओं को प्रकट करती है। फ्रांस के प्रथम सम्राट हेनरी १४ मई १०२९ को सिंहासन पर बैठे, जबकि वहाँ के आखिरी सम्राट का नाम भी हेनरी था। १४ मई १९१० को उनकी हत्या कर दी गई थी। जिस तारीख को एक को सिंहासन मिला उसी को दूसरी १४ मई को मृत्यु का उपहार । वहाँ के अन्य सभी राजाओं के लिए १४ संख्या का महत्त्व सदैव बना रहा। हेनरी द्वितीय ने १४ मई को ही फ्रांस का राज्य विस्तार किया। हेनरी तृतीय को १४ मई के दिन युद्ध के मोर्चे पर जाना पड़ा। हेनरी चतुर्थ ने आयवरी का युद्ध १४ मार्च १५९० को जीता। १४ दिसंबर १५९९ को सवाया के ड्यूक ने अपने आप को हेनरी को आत्मसमर्पण किया। १४ तारीख को ही लार्ड डफरिन ने लुई १३वें के रूप में बैपतिस्मा ग्रहण किया।

हेनरी चतुर्थ के पुत्र लुई १३वें की मृत्यु १४मई १६४३ को हुई। लुई १४वें १६४३ में (१+६+४+३=१४) सिंहासन पर बैठे और ७७ वर्ष ७+७=१४ की आयु में उनकी मृत्यु हुई। लुई १५वें ने कुल १४ वर्ष राज्य किया। इस प्रकार फ्रांस के सिंहासन पर १४ का महत्त्व सदैव बना रहा।

जर्मनी के शासक चार्ल्स चौथे ने अपने जीवन में चार की संख्या को अत्यधिक महत्त्व दिया। वह चार रंग की पोशाक को दिन में चार बार पहनते थे। चार-चार प्रकार का भोजन, चार मेजों पर दिन में चार बार करते थे, चार प्रकार की शराब पीते थे। उनके अंगरक्षक चार थे, बग्घी में चार पहिये और चार ही घोड़े जुतते थे। उनके चार महल थे, उनमें चार-चार दरवाजे और प्रत्येक महल में चार-चार कमरे, प्रत्येक में चार-चार ही खिड़कियाँ थीं, मृत्यु के दिन उनके समीप चार ही डॉक्टर उपस्थित थे। उन्होंने चार बार 'गुडबाय' कहा और ठीक चार बजकर चार मिनट पर इस संसार से विदा हो गए।

वस्तुतः जीवन क्रम किसी सरल गतिचक्र पर परिभ्रमण करता दीखता है, जन्म, बचपन, यौवन, जरा और मरण के सामान्य चक्र में सभी परिभ्रमण करते दीखते हैं। जागने, निपटने, खाने, काम करने, थककर सो जाने की दिनचर्या ही प्रायः सभी को बितानी पड़ती है। पेट और प्रजनन की समस्या सुलझाने में ही जिंदगी कट जाती है। अनुकूलता, प्रतिकूलता की कड़वी-मीठी अनुभूतियाँ भी दिन-रात की तरह आती और चली जाती हैं। लाभ-हानि के झूले में झूलते हुए हर्ष-विषाद की अभिव्यक्तियाँ प्रकट करते हुए लोग मौत के दिन सम्मान-अपमान सहन करते हुए व्यतीत करते हैं। इस ढर्रे से सभी परिचित हैं। इसलिए जन्मने, मरने और दिन गुजरने में कोई अनोखापन प्रतीत नहीं होता।

इतने पर भी यदि ध्यानपूर्वक देखा जाए तो उसके साथ कुछ विचित्र संयोग जुड़े हुए दीखते हैं और लगता है कि मनुष्य सर्वथा अपना स्वामी आप नहीं है। उसके पीछे कोई नियति तंत्र भी जुड़ा हुआ है जो ऐसे संयोग बिठा देते हैं, जिनमें व्यक्ति का अपना कुछ हाथ न होते हुए भी वह था अत्यंत आश्चर्यजनक। ऐसी घटनाएँ बताती हैं कि जीवन जितना सरल है, उतना ही विचित्र भी है। जिसका स्वरूप जितना साधारण है, उतना ही बहुत कुछ असाधारण भी, उसके साथ संयुक्त-संबद्ध है।

□

मानवी काया से फूटते प्राणाग्नि के शोले

मनुष्य स्रष्टा द्वारा विनिर्मित इस बहुरंगी संसार का एक घटक है। मानवी काया की संरचना स्वयं में अद्‌भुत है। वह अपने आप में एक सर्वांगीण प्रयोगशाला है; एक ऐसी प्रयोगशाला, जिसमें अनेकानेक बहुमूल्य एवं अनोखे यंत्र हैं। शरीर एक बहुत बड़े औद्योगिक परिसर के समान है, जिसमें अगणित विद्युतचालित कल-कारखाने लगे हैं। एक लाख वोल्ट बिजली की शक्ति से चलायमान यह शरीरयंत्र कभी-कभी ऐसे विलक्षण क्रिया-कलाप कर बैठता है, जो फिजियोलॉजी विज्ञान की परिधि में नहीं आते। जहाँ सामान्य विद्युतप्रवाह होना चाहिए था, वहाँ शरीर से प्राणाग्नि के शोले फूट उठते हैं। यह क्यों व कैसे होता है? इसका उत्तर विज्ञान के पास तो नहीं है। हाँ, अध्यात्म विज्ञान अपनी सूक्ष्मदृष्टि से इन पर पर्याप्त प्रकाश डालता एवं शरीर की अप्रतिम सामर्थ्य का बोध कराता है।

शरीर की प्राण विद्युत संबंधी इस विलक्षणता के मर्म को पदार्थ विज्ञान के उदाहरणों से समझा जा सकता है।

पदार्थ के नाभिक में प्रचंड शक्ति का भंडार आदिकाल से ही विद्यमान है। पर जब तक उसकी जानकारी नहीं थी, पदार्थसत्ता का मोटा उपयोग ही हो पाता था। विपुल शक्ति का स्रोत मौजूद होते हुए भी उससे कुछ विशेष लाभ उठाते लंबे समय तक नहीं बन पड़ा। कारण था उन नियमों से अपरिचित होना जो नाभिकीय शक्ति को अर्जित करने के कारण थे। जैसे ही वे सूत्र हाथ लगे कि परमाणु शक्ति को कैसे कुरेदा और कैसे उपयोग में लाया जाए तो युग ने एक महान करवट ली। मनुष्य जाति ने शक्ति के क्षेत्र में डाइनामाइट युग से परमाणु युग में छलाँग लगाई और अब परमाणु शक्ति के आधार पर बड़े-बड़े सपने देखे जा रहे हैं।

ठीक इसी प्रकार की अनेकानेक असंख्य संभावनाएँ प्रकृति के गर्भ और मानवी पिंड में मौजूद हैं जो अविज्ञात हैं। मनुष्य की काया स्वयं में एक विलक्षण संरचना है। शरीरशास्त्रियों को अभी सामान्य स्थूल जानकारी मिल सकी है। परमाणु नाभिक की तरह शरीर में भी ऊर्जा का प्रचंड भंडार भरा पड़ा है। उसे किस तरह जगाया और उपयोग में लाया जाए, विज्ञान इससे अभी अपरिचित है। प्रकृति कभी-कभी विलक्षण घटनाओं के सहारे इस तथ्य का बोध कराती है कि मानवी काया में इतनी प्रचंड विद्युत भरी पड़ी है कि यदि वह फूट पड़े तो शरीर को ही भस्मीभूत कर सकती है। ऐसी रहस्यमय घटनाओं के उदाहरण आएदिन मिलते रहते हैं।

काउडर स्पोर्ट, पेंसिलवानिया में डॉन ई. गास्नेल मीटर-रीडिंग का काम करता था। इसी क्षेत्र में एक वृद्ध फिजीशियन डॉ. जॉन इर्विन बेंटले रहते थे। वृद्ध होते हुए भी वे पूर्णतया स्वस्थ थे। ५ दिसंबर १९६६ को नित्य की तरह डॉन गास्नेल मीटर-रीडिंग के लिए निकला। डॉ. जॉन इर्विन बेंटले के दरवाजे पर उसने दस्तक दी। प्रत्युत्तर न मिलने पर उसने आवाज लगाई फिर भी कोई उत्तर नहीं मिला। वह मकान के ही एक पाइप के सहारे ऊपर के कमरे में पहुँचा। कारण यह था कि ऊपर कमरे की ओर से एक विचित्र प्रकार की जलने की गंध आ रही थी। कमरे में पहुँचकर देखा तो वहाँ से हलका नीला धुआँ उठ रहा था। कमरे की सतह पर राख का ढेर पड़ा हुआ था। अंदर कमरे का दृश्य अत्यंत वीभत्स था। डॉ. बेंटले का दाहिना पैर जूते सहित मात्र अधजली स्थिति में पड़ा था। अवशेष शरीर के सभी अंग जलकर राख हो गए थे। विशेषज्ञों ने भलीभाँति घटना का अध्ययन किया और अंततः स्वतः जलने की संज्ञा दी। ऐसा कोई सुराग नहीं मिला जो किसी अन्य प्रकार से आग लगने की पुष्टि कर सके। सबसे आश्चर्य की बात यह थी कि कमरे से निकलने वाली दुर्गंध मांस के जलने जैसी न होकर मीठी महक से युक्त थी।

इसी तरह की एक घटना जुलाई १९५१ के एक दिन प्रातः सेंट पीटर्स वर्ग फ्लोरिडा में घटी। 'मेरीरिजर' नामक एक अत्यंत हृष्ट-पुष्ट महिला अपनी कुरसी पर ही बैठे-बैठे जल गई। इस कायिक दहन की विशेषता यह थी कि भयंकर अग्नि शरीर से निकली, उसे जलाती रही पर मात्र एक मीटर के घेरे तक ही सीमित रही। मेरी का ८० किलो वजनी शरीर पूर्णतया भस्मीभूत होकर चार किलो राख में परिवर्तित हो गया। डॉ. बेंटले की भाँति उसका भी एक पैर अधजला उस घेरे में बच गया था। खोपड़ी सिकुड़कर संतरे के आकार में बदल गई थी।

अवशेषों की जाँच के लिए पेन्सिलावानिया स्कूल ऑफ मेडिसिन के फिजिकल एंथ्रोपोलाजी के प्रोफेसर डॉ. विल्टन क्रोगमैन के पास भेजा गया तो खोपड़ी की आकृति को देखकर, वे आश्चर्यचकित रह गए। वह एक ख्याति प्राप्त फारेंसिक वैज्ञानिक थे तथा वर्षों का अनुभव था। अब तक की घटनाओं में ऐसी कोई घटना उनके पास नहीं आई थी कि जलने के उपरांत खोपड़ी सिकुड़कर छोटी हो गई हो। क्योंकि विज्ञान के नियमानुसार जलने के बाद खोपड़ी को या तो फूल जाना चाहिए अथवा टुकड़े-टुकड़े हो जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि इस विचित्र अग्निकांड में खोपड़ी का सिकुड़कर छोटा हो जाना निस्संदेह एक आश्चर्यजनक बात है। अपने अनुभव के आधार पर उन्होंने यह बताया कि बारह घंटे तक लगातार तीन हजार डिगरी फारेनहाइट तापक्रम पर रहने पर भी शरीर की संपूर्ण हड्डियाँ भस्मसात हो गई हों ऐसा अब तक देखा-सुना नहीं गया था। पर यह घटना अपने में सबसे विलक्षण है, जिसकी यथार्थता पर बिलकुल ही संदेह करने की गुंजाइश नहीं है।

पेरिस १८५१ में घटी एक घटना और भी अधिक आश्चर्यजनक है। 'ग्रेट मिस्ट्रीज' पुस्तक जिसके लेखक हैं—इलेनार वान जांड्ट तथा राय स्टेमन। पुस्तक में वर्णित घटना के अनुसार एक व्यक्ति ने अपने एक मित्र से शर्त लगाई कि वह जलती मोमबत्ती को निगल सकता है। सत्यता को परखने के लिए दूसरे मित्र ने उसकी ओर तुरंत

एक जलती मोमबत्ती बढ़ा दी। जैसे ही उस व्यक्ति ने निगलने के लिए मोमबत्ती को अपने मुँह की ओर बढ़ाया वह जोर से ही चिल्लाया। मोमबत्ती की लौ से उसके होठों पर नीली लौ दीखने लगी। आधे घंटे के भीतर ही पूरे शरीर में आग फैल गई और कुछ ही समय में उसने शरीर के अंगों, मांसपेशियों, त्वचा एवं हड्डियों को जलाकर राख कर दिया।

नेशविल यूनीवर्सिटी के गणित विभाग के प्रो. जेम्स हैमिल्टन ने आपबीती एक घटना का उल्लेख किया है। सन् १८३५ में ये उक्त विश्वविद्यालय में प्रोफेसर थे। अपनी एक पुस्तक में लिखते हैं कि एकाएक मुझे अपने बाएँ पैर के निचले हिस्से में तीव्र जलन महसूस हुई। झुककर उस भाग को देखा तो स्तंभित रह गया। जलन वाले भाग से लगभग दस सेमी. लंबी लौ निकल रही थी। यह लौ ठीक उसी प्रकार की थी जैसी कि लाइटर आदि जलाने से निकलती है। पर कुछ ही क्षणों बाद वह अपने आप बुझ गई। आग किन कारणों से लगी और बुझ गई। यह रहस्य आज भी हमारे लिए अविज्ञात है।

फ्रांसिस हिचिंग की एक पुस्तक 'दी वर्ल्ड एटलस ऑफ मिस्टरीज' में सन् १९३८ की एक अमेरिकी घटना का उल्लेख है कि गरमी के मौसम में एक दिन नॉरफाक ब्रॉड्स नामक स्थान पर नौका विहार कर रही एक महिला के शरीर से अग्नि की लपटें फूट पड़ीं। साथ में उसके पति और बच्चे भी थे। पानी से आग बुझाने का प्रयास किया गया। पर उस भभकती अग्नि पर काबू नहीं पाया जा सका। वह मेरी कारपेंटर के शरीर को भस्मीभूत करके अपने आप बुझ गई।

'स्पांटेनियस ह्यूमन कंबशन' की घटनाओं की शृंखला में बिहार के भागलपुर जिले की पाँच वर्ष पूर्व सूर्यग्रहण के अवसर पर घटी एक घटना का उल्लेख यहाँ करना समीचीन होगा। एक युवक अपने घर के आँगन में मौन बैठा था। बारंबार घर वालों के पूछने पर उसने बताया कि आज उसके जीवन का अंतिम दिन है। घर के सदस्यों ने उसके कथन की ओर ध्यान नहीं दिया। थोड़ी देर तक वह सूर्य की

ओर मुँह किए ताकता रहा। अचानक उसके शरीर से अग्नि की नीली ज्वालाएँ फूटने लगीं। घर के सदस्यों ने शरीर पर पानी फैंका तथा कंबल से ढँक दिया पर शरीर उस तीव्र ज्वाला में बुरी तरह झुलस गया। आग तो बुझ गई पर उसे बचाया न जा सका। अस्पताल में पहुँचने पर उसने दम तोड़ दिया।

शरीरशास्त्रियों का मत है कि शरीर की कोशिकाओं का तापक्रम अकस्मात इतना अधिक बढ़ जाए, ऐसा जीव विज्ञान के अनुसार संभव है। आग का स्वत: उत्पन्न हो जाना भी एक अविश्वसनीय घटना है। पर उपर्युक्त प्रामाणिक घटनाएँ इस बात की साक्षी हैं कि मानवी काया में ऊर्जा का प्रचंड सागर भरा पड़ा है। शरीर विज्ञान के अब तक ज्ञात नियमों के आधार पर शरीर में अचानक आग लग जाने तथा उसके भस्मसात हो जाने के कारणों की अब तक व्याख्या-विवेचना नहीं हो सकी है। वे सूत्र भी पकड़ में नहीं आ सके, जिनके कारण शरीर का तापक्रम तीन हजार डिग्री फारेनहाइट तक अचानक बढ़ गया। पर मात्र कारण न समझ में आने से तथ्यों को झुठलाया नहीं जा सकता, घटनाओं की विवेचना वैज्ञानिक आधार पर कर सकने के अभाव में उनकी सत्यता को झुठला दिया जाए, यह संभव नहीं है।

प्रश्नोपनिषद् में एक मंत्र आता है—'**प्राणाग्नय एवैतस्मिन्पुरे जाग्रति**' अर्थात मनुष्य काया रूप पुरी में पाँच प्रकार की प्राणाग्नियाँ जागती रहती हैं।

यह लोहा गलाने वाले विशालकाय कारखाने में लगी हुई प्रचंड अग्नि वाली फरनेसों की तरह है, जिनमें प्राणाग्नि जलती ही नहीं वरन बिजली को विपुल मात्रा में भी उत्पन्न करती है। कहा जा चुका है कि शरीर में एक लाख वोल्ट प्रति सेंटीमीटर का दबाव होता है। यह प्राण विद्युत झटका मारने वाली या प्राण लेने वाली नहीं है। उसकी प्रकृति दूसरे प्रकार की है फिर भी वह है बिजली ही। नियंता ने इस विद्युत को चक्रों, ग्रंथियों, उपत्यिकाओं, जीवकोश ऊतकों में कैद कर रखा है,

ताकि वह अनावश्यक रूप से बाहर निकलने और बरबाद न होने लगे। कभी इन्सुलेशन हट जाए या हटा लिया जाए तो ही चौंक होने पर वह व्यक्तियों एवं पदार्थों को अनावश्यक रूप से प्रभावित करने लगती है।

फ्रांस की स्ट्रस वर्ग यूनीवर्सिटी के प्रो. फ्रेड ब्लेज ने मानवी विद्युत संबंधी शोध प्रबन्ध 'दी बायोलाजिकल कंडीसंस क्रिएटेड बाय दि इलेक्ट्रिकल प्रोपर्टीज ऑफ दि एटमासफियर' ग्रंथ में विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। इसमें वे अपना निष्कर्ष व्यक्त करते हुए मनुष्य शरीर को चलता-फिरता बिजलीघर बताते हैं। साथ ही यह भी कहते हैं कि यदि इस उत्पादन को अन्य कार्यों में लगाया जा सके तो उसे भी किसी सशक्त हाइडल पावर स्टेशन की तरह बड़े टर्बाइन्स की तरह महत्त्वपूर्ण भौतिक प्रयोजनों में प्रयुक्त किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त भीतरी प्रयोजनों में उसे अति मानवी सामर्थ्यों को जगाकर मनुष्य को दिव्य पुरुष बनाने के लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता है।

मनःशास्त्री विक्टर ई. क्रोमर मानवी विद्युत की चर्चा करते हुए कहते हैं—यह ब्रह्मांडीय ऊर्जा के साथ संबंध जोड़ने वाली ऐसी चाबी है जिनका सही उपयोग करने पर भौतिक जगत में भारी उथल-पुथल उत्पन्न की जा सकती है और अपनी निजी क्षमता में विशिष्ट स्तर की अभिवृद्धि भारी मात्रा में की जा सकती है।

काया में है आग ही आग

शरीर में क्रियाशील यही विद्युत ऊर्जा कभी-कभी व्यतिरेक होने पर गंभीर संकट पैदा कर देती है। जैसा कि ऊपर वर्णित किए गए घटनाक्रमों में बताया गया है, कभी-कभी जैव विद्युत भौतिक बिजली की तरह कार्य कर मानव शरीर को एक जेनरेटर-डायनेमो के रूप में बदल देती है। ऐसे घटनाक्रम इतनी विलक्षण एवं विराट विद्युत ऊर्जा की एक छोटी सी झाँकी भर देते हैं।

आयरलैंड की एक युवती जे. स्मिथ के शरीर को छूते ही बिजली के नंगे तारों की भाँति तेज झटका लगता था। जब तक वह

जिंदा रही, घर के सदस्यों के लिए एक समस्या बनी हुई थी। डॉ. एफ. क्राफ्ट ने उसके शरीर का परीक्षण किया तथा यह बताया कि उक्त युवती की काया से निरंतर भौतिक बिजली की भाँति विद्युत प्रवाहित होती रहती है।

प्रसिद्ध 'टाइम्स' पत्रिका में ओंटोरियो (कनाडा) की कैरोलिन क्लेयर नामक एक महिला का विस्तृत वृत्तांत छपा था, जिसमें उल्लेख था कि यह महिला डेढ़ वर्ष तक बीमार पड़ी रही, पर जब स्थिति सुधरी तो उसमें एक नया परिवर्तन यह हुआ कि उसके शरीर से विद्युतधारा बहने लगी। यदि वह किसी धातु से बनी वस्तु को छूती, उसी से चिपक जाती। छुड़ाने में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता।

फ्रांस से प्रकाशित होने वाले 'मेडिकल टाइम्स एंड गजट' में एक ऐसे ही लड़के का विवरण छपा था, जिसके शरीर से सतत विद्युत धाराएँ निकलती थीं। लियोन्स नामक व्यक्ति के घर जन्मा शिशु जब सात माह का हुआ तभी से उसको छूने से झटके लगते थे। माँ जब उसे दूध पिलाने के लिए अपनी छाती से चिपकाती तो उसे तेज झटका लगता था। कितनी बार वे बेहोश हो गईं। बाद में उन्होंने बच्चे को अपना दूध पिलाना ही बंद कर दिया। उसके लिए बाहरी दूध की व्यवस्था बनानी पड़ी। माँ-बाप के प्यार से वंचित यह दुर्भाग्यशाली लड़का कमरे के एक कोने में पड़ा रहता। भयवश उसे कोई उठाता नहीं था। दस माह तक यह बालक किसी तरह जीवित रहा, पर मरते समय उसके शरीर से नीले वर्ण का प्रकाश निकलते देखा गया, जिसका फोटो खींचा गया था।

कुमारी जेनी मार्गन को चलते-फिरते पावर हाउस के रूप में ख्याति मिली। १३ वर्ष की आयु के बाद उसके शरीर से विद्युत शक्ति प्रचंड रूप से उभरकर प्रकट हुई। एक वैज्ञानिक ने प्रयोग करने के लिए जेनी को छुआ तो इतना तीव्र झटका लगा कि वे घंटों बेहोश रहे। एक लड़के ने प्रेमवश उसका हाथ पकड़ा तो दूर जा गिरा। स्नेहवश

जेनी ने एक बिल्ली को उठाकर अपने हृदय से लगा लिया पर बिल्ली के लिए जेनी का प्रेम अत्यंत महँगा पड़ा। वह न केवल मूर्च्छित हो गई बल्कि कुछ ही समय बाद चल बसी। जेनी अपने हाथ के स्पर्श से सौ वाट का बल्ब जला देती थी।

आस्ट्रेलिया के एक बाईस वर्षीय युवक एलन हिलडिच को उपचार के लिए न्यूयॉर्क लाया गया। उसका शरीर विद्युत बैटरी की भाँति काम करता था। छोटे बल्ब उसके शरीर से स्पर्श कराके जलाए गए। पर उसके शरीर में विद्युत-प्रवाह पूरे दिन एक समान नहीं रहता, अपितु सूर्य के ताप की भाँति घटता-बढ़ता रहता था। जब आवेश कम होता तो बेचैनी और थकान महसूस करता। वह प्राय: अधिक फॉस्फोरस युक्त खाद्य-पदार्थों को खाना पसंद करता था।

शरीर विद्युत का असंतुलन अनेकों विग्रह खड़े कर सकता है। सत्रहवीं सदी में ऐसेक्स की एक वृद्धा की प्राणविद्युत सहसा धधक उठी और वह अपनी झोंपड़ी में झुलसकर जल मरी। 'डेली ग्राफ' लंदन ने एक बार एक ट्रक ड्राइवर के ट्रक के भीतर ही अपनी सीट पर जल जाने की खबर छापी थी। इसी प्रकार 'रेनाल्ड न्यूज' ने पश्चिमी लंदन की एक खबर छापी कि एक व्यक्ति वहाँ सड़क से जा रहा था, तभी सहसा उसके भीतर से लपट निकली और वह वहीं झुलसकर सिमट गया।

ओहियो की एक फैक्टरी का मालिक परेशान था। उसके यहाँ आठ बार आग लग चुकी थी। इस अग्निकांड का कारण ज्ञात नहीं हो पा रहा था। आखिर उसने वैज्ञानिक जासूसी का व्यवसाय करने वाले ब्रुकलिन के प्राध्यापक रॉबिन बीच से मदद माँगी। प्रोफेसर बीच फैक्टरी पहुँचे। सभी कर्मचारियों को एक स्थान पर एकत्र किया गया। इलेक्ट्रोड और वोल्टमीटर से जुड़ी एक धातु पट्टिका पर इनमें से हर एक को एक-एक कर चलाया गया। सभी उस पर चलकर जाते रहे। वोल्टमीटर की सुई औसत बिंदुओं के बीच डोलती रही। तभी एक

महिला कर्मचारी का क्रम आया। उसने जैसे ही धातु पट्टिका पर पाँव रखा, वोल्टमीटर की संकेतक सुई उच्च बिंदु पर जा टिकी। आग का कारण समझ में आ गया। इस महिला की भीतरी विद्युत शक्ति की अधिकता ही इसका कारण थी। उसका विभाग बदल दिया गया और ऐसे सेक्शन में भेज दिया गया, जहाँ आग पकड़ने वाली वस्तुएँ नहीं थीं। फैक्टरी में आग लगने का सिलसिला समाप्त हो गया।

१३ जनवरी १९४३ को ५२वर्षीय एलन एम. स्माल का जला हुआ शरीर डियर इस्ले लेन स्थित उनके मकान से बरामद किया गया। शरीर के नीचे बिछा हुआ कार्पेट झुलस गया था। इसके अतिरिक्त कमरे की किसी भी वस्तु पर आग का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। सन् १९०४ के अंत में इंगलैंड के लिंकन शायर प्रांत में स्थित बिन ब्रूक पुरोहिताश्रम में दिसंबर महीने में एक अजीबो गरीब घटना घटित हुई। पुरोहिताश्रम के इस विशाल भवन में अचानक तीन बार आग लगी, जिससे भवन का बहुत सा हिस्सा जलकर नष्ट हो गया। आग लगने के कारणों का पता अज्ञात ही बना रहा। एक महीने बाद बिन ब्रूक का एक किसान अपने रसोईघर में गया, जहाँ नौकरानी की लड़की झाड़ू लगा रही थी। उसके पीठ से लंबी-लंबी लपटें निकल रही थीं। किसान ने आवाज लगाई और तुरंत ही उस लड़की पर झपट पड़ा। आग निकलने वाले स्थान को हाथ से ढक दिया और आग बुझ गई। परंतु तब तक लड़की बुरी तरह से जल चुकी थी।

सन् १८४७ में फ्रांस में एक ७१वर्षीय बूढ़े की मृत्यु स्वतः प्रवर्तित अग्नि में जल जाने के कारण हुई। कोर्ट ने इसे हत्या का मामला मानकर मृतक के पुत्र और जमाई को गिरफ्तार कर लिया। दोनों पर वृद्ध को मार डालने और जला देने का संगीन अपराध थोपा गया।

लड़के और जमाई का कहना था कि उसके पिता रात्रि के समय अपने बिस्तर पर सो रहे थे। अचानक उनका शरीर अग्नि की सफेद

लपटों से घिर गया और चंद मिनटों में ही राख के ढेर में परिणत हो गया। हाथ-पैरों के निचले हिस्से को छोड़कर शेष कुछ नहीं बचा। अवशिष्ट राख भी बहुत थोड़ी थी। संपूर्ण कमरा गहरे धुएँ से भर गया था।

लड़कों के इस कथन की पुष्टि के लिए कोर्ट ने डॉ. मैसन के एक दलीय आयोग को नियुक्त किया। डॉ. मैसन ने छान-बीन करने पर पाया कि लड़के और जमाई का कथन सत्य है। कोर्ट ने स्वतः प्रवर्तित अग्निकांड मानकर दोनों अभियुक्तों को बरी कर दिया।

१९ फरवरी १८८८ को रविवार के दिन कोलचेस्टर, इंगलैंड में एक बूढ़ा सिपाही शराब पीकर सूखी घास के गट्ठरों पर सोने के लिए चढ़ गया। लेटते ही उसके शरीर के चारों तरफ उठती ज्वाला की लपटों ने शरीर को भस्मीभूत बना दिया। आश्चर्य यह था कि सूखी घास का एक तिनका भी नहीं जला। इंगलैंड में साउथैंपटन शहर के पास बुटलाक्स हीथ गाँव में श्रीमान जॉन किले नामक दंपती निवास कर रहे थे। २६ फरवरी १९०५ को सुबह जॉन के मकान से खड़खड़ाहट की आवाज सुनकर पड़ोसियों ने उनके मकान के अंदर प्रविष्ट किया। अंदर आग की लपटें फैली हुई थीं। मि. किले फर्श पर पड़े राख के ढेर में परिणत हो गए थे। श्रीमती किले उसी कमरे में कुरसी पर बैठी बुरी तरह जलकर कोयले में बदल गई थीं। परंतु जिस कुरसी पर श्रीमती किले बैठी थीं उस पर आँच तक नहीं लगी थी। थोड़ी दूर फर्श पर तेल का लैंप लुढ़का पड़ा था जिसे देखकर पुलिस को आग लगने के कारणों का पता लगाने के लिए कहा गया। लैंप से आग लगने का अर्थ था कमरे के फर्नीचर, कपड़े आदि सभी जल जाने चाहिए थे, किंतु ऐसा नहीं हुआ था। अतः दंपती को 'एक्सीडेंटल डेथ' का प्रकरण मानकर जाँच-पड़ताल को वहीं समाप्त कर दिया गया।

सन् १९३२ में जनवरी के ठंढक के दिनों में नार्थ कैरोलिना के ब्लैडेनबोरो शहर में निवास करने वाली महिला श्रीमती चार्ल्स

विलिंमक्सन के रुई के कपड़े में अचानक आग धधकने लगी। उनके आस-पास कहीं कोई आग नहीं थी और न ही उनका ड्रेस किसी ज्वलनशील पदार्थ के संपर्क में ही था। उनके पति और लड़की ने जलते हुए कपड़ों को उतारकर उनकी प्राण-रक्षा की। इस तरह की घटना उनके साथ तीन बार घट चुकी थी। इसके बाद श्रीमान विलियम्सन का एक जोड़ी पेंट एक अलमारी में टंगा था, उसमें भी आग लग गई और जलकर भस्म हो गया। इसके बाद बिस्तर और परदे में आग लग गई। कमरे के बहुत से सामान नीली लौ में जलते देखे गए परंतु उनके समीप पड़ी किसी अन्य वस्तु को आग की लपटों ने छुआ तक नहीं। इस ज्वाला में न तो कोई गंध थी और न ही किसी प्रकार का धुआँ था। जिस वस्तु को आग लगी, वह पूर्णतया भस्मीभूत हो गई।

विभिन्न हस्तियाँ-आर्सेन एक्सपर्ट, पुलिस दस्ते, गैस और विद्युत कंपनी के विशेषज्ञ सभी बुलाए गए। परंतु आग लगने का कारण रहस्यमय ही बना रहा। चार दिनों तक यह अग्निकांड चलता रहा और पाँचवें दिन अचानक अपने आप समाप्त हो गया। अदृश्य हाथों द्वारा संचालित इस अग्निकांड का उत्तर किसी के पास नहीं था।

सन् १९०७ में भारतवर्ष के दीनाजपुर जिले के मनेर गाँव से एक जली हुई महिला का शव ले जाते हुए दो व्यक्तियों को दो पुलिस वालों ने पकड़ लिया। महिला का शव जिला मजिस्ट्रेट के सामने प्रस्तुत किया गया। कपड़े के अंदर शरीर से तब भी लपटें निकल रही थीं। महिला के कमरे का निरीक्षण किया गया। वहाँ बाहरी आग लगने के कोई चिह्न नहीं मिले।

शरीर से विद्युत भौतिक बिजली की तरह क्यों प्रवाहित होती है, इस संबंध में अनेक स्थानों पर खोज-बीन हुई तथा महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष निकले हैं। कोलोराडो के डॉ. डब्ल्यू.पी. जेन्स और उनके मित्र डॉ. नार्मलॉग ने विस्तृत खोज के बाद बताया कि मनुष्य शरीर की प्रत्येक कोशिका एक छोटी किंतु सजीव विद्युतघर है। कोशिका के

नाभिक में विद्युत की प्रचंड मात्रा भरी पड़ी है। किसी अविज्ञात व्यतिरेक के कारण सन्निहित कोशिकाओं की विद्युतधारा फूटकर बाहर निकलने लगती है। 'सोसाइटी ऑफ फिजीकल रिसर्च' की रिपोर्ट है कि शरीर की कोशाओं के नाभिकों के आवरण ढीले पड़ने के कारण बिजली उसे चीरती हुई बाहर प्रवाहित होने लगती है। शरीर विद्युत पर शोध करने वाले डॉ. ब्राउन का मत है कि मनुष्य शरीर की प्रत्येक कोशिका में विद्युत भंडार भरा पड़ा है। उनके अनुसार शारीरिक एवं मानसिक गतिविधियों के संचालन के लिए जितनी बिजली खरच होती है उससे एक बड़ी कपड़ा मिल चल सकती है। छोटे बच्चे के शरीर में संव्याप्त विद्युत शक्ति से रेल इंजन को चलाना संभव है।

शरीर विद्युत का असंतुलन कभी-कभी भयंकर विग्रह खड़ा करता देखा गया है तथा जीवन-मरण जैसे संकट प्रस्तुत कर देता है। फ्लोरिडा की सड़क पर जाते समय एक व्यक्ति के शरीर से अचानक आग की नीली लपटें निकलने लगीं। उसके साथ चलने वालों में से एक ने बालटी भर पानी डाल दिया तो आग कुछ क्षणों के लिए थम गई पर थोड़े ही देर बाद पुन: भभक उठी और देखते ही देखते कुछ ही मिनटों में वह व्यक्ति राख के ढेर में परिवर्तित हो गया। एक स्थानीय मेडिकल जनरल में छपी इस घटना पर आश्चर्य व्यक्त करते हुए फ्लोरिडा के वैज्ञानिकों ने कहा कि शरीर में नब्बे प्रतिशत जल की मात्रा विद्यमान होते हुए भी अपनी ही शरीराग्नि द्वारा कुछ ही क्षणों में जलकर मरना विज्ञान जगत के लिए एक अनोखी घटना है, जो यह बताती है कि शरीरशास्त्रियों को शरीर के विषय में जितना ज्ञान है उसकी तुलना में कई गुना अधिक अभी रहस्यमय है। ७ दिसंबर १९५६ को होनोलूलू द्वीप में एक ऐसी ही घटना घटी। कॉमेट नामक महिला दूसरे पड़ोसियों के यहाँ काम करके अपना गुजारा करती थी। एक दिन काम पर नहीं पहुँचने पर पड़ोसी एक महिला खोज-बीन करने पहुँची। घर जाकर जो दृश्य देखा उसे देखकर वह अवाक रह

गई। कॉमेट के शरीर से तेज नीली लपटें निकल रहीं थीं। शरीर सूखी लकड़ी की भाँति जल रहा था। जितनी देर में आग बुझाने का उपक्रम बनाया गया, कॉमेट का शरीर जलकर राख में परिवर्तित हो चुका था।

सेनफ्रांसिस्को में ३१ जनवरी १९५९ को लैगूना होम नामक स्थान पर जहाँ वृद्धों की देख-रेख का काम एक सरकारी संस्था करती है, कार्यकर्त्ताओं द्वारा शाम को दूध वितरित किया जा रहा था। अचानक लाइन में दूध के लिए लगे वृद्ध जैक लार्चर के शरीर से अग्नि की ज्वालाएँ निकलने लगीं। बचाव के लिए ऊपर कंबल डाला गया पर कुछ ही सेकंडों में वह भस्मीभूत हो गया। अग्नि बुझाने के अन्यान्य प्रयास भी असफल सिद्ध हुए। मात्र पाँच मिनट में ही जैक लार्चर का शरीर राख की ढेरी में बदल चुका था।

चेम्स फोर्ड, इंगलैंड की बात है। २० सितंबर १९३८ को एक आलीशान होटल में मध्यरात्रि को आर्केस्ट्रा की मधुर ध्वनि गूँज रही थी कि तभी नर्तकी के शरीर से तेज नीली लौ फूट पड़ी। भयवश कुछ लोग एक किनारे खड़े हो गए और कुछ सहायता के लिए पानी आदि लाने दौड़े। इतने में अग्नि ने लपटों का रूप ले लिया और कुछ ही क्षणों में नर्तकी के शरीर के स्थान पर धधकता अग्निपिंड दिखाई पड़ने लगा। थोड़ी ही देर में वह महिला राख में बदल गई। '**भस्मीभूतं देहेशरीरम्**' की उक्ति सही तो है पर यह कैसी प्रकृति की व्यवस्था है, जिसमें शरीर की स्वयं की ऊर्जा से कोई व्यक्ति देखते-देखते ऐसे भस्म में बदल जाता है जैसा कि बिजली के कृत्रिम शवदाह-गृहों में मृत व्यक्तियों का हो जाता है। ये घटनाएँ मानव शरीर को विद्युतपुंज तो सिद्ध करती ही हैं, अंतः में सन्निहित उस प्रचंड प्राणशक्ति का भी परिचय देती हैं जिसके व्यतिरेक से गंभीर संकट आ खड़े होते हैं। प्राणाग्नि के अनायास ही विचित्र रूप में प्रकट हो उठने के ऐसे अगणित प्रसंगों से 'एनसाइक्लोपीडिया आफ मीस्ट्रीज' के पृष्ठ भरे पड़े हैं। कई बार इससे वह शरीर जलने लगता है, जिसमें से वह प्रकट

होती है। कई बार तो वह समीपवर्ती वस्तुओं को भी जला देती है किंतु कई बार ऐसा भी देखने में आया कि जिस शरीर में से आग प्रकट हुई, मात्र वही जला और पहने हुए कपड़े तथा सटे हुए सामान तक को कोई क्षति न पहुँची। इस प्रकार के विवरणों में कुछ पंजीकृत उल्लेख इस प्रकार हैं—

इटली के प्रख्यात संत पादरी डॉन जिओ मारिया बर्थोली के शरीर से उपासना के समय एक दिन अचानक आग की लपटें निकलने लगीं। इस अग्निपरीक्षा से संत डॉन चार दिनों तक जूझते रहे और अचेतावस्था में हो गए। इस घटना के समय इटली के मूर्द्धन्य शल्य चिकित्सक डॉ. बाटाग्लिया भी उस स्थान पर परीक्षण हेतु आए थे जहाँ संत अग्निपरीक्षा से जूझ रहे थे। इस विवरण को फ्लोरेन्स की एक पत्रिका ने अक्टूबर १८०६ में प्रकाशित किया था।

संत डॉन देश का परिभ्रमण करते हुए अपने बहनोई के घर पहुँचे और उनसे अपने कमरे को दिखाने के लिए आग्रह किया। अपने गले में एक रूमाल डाले और एक शर्ट पहने संत अकेले ही कमरे में प्रार्थना करने लगे। कुछ क्षणों बाद उस कमरे से चीखने-चिल्लाने की आवाज आने लगी। घर के सभी लोग दौड़कर संत के कमरे में पहुँचे। संत डॉन के शरीर से हलकी लपटें निकल रही थीं। धीरे-धीरे अग्नि शांत हो गई। चिकित्सा-उपचार के लिए डॉ. बाटाग्लिया को बुलाया गया। उन्होंने देखा कि संत के दाहिने हाथ की त्वचा हड्डियों से अलग होकर लटक गई थी। दाहिना हाथ बुरी तरह झुलस गया था। कंधे से लेकर जंघे तक के हिस्से की त्वचा हड्डियों से अलग हो गई थी। विशेष चिकित्सा उपचार के बाद भी पादरी को बचाया नहीं जा सका। चार दिन बाद उनकी मृत्यु हो गई पर अंत तक उन्हें कष्ट नहीं हुआ।

सेसना, इटली की काउंटेस डि बैंडी नामक ६२वर्षीय महिला ४ अप्रैल १७९१ को अपने कमरे में मृतक पाई गई। शाम को वह

अपनी नौकरानी से देर रात्रि तक वार्तालाप करती रही और प्रार्थना करके सो गई। सुबह समय पर मालकिन को जगे हुए न पाकर नौकरानी ने खिड़की से झाँककर देखा तो देखकर हैरान रह गई। कमरे में बिस्तर से चार फुट की दूरी पर घुटने के नीचे पैर का हिस्सा, झुलसी हुई उँगलियों के टुकड़े और सिर का आधा भाग एवं इसके अतिरिक्त राख का ढेर देखकर नौकरानी हतप्रभ रह गई।

एकत्रित लोगों ने दरवाजे को तोड़ा और कमरे के अंदर प्रविष्ट हुए। कमरे से एक विशेष प्रकार की गंध निकल रही थी। राख को हाथ से छूने पर चिकनी, बदबूदार एवं नम प्रतीत हुई। कमरे के सभी बरतनों, कपड़ों, फर्नीचर तथा दीवार पर इस राख की हलकी सी परत देखने को मिली।

निरीक्षण करने पर पाया गया कि काउंटेस दि बैंडी बिस्तर से उठकर जैसे ही कुछ दूर चली होंगी वैसे ही उनके शरीर की प्राणाग्नि ने दावानल का रूप धारण कर लिया होगा और उसे भस्मीभूत बना दिया। सभी कमरों में विचित्र बदबू फैल रही थी। कमरे में रखे एक बरतन में रखे रोटियों के कुछ टुकड़े पड़े थे जिन्हें कुत्तों को खाने के लिए दिया गया परंतु किसी कुत्ते ने मुँह तक न लगाया। उसे गड्ढे में बंद कर दफना दिया गया।

सन् १६७३ में पेरिस में स्वत: जलने वाली एक गरीब महिला का वर्णन करते हुए थामस बार्थोलिन ने लिखा था कि यह महिला 'स्ट्रांग स्प्रिट' की अतिशय आदी थी। अपनी इस आदत के कारण इस महिला ने तीन वर्षों तक बिना किसी भोजन के ही दिन गुजारे। एक शाम को वह महिला पुआल से बनी तृण शय्या पर सो रही थी। रात्रि में अचानक उसके शरीर से आग की लपटें निकलने लगीं और कुछ ही क्षणों में वह बिस्तर सहित जलकर राख हो गई। सुबह देखने पर लोगों को उसका सिर तथा उँगलियों के कुछ हिस्सों के अतिरिक्त और कुछ नहीं मिला।

पेरे ऐमे लेमर ने इस घटना का पुनर्मूल्यांकन किया और उपर्युक्त तथ्य को सही पाया, जिसे बाद में उन्होंने एक लेख विशेष में प्रकाशित भी किया।

डॉ. डिब्रेस ने 'एडिन वर्ग मेडिकल एंड सर्जीकल जनरल' के मार्च, १९८५ में एक रहस्यमय अग्निकांड का वर्णन किया था। एडिनबरा के एक व्यक्ति के शरीर से नीली लपटें निकल रही थीं और वह छटपटा रहा था। शरीर पर उसके कपड़े जल रहे थे, समीप खड़े छोटे भाई ने सहायता करनी चाही परंतु उनके हाथ भी झुलस गए। यह आग कई घंटों तक लगातार निकलती रही और हाथों तक फैल गई। जब उस व्यक्ति को घंटों पानी में डुबोकर रखा गया, तब कहीं जाकर अग्नि शांत हुई। घाव शीघ्र भर गए। फिर कभी इस घटना की पुनरावृत्ति नहीं हुई।

सुप्रसिद्ध लेखक चार्ल्स फोर्ट ने अपनी पुस्तक 'दी कंप्लीट बुक ऑफ चार्ल्स' में एक ऐसी महिला का वर्णन उद्धृत किया है जो अपने ही शरीर स्थित अग्नि से कई बार ग्रसित हो चुकी थी। लंदन निवासी जॉन राइट की माँ को ५ जनवरी १८२० को अस्पताल में भरती होना पड़ा। उनका शरीर कई स्थानों पर शरीर में से निकली ज्वाला से झुलस गया था। ७ जुलाई को श्री राइट अपने रसोईघर में नौकरानी लड़की से बात कर रहे थे तभी एकाएक राइट की माँ के कपड़े जलने लगे। लड़की उठकर बाहर चली गई और अग्निकांड समाप्त हो गया। १२ जनवरी को फिर से उपर्युक्त घटना घटित हुई। उस समय भी वही लड़की उपस्थित थी।

राइट ने अपनी माँ की देखभाल के लिए अपनी बहन को बुला लिया। एक दिन उनकी बहन रसोईघर में उसी नौकरानी लड़की के समीप बैठी थी कि एकाएक उसके कपड़ों में भी आग लग गई और भयंकर रूप से जल गई। यह घटनाक्रम कई बार हुआ। अत: नौकरानी लड़की को अपराधी ठहराकर उसे पुलिस के हवाले कर दिया गया।

जाँच करने पर मजिस्ट्रेट ने पाया कि उस लड़की का प्रत्यक्षत: कोई अपराध नहीं था। यह एक ऐसी सुपर नेचुरल प्रक्रिया थी, जिसका उत्तर किसी के पास नहीं था, कानून के पास भी नहीं। ऐसे में किस दंड विधान के अंतर्गत उसे दंड दिया जाता ? अंत तक मामला अनुत्तरित ही रहा।

ये सभी घटनाएँ जनश्रुतियाँ नहीं हैं। जिनका उल्लेख सरकारी कागजातों और विज्ञान क्षेत्र के विशेषज्ञों द्वारा किए गए पर्यवेक्षणों में हैं। ऐसी घटनाओं में यह आशंका रहती है कि किन्हीं अनाड़ियों द्वारा किए गए कुकृत्यों पर परदा डालने के लिए उन्हें अविज्ञात कारणों से घटित हुई घटना कहा जाए। किंतु उपर्युक्त परीक्षित अभिलेखों में ऐसी बात प्रतीत नहीं हुई। क्योंकि जो लोग जले उनमें से कोई ऐसा नहीं था जिसकी किसी से शत्रुता रही हो अथवा धन के लिए इस प्रकार का कुकृत्य किया गया हो।

ये घटनाक्रम तो जीवित व्यक्तियों के हैं, जो प्राणाग्नि के सहसा भड़क उठने पर या तो जलकर मृत्यु को प्राप्त हुए या गंभीर रूप से घायल हो गए। किंतु मृतशरीरों में भी जब अपवाद रूप में प्राणऊर्जा की झलक देखने को मिलती है तो समझ में नहीं आता कि विद्युत-भंडार के नष्ट होने की मान्यता होने पर भी यह क्यों व कैसे होता है ?

मृत शरीरों में भी प्राण ऊर्जा की झाँकी

आमतौर से शरीर मृत्यु के उपरांत तेजी से सड़ने लगता है और स्वयमेव बिखर जाने के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। भीतर से कृमि-कीटक उत्पन्न होते हैं और वे उसे खा-पीकर समाप्त कर देते हैं। यह कार्य और भी जल्दी हो—इसके लिए प्रकृति ने कुछ ऐसे प्राणी उत्पन्न किए हैं, जो मृतशरीरों की तलाश करते रहते हैं और जहाँ-कहीं वे मिलते हैं, रुचिपूर्वक उन्हें समाप्त कर देने के कार्य में जुट जाते हैं। पक्षियों में गिद्ध और चील इस वर्ग के हैं। सियार और कुत्तों को भी किसी मृतक पशु की काया का अस्तित्व समाप्त करने की जल्दी

पड़ती है और वे गंध पाते ही दौड़कर वहाँ जा पहुँचते हैं। कुटुंबी लोग अपने ढंग से इस कार्य को पूरा करते हैं, प्रचलनों के अनुसार उन्हें जलाया-गाढ़ा या बहाया जाता है।

यह प्रकृति-व्यवस्था की बात हुई। मृतशरीर को सुरक्षित रखने का प्रयास मनुष्य भी करता रहा है। मिस्र के पिरामिडों में मसाले से लिपटे हुए ऐसे शरीर पाए गए हैं, जो हजारों वर्ष बीत जाने पर भी पूरी तरह नष्ट नहीं हुए और पहचाने जाने योग्य स्थिति में बने रहे। इस संदर्भ में रूसी वैज्ञानिकों का वह प्रयास भी अनुपम है, जिसके अनुसार लेनिन के शरीर को उसी रूप में सुरक्षित रखने का प्रयत्न हुआ है। इस मृत काया को देखने के लिए अभी भी सुदूर देशों के लोग पहुँचते हैं और इस मानवी कौशल पर आश्चर्य व्यक्त करते हैं।

प्रकृतिगत और मनुष्यकृत उपर्युक्त उपाय-उपचारों के अतिरिक्त इस संदर्भ में कभी-कभी आत्मशक्ति को भी कुछ विलक्षणता प्रकट करते हुए देखा गया है। ऐसी घटनाएँ सामने आती रही हैं, जिनमें लंबे समय तक मृतशरीरों का अस्तित्व इस रूप में बना रहा जिसमें उनमें किसी ऐसी प्राण-चेतना की संभावना पाई गई, जिसने उन्हें सड़ने नहीं दिया। सामान्यत: कब्र में दबे रहने पर भी जब उन शरीरों का पुनर्निरीक्षण किया गया तो पता चला कि वे इस तरह नष्ट नहीं हुए जैसे कि सामान्यतया मृतशरीर सड़-गलकर नष्ट हो जाते हैं। यों उनमें प्रत्यक्ष जीवन नहीं पाया गया फिर भी आरोगी विशेषता का कोई अंश अवश्य बना रहा जिसने वैसी स्थिति उत्पन्न नहीं होने दी जैसी कि सभी मृत शरीरों की होती है। ऐसी घटनाओं में संत स्तर के शरीरों की ही प्रमुखता रही है। इनमें गोआ के संत फ्रांसिस का उदाहरण प्रत्यक्ष रूप में देखा जा सकता है, जहाँ लाखों क्रिश्चियन नर-नारी उनके दर्शन करने पहुँचते हैं। एक निश्चित दिन ही दर्शन हेतु सबके लिए चर्च खोला जाता है।

अनाया, लेबनान के सेंट मेरोन मठ के मठाधीश चार्बेल मेकोफ की १८९८ ई. में मृत्यु हो गई। मठ के नियमानुसार अन्य मठाधीशों की

तरह उन्हें भी एक कब्र में दफना दिया गया। उनकी कब्र के चारों तरफ एक विशेष प्रकाश कई सप्ताह तक बना रहा। एक दिन तीव्र मूसलाधार वर्षा के कारण चार्बेल का शव उफनता हुआ कब्र से बाहर आ गया। शरीर पर सड़ने-गलने के नामोनिशान तक नहीं पाए गए। शव को धोकर साफ किया गया और लकड़ी के एक ताबूत में बंद करके मठ के प्रार्थनालय में सुरक्षित रख दिया गया। कुछ दिनों बाद उस शरीर से एक विलक्षण तैलीय तरल पदार्थ बाहर निकलने लगा और इससे रक्त और मीठे की सम्मिश्रित सुगंध निकलकर वातावरण में चारों ओर फैलने लगी। इस तरल पदार्थ से शरीर पर ढँके कपड़े भीग जाते थे, जिससे एक सप्ताह में उन्हें दो बार बदलकर पहनाया जाने लगा।

सन् १९२७ में चार्बेल की मृत्यु के २९ वर्ष बाद उनके शरीर का चिकित्सकों द्वारा निरीक्षण किया गया और उसे निर्दोष पाया। चिकित्सकों की रिपोर्ट और उपस्थित जनसमुदाय के साक्षात्कार को लिपिबद्ध करके जिंक के एक ट्यूब में बंद करके ताबूत को सामने वाली दीवार में रखकर ईंटों से चिनाई करा दी गई।

सन् १९५० में रक्षकों ने सूचित किया कि ताबूत के सामने मठ की दीवार से एक विचित्र सा तरल द्रव बाहर निकल रहा है। कब्र को तोड़कर ताबूत को बाहर निकाला गया और पादरी तथा चिकित्सा अधिकारियों के सामने शरीर का निरीक्षण-परीक्षण किया गया। चार्बेल के शरीर को देखने पर लगता था जैसे चार्बेल गहन निद्रा में सो रहे हों। शरीर पर ढँके कपड़े फट गए थे और विशेष प्रकार के एक तैलीय द्रव में भीगे हुए थे। ताबूत में तीन इंच मोटी तैलीय परत जम गई थी। जिसे निकालकर ताबूत के पास दफन की गई जिंक की ट्यूब को खोला गया, जिसमें वर्णित पूर्व घटना की तुलना वर्तमान घटना से की गई तो दोनों में समानता ही मिली। चार्बेल के शव को फिर से ताबूत में बंद करके वहीं दफना दिया गया।

ईसाई महिला मारिया अन्ना का शरीर उसकी मृत्यु के १०७ वर्ष बाद सन् १७३१ में एक खुदाई में प्राप्त हुआ। मूर्द्धन्य चिकित्सकों और

सर्जनों की ११ सदस्यीय टीम ने मारिया के मृतक शरीर का परीक्षण किया। शरीर पर कहीं सड़ने-गलने के नामोनिशान तक नहीं थे। संपूर्ण शरीर कोमल, सुरम्य, ओज से परिपूर्ण एवं एक विशेष प्रकार की खुशबू से सुवासित था। शरीर के बाह्यांगों एवं अंतरंगों में एक प्रकार की चिकनाई लगी हुई थी।

अनुसंधान की कड़ी में कुछ नया पाने के लालच में चिकित्सकों ने शरीर का शवोच्छेदन किया। कोई नई कड़ी तो उनके हाथ नहीं लगी परंतु विशेष प्रकार की खुशबू से उनके हाथ कई दिनों तक सुगंधित बने रहे। सुगंध के गायब हो जाने के भय से डॉक्टरों ने कई दिनों तक अपने हाथ नहीं धोये।

पोलैंड के जेसूइट संत एण्ड्र्यू बोबोला रूस में रूढ़िवादियों के मध्य अपने मिशन का प्रचार-प्रसार बड़ी सफलतापूर्वक कर रहे थे। अपने इस कार्य के लिए वे प्रतिष्ठित हो चुके थे। सर्वत्र उनके कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की जा रही थी। सन् १६५७ में ६७ वर्ष की अवस्था में छापामार कोसेक्स ने संत की नृशंसतापूर्वक हत्या कर दी और क्षत-विक्षत शरीर को पिंस्क के जेसूइट चर्च के पास गोबर के ढेर में दफना दिया।

हत्या के ४४ वर्ष बाद जेसूइट कॉलेज के प्राचार्य को स्वप्न में एक आदेश मिला, जिसके अनुसार फादर बोबोला का शरीर गोबर के ढेर से खोदकर निकाला गया। संत का शरीर बेदाग बिना सड़े हुए ताजा, मुलायम, लोचयुक्त उसी हालत में मिला जिस स्थिति में उनके शरीर को दफनाया गया था। देखने पर जीवितों जैसा प्रतीत हो रहा था।

मृत्यु के ७३ वर्ष बाद ६ पादरियों और ५ मेडिकल विशेषज्ञों के एक दल ने फादर बोबोला के शरीर का निरीक्षण किया और इस प्रकार से सुरक्षित रहने को अप्राकृतिक संरक्षण की संज्ञा दी। इस तथ्य की पुष्टि के लिए बहुत से व्यक्तियों ने उस स्थान का सूक्ष्म निरीक्षण किया और पाया कि अन्य किसी व्यक्ति या जीवधारी का शरीर गोबर के इस ढेर में सुरक्षित नहीं रह सकता था। यह विलक्षणता मात्र उस शरीर के ही कारण थी, यह निष्कर्ष निकाला गया।

पैडुआ के संत एंथनी (११९५-१२३१) १२वीं सदी में फ्रांस के गणमान्य ब्रह्मविज्ञानी एवं धर्मोपदेशक माने जाते थे। वे न केवल अपनी पवित्रता वरन अपनी वाक्पटुता और विद्वता के लिए भी विख्यात थे। मृत्यु के एक वर्ष बाद सन् १२३२ में इन्हें संत की पदवी प्रदान की गई, मृत्यु के ४०० वर्ष बाद कब्र से उनकी ताबूत खोदकर बाहर निकाली गई और उसे खोलकर अवलोकन करने पर भूरे रंग की धूल में संत एंथनी के शरीर के अवशेष यथावत पाए गए। उसी धूल में एक किनारे संत की कोमल, गुलाबी, ताजी जीवित जिह्वा भी मिली, जिसे देखकर लोग अचंभित रह गए।

ये सभी घटनाक्रम बताते हैं कि शरीर विज्ञान की समुचित जानकारी होने पर भी हमें अभी उसके अनेकानेक रहस्यों को अविज्ञात कहकर ही मन को समझा लेना पड़ता है। स्वत: आग के शोले भड़क उठने एवं प्राणऊर्जा की झलक मरणोपरांत भी मिलने के घटनाक्रम तो एक उदाहरण मात्र हैं। सूक्ष्म कायिक क्षेत्र में ऐसे अनेकों प्रसंग हैं, जो अभी तर्क की कसौटी पर खरे नहीं उतर पाए। ये मानवी बुद्धि का बौनापन तो बताते ही हैं, एक असीम संभावनाओं से भरे प्रसुप्त काय-संस्थान का परिचय भी देते हैं, जिसे जानकर, जगाकर एवं सुनियोजित कर अनेक विभूतियाँ हस्तगत की जा सकती हैं।

❐

विचित्रताओं से भरा-पूरा वनस्पति जगत

गंगा यों उत्तर-दक्षिण की ओर बहती है, पर उसके बीच-बीच में कई स्थानों पर ऐसे मोड़-मरोड़ हैं, जिनमें वह दिशा लगभग उलट सी जाती है। उत्तर काशी में कई मील तक गंगा दक्षिण से उत्तर की ओर बहने लगी है। यही क्रम वाराणसी में दोहराया गया है। हवा में चक्रवात और पानी में भँवर भी सामान्य प्रवाह में व्यतिक्रम ही उत्पन्न करते हैं। यद्यपि होते वे भी किसी प्रकृति नियम के अंतर्गत ही हैं। भूकंप, ज्वालामुखी, विस्फोट आदि की घटनाएँ आकस्मिक अप्रत्याशित होती हैं, आश्चर्यजनक लगती हैं फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि ये प्रकृति नियमों के अंतर्गत नहीं हैं। यह बात दूसरी है कि उनके कारण एवं रहस्य मनुष्य की पकड़ में अभी न आए हों।

फिर भी मनुष्य प्रकृति के सभी रहस्यों को जान लेने का दावा करने लगा है। पिछले सौ-दो सौ वर्षों में निस्संदेह वैज्ञानिक उन्नति हुई है। विज्ञान के कारण प्रकृति के कई रहस्य सुलझे हैं और उनके नियमों को जान पाना संभव हो गया है। उन नियमों का अनुकरण कर अनेकानेक यंत्र बनाए गए, थोड़े समय में अधिक काम निबटा लेने, रोग-बीमारियों से लड़ने और मनुष्य की आयु तथा स्वास्थ्य के रक्षण अभिवर्द्धन में सफलता प्राप्त की गई है।

होना तो यह चाहिए था कि प्रकृति के इन रहस्यों को जानने के बाद मनुष्य और अधिक विनीत, उदार तथा विशाल हृदय बनता, कहा भी है **'विद्या ददाति विनयं'** अर्थात विद्या से विनय प्राप्त होती है। परंतु प्रकृति के रहस्यों और नियमों को जानने तथा उनका अनुकरण कर अपनी भौतिक स्थिति उन्नत बनाने के साथ-साथ मनुष्य का दर्प

भी बढ़ता चला गया है। निस्संदेह मनुष्य सृष्टि के अन्य प्राणियों की तुलना में श्रेष्ठ है। परमात्मा ने उसे विद्या, बुद्धि, सोचने-समझने की क्षमता और कर्म की स्वतंत्रता के अधिकारों से संपन्न कर इस धरती पर भेजा है। इन विशेषताओं द्वारा अर्जित थोड़े से लाभों को देखकर ही वह दर्प से चूर हो उठे तो यह शुभ नहीं कहा जा सकता।

मनुष्य अपने श्रेष्ठता के आधारहीन दर्प से मुक्त हो सके इसके लिए प्रकृति अनेकों बार ऐसे रहस्य प्रस्तुत करती रहती है, जिसे समझना अभी तो मनुष्य के वश में नहीं है। ऐसे कुछ उदाहरण यहाँ प्रस्तुत हैं—

हाल ही में जबलपुर का एक समाचार समाचारपत्रों में छपा है। आम का पेड़ पंद्रह-बीस फुट ऊँचा बढ़ने के बाद ही बौराता और फल देता है। लेकिन जबलपुर में किसी व्यक्ति ने कुछ माह पूर्व आम का एक पौधा लगाया। यह पौधा दो फुट ऊँचा बढ़कर ही आम के फल देने लगा। कुछ महीनों की आयु वाले इस पौधे में ८० आम लगे। इस आम के पौधे को देखने के लिए दूर-दूर से हजारों लोग आए। कोई भी यह नहीं समझ सका कि इतने छोटे पौधे में कैसे फल-फूल लग गए। जिसने भी देखा उसने प्रकृति की लीला को अगम रहस्यमय पाया।

बंगाल में एक नारियल का पेड़ भी इसी प्रकार की विचित्रता के कारण पिछले कई दिनों से चर्चा और आकर्षण का विषय रहा है। नारियल के पेड़ आमतौर पर विधिवत लगाए जाते हैं, पर नदिया जिले के भाम जोआन गाँव में एक शिक्षक के घर नारियल का एक ऐसा पेड़ लगा हुआ है, जिसकी शाखाओं से ही उसकी संतानें जन्मने लगती हैं। पिछले पाँच वर्षों में इस पेड़ ने करीब १०० पौधों को जन्म दिया और सभी पौधे उस पेड़ के पत्तों में मूल स्थान से लगे हैं। जिस शिक्षक के घर पर यह पेड़ लगा है, उसने बताया कि पहली बार जब मैंने पेड़ के

एक पत्ते में छोटा सा अंकुर फूटते देखा तो आश्चर्यचकित रह गया। शुरू में तो मैंने उस अंकुर के साथ कोई छेड़छाड़ नहीं की, पर कुछ दिनों बाद जब वह अंकुर बड़ा हुआ तो मैंने उसे निकालकर दूसरे स्थान पर रोप दिया। कुछ दिनों बाद उसी पेड़ पर पुनः वैसा ही अंकुर फूटा। पेड़ में नारियल तो लगते ही थे यह अंकुर भी फूटने लगे। इस प्रकार पिछले पाँच वर्षों में कोई १०० नारियल के पौधों ने उस पेड़ से जन्म लिया है।

मजे की बात यह है कि उन अंकुरों को यदि पेड़ से अलग नहीं किया जाता तो वे नष्ट हो जाते हैं। जबकि अंकुर निकालकर दूसरे स्थान पर लगाने से वह पेड़ बन जाता है। नारियल के उक्त पेड़ द्वारा नये पौधों को जन्म देने का **एकोहि बहुष्यामि** का यह क्रम अभी भी जारी है।

प्रकृति का वनस्पति समुदाय अनेकों प्रकार की विचित्रताएँ समेटे बैठा है। डेस्मोडियम ट्राइक्वेट्रम नामक एक पौधे में लगातार ऐसी हलचल होती रहती है, जैसे तार काटने वाली मशीन में होती है। ३ से ८ फुट तक की ऊँचाई वाले इस पौधे के पत्ते संयुक्त पत्तों के आकार के होते हैं। प्रत्येक संयुक्त पत्ते में तीन छोटी पत्तियाँ निकलती हैं—एक बड़ी पत्ती और बाजू में दो छोटी-छोटी पत्ती। बड़ी पत्ती में तो कोई प्रतिक्रिया नहीं होती पर बाजू में रहने वाली छोटी पत्तियों में प्रायः हलचल होती रहती है। जब दिन का तापमान ७२ डिगरी का हो जाता है तो पत्तियाँ तार कटते समय होने वाले संकेतों के समान हलचल करने लगती हैं। इस समय पौधे इस प्रकार लगने लगते हैं जैसे सभी संयुक्त पत्तियाँ तार काटने वाली मशीन में रूपांतरित हो गई हों।

इस प्रक्रिया में एक और विशेषता दिखाई देती है कि ये पत्तियाँ अकसर वृत्ताकार घूमती हैं और साथ ही अपनी धुरी पर भी घूमती हैं। हवा चलने या बंद रहने पर भी इन पत्तियों के घूमने पर

कोई प्रभाव नहीं पड़ता और सुबह तक ये पत्तियाँ इसी प्रकार घूमती रहती हैं।

दक्षिण अफ्रीका के एक क्षेत्र में ऐसा पौधा पाया जाता है जो किसी मनुष्य की उपस्थिति से उल्लास प्रकट करता है और किसी की उपस्थिति से घबराने या अपने आप को दबाने-छिपाने लगता है। इस पौधे का नाम 'ऐंसिटिव प्लांट' है। इसी तरह का व्यवहार वह अन्य प्राणियों से भी करता है। जिस किसी की उपस्थिति से वह प्रसन्न होता है, तब उसकी पत्तियाँ गहरे गुलाबी रंग की हो जाती हैं तथा फूल की पंखुड़ियाँ फैलकर चौड़ी हो जाती हैं जैसे वह खिलकर प्रसन्नता व्यक्त कर रहा हो। जिस किसी की उपस्थिति से वह रुष्ट या असंतुष्ट होता है तो उसका गुलाबीपन हलका पड़ जाता है तथा फूल-पत्तियाँ अपेक्षाकृत सिकुड़ जाती हैं।

इसे ऐंसिटिव प्लांट का शरमीलापन भी कह सकते हैं। परंतु कई पौधे ऐसे होते हैं, जो वास्तव में शरमीले होते हैं। नए अजनबी व्यक्ति के साथ कोई व्यक्ति जिस प्रकार संकोच-व्यवहार करता है ठीक उसी तरह ये भी व्यवहार करते हैं। यहाँ तक कि कई पौधे तो परंपरानिष्ठ परिवार की कुलवधू के समान दूसरों को देखकर अपने व्यवहार को तुरंत बदल देते हैं और उसी की तरह शरमाने-लजाने लगते हैं। भारत में पाए जाने वाले एक विशेष प्रकार के पौधे का नाम तो इसी कारण लाजवंती पड़ गया है। यह पौधा और दूसरे प्राणियों से तो नहीं शरमाता परंतु मनुष्य के पास पहुँचते ही अपनी पत्तियों को इस प्रकार सिकोड़ने लगता है जैसे कोई नववधू अपनी ससुराल वालों को या बड़े व्यक्तियों को देखकर अपने कपड़े सँभालने लगती है कि कहीं कोई अंग उघड़ा हुआ तो नहीं है।

छुईमुई के पौधे में इमली की पत्तियों के समान बारीक-बारीक पत्तियाँ होती हैं। इस पौधे के पास कोई पहुँचता है और हाथ से छूता

है तो पत्तियाँ तुरंत सिकुड़कर इकट्ठी हो जाती हैं। जिन क्षेत्रों में यह पौधा पाया जाता है, वहाँ इसकी कितनी ही वि॰चित्रताओं के चर्चे सुनने को मिलते हैं।

अफ्रीकन वायलेट नामक पौधा छुईमुई के पौधे की तरह ही शरमीला है परंतु कुछ भिन्न ढंग का। छुईमुई की पत्तियाँ जहाँ छूने से सिकुड़ जाती हैं, वहीं इस पौधे की पत्तियों पर पानी की एक बूँद भी पड़ जाती है तो तत्क्षण उस स्थान पर एक दाग पड़ जाता है। यह दाग पत्ती के सूखने तक नहीं मिटता।

सूर्यमुखी का फूल उधर ही झुका रहता है जिधर कि सूर्य स्थित रहता है। रात के समय भी यह उसी क्रम में घूमता रहता है। पृथ्वी तो अपनी कीली पर घूमती रहती है। पृथ्वी के उसी क्षेत्र में रात होती है,जो क्षेत्र दुसरे गोलार्द्ध में आ जाता है लेकिन सूर्य के सामने तो पृथ्वी का घूमना जारी ही रहता है। लाख बादल हों और कितने ही व्यवधान पर सूर्यमुखी का पौधा सूर्य की ओर उन्मुख रहने का व्रत नियमपूर्वक निभाता है।

बहुत से पौधे ऐसे भी होते हैं, जिनके फूल दिन या रात में समय विशेष पर ही खिलते हैं। इस प्रकार की विशेषताओं से संपन्न पुष्प-पादपों में एक पुष्प-पादप जो भारत में पाया जाता है—रात की रानी के पौधे से तो प्रायः सभी परिचित हैं, जिनके फूल रात के समय ही महकते हैं। परंतु 'सरियस ग्रेंटी फ्लोर' नामक पौधे के फूल तो खिलते भी रात के समय ही हैं। रात में प्रायः नौ बजे के बाद पौधे के फूल खिलना आरंभ होते हैं और इसके साथ ही उनकी महक फैलने लगती हैं। आधी रात तक फूल पूरी तरह खिल जाते हैं और उनकी महक चारों ओर फैल उठती है। फिर इसके बाद रात ढलने के साथ-साथ फूल मुरझाने लगता है और सुबह होने तक पौधा पुनः सामान्य अवस्था में आ जाता है।

विश्व में कितने ही ऐसे स्थान हैं जो अपनी विलक्षणता के लिए विख्यात हैं। एविग्नान के निकट एक ठंढे पानी का कुंड है। उसे

चाडक्लुर्स का स्रोत कहते हैं। समीप में ही सोरग्यू नामक नदी बहती है। नदी के दूसरे तट पर अंजीर का खूबसूरत पेड़ उगा हुआ है। बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के नदी का जल स्तर मार्च माह में हर वर्ष अपने आप बढ़ जाता है, बाढ़ जैसी स्थिति आ जाती है। सबसे आश्चर्य की बात यह है कि नदी का जल-प्रवाह उलटी दिशा में ऊँचाई पर अवस्थित अंजीर के पेड़ की ओर बढ़ने लगता है और पेड़ की जड़ को स्पर्श करके वापस लौट जाता है। इस घटना की पुनरावृत्ति हर वर्ष नियत समय पर मार्च में होती है। वैज्ञानिक लंबे समय से सोरग्यू नदी के जल स्तर के बढ़ने तथा मार्च माह में अंजीर के पेड़ को छूने के लिए चल पड़ने का कारण खोज रहे हैं, पर यह रहस्य अभी भी अविज्ञात बना हुआ है। एविग्नान के लोगों में लोक कथा प्रचलित है कि वृक्ष यक्ष है और नदी कोई अप्सरा जो किसी देवता के कोपभाजन बने हुए हैं। उन्हें केवल मार्च माह में मिलने की छूट देवता द्वारा दी गई है। किंवदंती कहाँ तक सत्य है नहीं मालूम, पर इस विलक्षण दृश्य को देखने के लिए प्रति वर्ष वहाँ निश्चित समय पर भीड़ एकत्रित होती है।

कोरिया में कोयम नदी के किनारे नाक्वाह्म नामक पत्थर की चट्टान है। सन् ६६० में संबंधित क्षेत्र पर चीन के राजा ने आक्रमण कर दिया। उसने स्थानीय राजा, मंत्री तथा सेना के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों को बंदी बनाकर चीन भेज दिया। राज्य सम्राज्ञी सहित ७१ रानियों ने नाक्वाह्म चट्टान से नदी में कूदकर आत्महत्या कर ली। इस घटना को बीते लगभग १४ सौ वर्ष हुए। पर उसके बाद प्रति वर्ष चट्टान के पास एक ही नसल के मात्र ७१ पौधे एक साथ उगते हैं और निश्चित समय पर ७१ ही फूल आते हैं। ये फूल एक साथ ही कलियों के रूप में विकसित होते हुए पुष्पित होते हैं। ऐसा उल्लेख मिलता है कि वसंत ऋतु के एक निर्धारित दिन को राजरानियों ने जौहर किया था, ठीक उसी दिन सभी ७१ पुष्प एक साथ नदी में गिर जाते

हैं। इस दृश्य को देखने तथा अपनी भावश्रद्धा को समर्पित करने के लिए हजारों व्यक्ति उस स्थान पर आते हैं। उनका विश्वास है कि प्रतिवर्ष पौधों के रूप में रानियाँ शरीर धारण करती हैं तथा जौहर की घटना की पुनरावृत्ति करके फूलों के रूप में नदी में गिरकर देशवासियों को यह प्रेरणा देती हैं—"अनीति अत्याचार के समक्ष कभी सिर न झुकाओ भले ही मृत्यु को वरण कर लो।"

ज्वालामुखी के विस्फोटों से संबंधित वैज्ञानिक भविष्यवाणियाँ अभी तक शत-प्रतिशत सत्य नहीं हो सकी हैं। किंतु जावा के ज्वाला-मुखी पर्वत पेगरेज के ऊपर लगभग १० हजार फीट की ऊँची चोटी पर रायल काडस्लिप नामक पौधा होता है। इस पौधे पर कभी-कभी ही पुष्प दिखाई पड़ता है। किंतु यह अशुभ सूचक पुष्प जब भी खिलेगा तो पेगरेज में ज्वालामुखी का विस्फोट अनिवार्य रूप से होता है। स्थानीय लोग जब भी इस फूल को देखते हैं तो अपना स्थान छोड़कर दूरस्थ सुरक्षित स्थानों पर पहुँच जाते हैं। एक निश्चित समय में विस्फोट होने के बाद लोग फिर से अपना घर बसाते हैं।

ज्वालामुखी का उस पौधे से क्या संबंध है? पुष्प का खिलना और ज्वालामुखी का फटना एक साथ होने में कोई भी वैज्ञानिक कारण नजर नहीं आता। क्या कोई चेतनसत्ता पुष्प के माध्यम से मानवी सुरक्षा के लिए संकेत देती है अथवा उस पौधे में ही ऐसी कोई भविष्य की घटनाओं को जानने का संग्रही तंत्र है। अनेक प्रयोग-परीक्षणों के बाद भी यह रहस्य ज्यों का त्यों बना हुआ है। यह नगण्य पौधा कई बार ज्वालामुखी के विस्फोटों से रक्षा करता आ रहा है। उस क्षेत्र के निवासी यह मानते हैं कि कोई दैवीय शक्ति पुष्प के माध्यम से ज्वालामुखी के विस्फोटों से रक्षा करती है। पौधे के प्रति उनकी उतनी ही श्रद्धा है, जितनी कि किसी देवी अथवा देवता के प्रति।

मनुष्य को प्रकृति जगत की अभी तक की जानकारी विज्ञान की जानकारी की सीमा में है। सर्वव्यापी सत्ता के अविज्ञात क्रिया-कलापों

के रहस्य पूरी तरह न जान पाने का यह परिणाम है। उस अविज्ञात चेतनसत्ता के विधि-विधानों को पूरी तरह जान पाना तो कठिन है ही। उसकी इच्छाशक्ति को पूर्णत: समझ पाना तो कठिन ही नहीं, असंभव भी है। वह इच्छा शक्ति कार्य-कारण नियमों शृंखलाओं का भी यदा-कदा किन्हीं और जटिल कारणों से उल्लंघन कर सकती है। जैसाकि विज्ञानी राबर्ट ए. मैल्क ने कहा है- "परमात्मसत्ता ही अपनी इच्छाशक्ति से सृष्टि का निर्माण करती है। आम के बीज से इमली पैदा करने की शक्ति प्रकृति में नहीं है। किंतु परमात्मसत्ता में यह शक्ति है। वह विलक्षण रचनाएँ पैदा करने में समर्थ सत्ता है।"

प्रकृति की विलक्षणताएँ उस सर्वसमर्थ स्रष्टा की सामर्थ्य बतलाती हैं। विज्ञान हो या दर्शन, सभी उसी सामर्थ्य को यथाशक्ति समझने का विनम्र प्रयास मात्र है। बौद्धिक दृष्टि से मनुष्यसमेत हर प्राणी सीमित है और उनके सभी प्रयासों की सीमाएँ हैं। असीम सामर्थ्य मात्र उस सर्वव्यापी, सर्वद्रष्टा, नियामक और अपनी इच्छा से सब कुछ कर सकने में सक्षम ईश्वरीय सत्ता में ही है। व्यवस्था और वैचित्र्य दोनों ही उसी की सामर्थ्य की अभिव्यक्तियाँ हैं।

❐

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ. प्र.)